मई 2025 रु.20/-

गाँव गिराँव

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

ट्रंप का टैरिफ वार

अब

टैक्स के बहाने व्यापार पर हुकूमत

COLLEGE RUN BY DR. R.D. MEMORIAL CHARITABLE TRUST

- **Post Basic B.Sc. Nursing**
  Duration : 2 Years
  Eligibility : GNM
- **G.N.M.**
  Duration : 3 Years
  Eligibility : Intermediate (10+2) with English (Age 17-35 Years)
- **B.Sc. Nursing**
  Duration : 4 Years
  Eligibility : Intermediate (10+2) with PCB (Age Min. 17 Years)
- **A.N.M.**
  Duration : 2 Years
  Eligibility : 10+2 any Discipline (Age 17-35 Years)

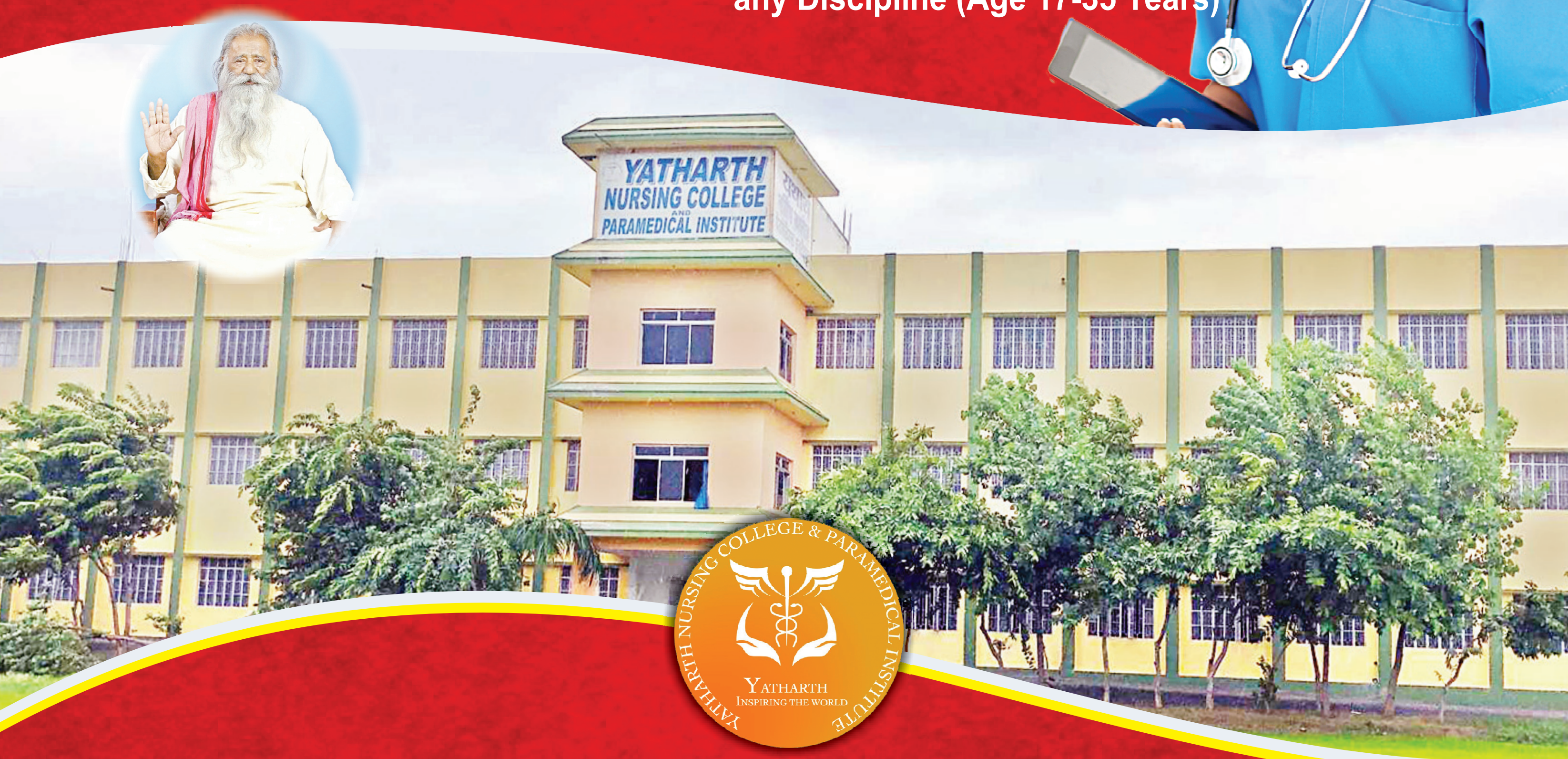

YATHARTH NURSING COLLEGE

AND PARAMEDICAL INSTITUTE

G.T.ROAD JHANSI CHANDAULI - UTTAR PRADESH-232104
RECOGNIZED BY MINISTRY OF MEDICAL EDUCATION, GOVT. OF UP LICKNOW
INDIAN NURSING COUNCIL, NEW DELHI
UTTAR PRADESH NURSES REGISTRATION COUNCIL, LUCKNOW
AFFILIATED TO MAHATMA GANDHI KASHI VIDYAPEETH, UNIVERSITY, VARANASI

Campus: G.T. Road Jhansi Near Chaupal Sagar, Chandauli (UP)-232104
City Office : Dr. R.D. Memorial Hospital G.T. Road, Nehru Nagar, Chandauli-232104
Fax No. : 05412-262253 Mobile No. : 7571002392, 9129978253, 7571002394
E-mail ID : yatharthnursingcollege@gmail.com Website : www.yatharthnursinghcollege.in

गाँव गिराँव

वर्ष : 14, अंक : 06, मई 2025, पृष्ठ 44, मूल्य : 20/-

सलाहकार सम्पादक - के. इन्द्रजीत, लक्ष्मीशंकर पाण्डेय
सम्पादक - श्रीधर द्विवेदी
समाचार सम्पादक - डॉ. पंकज कुमार ओझा
प्रबन्ध सम्पादक - गुरु प्रसाद शुक्ल
सहायक सम्पादक - कमलेश पाण्डेय, रविन्द्र प्रताप सिंह गोपाल मौर्य
उप सम्पादक - वीरेन्द्र कुमार विन्द, नागेश्वर सिंह, रामप्रसाद यादव
विज्ञापन प्रबन्धक - उमेश चन्द जैन
डिजिटल एग्जिक्यूटिव - इ. अमित पटेल
लेआउट व डिजाइन - मंजीत कुमार

नेशनल मीडिया एक्जक्यूटिव
महेन्द्र प्रसाद गांधी-9415874679

राज्य प्रभारी - दिल्ली - यश सिंह 8882678591
चंडीगढ़ - ओ.पी. राय 8009069795
लुधियाना - गुरदीप सिंह-9815453958
पटना - अमित मिश्रा- 9263056540
पूर्वी उ0प्र0 - प्रदीप राय- 8546055042
पश्चिमी उ0प्र0- अनिल कुमार बाजपेयी-8052159000
लखनऊ - डा. विजयकांत पाण्डेय - 8795506060
प्रयागराज- मनोज पाण्डेय - 9140410568
मिर्जापुर - राजेश कुमार मिश्र- 6393139610
म0प्र0 - प्रहलाद पटेल - 7566126043
रीवा- नन्दलाल पाण्डेय- 9981962439

विशेष प्रतिनिधि- अरविन्द सिंह (वाराणसी) 9919442266
कालीदास त्रिपाठी (चन्दौली) 9838454120, ओमकार नाथ-9415698795, अशोक जायसवाल- 9451891800, मनोज यादव- 9598155820

कार्पोरेट आफिस

गाँव गिराँव मीडिया प्रा0लि0
मिथिलेश कुमार (ब्यूरो चीफ)
सी-216, सेक्टर-63 नोएडा, गौतम बुद्धनगर
उत्तर प्रदेश पिन-201309
मो0 - 9811191393, 9910768136
ई-मेल – gaongiraw@gmail.com
बेवसाइट - www.gaongiraw.in

मुम्बई ब्यूरो- 704/25 सोनम मारी गोल्ड,राम मन्दिर के पास, ओल्ड गोल्डेन नेस्ट-3 मीरा भयन्दर रोड भयन्दर, (ईस्ट) थाणे महाराष्ट्र-401105
8850955358, 9930046946

हेड ऑफिस पत्राचार- 13, दीपशिखा अपार्टमेंट गांधीनगर, सिगरा, वाराणसी, उप्र-221010
मो.- 9450825966, 7525825966

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीधर द्विवेदी द्वारा युग सत्य प्रिंटिंग प्रेस, शिवपुर वाराणसी उ0प्र0 से मुद्रित व शि.15/137 भरलाई शिवपुर, वाराणसी (उ0प्र0) 221009 से प्रकाशित।

RNI No - UPHIN/2012/41296

भीतर के पन्नों पर

विचार बिन्दु :
पहलगाम हमले का निहितार्थ... 2
कवर स्टोरी :
टैरिफ से कौन सा सेक्टर... 3-5
अंधेरे में रौशनी की तलाश 6-9
साहित्य
कहानी- बारह आने 10-12
तेलगू कहानी - समागम 13-16
व्यंग्य- चाय, चमचा... 17
कविता
समकालीन नवगीत 18
गजल
विनय मिश्र की तीन गजलें 19
समीक्षा
चौथी का जोड़ा 20-21
रीति-रिवाज
बखरी से होटल तक 22
उद्योग
डब्ल्यूसीएल द्वारा कार्यशाला 23
बीसीसीएल : नारी शक्ति 24-25
विचार - डॉक्टर प्रभात कुमार
मंदिरों की मौजूदा स्थिति... 26
पर्यटन
महाराष्ट्र का खजाना... 27
हेल्थ
गर्मियों में तरबूज 28
जॉब-कैरियर
पुस्तकालय विज्ञान में संभावनाएं 29-30
खेती बाड़ी
ब्लाक चेन के माध्यम से कृषि 31-32
स्मृति शेष 33-35
ज्योतिष 36
धर्म-कर्म
प्रकृति का कर्ज संरक्षण से चुकाएं 37-38
खेल-खिलाड़ी 39
सिने-जगत 40

पाठकों से– पत्रिका के लिए आपके प्रतिक्रिया, सुझाव, विचार आमंत्रित हैं। ई मेल–gaongiraw@gmail.com पर भेजें। – सम्पादक

नोट– पत्रिका में प्रकाशित लेख, विचार लेखकों के अपने हैं, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। पत्रिका में दिये गये पद अवैतनिक हैं। समस्त विवादों का न्यायक्षेत्र वाराणसी न्यायालय क्षेत्र में ही मान्य होगा।

पहलगाम हमले का निहितार्थ कश्मीरियों को समझना होगा...

देश का मस्तक हिमालय की वादियों में पूरे देश की आत्मा बसती है। हिन्दू धर्मावलंबियों के लिए आस्था का केंद्र और पर्यटकों के लिए स्वर्ग से सुन्दर इन खूबसूरत वादियों को बीरान घाटियों में तब्दील करने की नापाक कोशिश दहशतगर्दों द्वारा हमेशा होती रहती है, जिसका परिणाम रहा है कि जम्मू तक जहां चहल-पहल रहती है वहीं आगे कश्मीर की ओर बढ़ते ही मय,आतंक साफ झलकने लगता है। जम्मू जाने वाले अधिकांश श्रद्धालु और पर्यटक हिन्दू होते हैं जो वैष्णो देवी दर्शन के बाद घूमने के उद्देश्य से कश्मीर की ओर बढ़ जाते हैं। अमरनाथ यात्रा के दौरान पहलगाम से सुरक्षा के कड़े इंतजाम होते थे मगर इस बार इतनी विभत्स घटना कैसे हो गयी यह चिन्ता और चिन्तन का विषय तो है ही क्योंकि यह सरकार की नाकामी को साफ दर्शाता है। दूसरी ओर पर्यटकों की क्रूरता पूर्ण हत्या कश्मीरियों के लिए आत्मचिंतन का विषय है क्योंकि इन्हीं पर्यटकों से उनके परिवार चलते हैं। कश्मीर का प्रवेश द्वार यहीं से शुरू होता है जो श्रीनगर तक जाता है। मार्ग में पड़ने वाले छोटे छोटे दुकानदारों की आमदनी का जरिया यही पर्यटक हैं जो पतनी टाप, नाग मन्दिर,होते हुए डल झील, गुलमर्ग, सोनमर्ग, शंकराचार्य मन्दिर, काली मन्दिर आदि स्थानों तक जाते हैं। श्रीनगर के होटल, ट्रैवल व्यवसाय, और स्थानीय लोगों के आय के श्रोत यही पर्यटक ही हैं तो उनके सुरक्षा और सुविधापूर्ण यात्रा की जिम्मेदारी भी सबसे पहले कश्मीरियों ही है। सीमाएं भी काफी दूरी पर हैं फिर भी अगर पड़ोसी देशों से आतंकी आते रहते खाते पीते हैं तो यह केवल सेना की नाकामी नहीं कश्मीरियों की भी नाकामी है जो अपने और देश के गद्दारों को पनाह दे रहे हैं। यह कश्मीरियों को समझना होगा। सड़कों का जाल, रेलवे का विस्तार करके सरकारों ने कश्मीर को देश के नेटवर्क से जोड़ने का प्रयास इस लिए किया कि यहां के आवाम के साथ साथ पर्यटन उद्योग को भी पर लग सके मगर अमन के दुश्मनों और उनके स्थानीय समर्थकों को यह रास नहीं आ रहा है। इसमें क्षति किसकी है?

भारतीय सेना के जवान अपनी जान की परवाह किए बिना चप्पे-चप्पे पर घाटियों में लगे हैं इसमें आम आवाम की जिम्मेदारी है कि वे भी कंधा से कंधा मिलाकर उनका साथ और समर्थन दें। पर्यटक ही उनके आय के श्रोत हैं उनकी सुरक्षा तो कश्मीरियों को अपने जान पर खेलकर करनी चाहिए। पहले जब कर्फ्यू लगते थे तो रोज कमाने खाने वालों के पेट पर ताले लग जाते थे। लोग सरकारों को दोषी बताते थे। पक्ष विपक्ष की लड़ाई में कश्मीर की दशा दयनीय बताई जाती थी, एक दूसरे पर पाकिस्तान परस्ती का आरोप जनता लगाती थी, अब बदले हालात में इस दुखद घटना का जिम्मेदार कौन है, कौन जाएगा कश्मीर, कैसे लौटेगी रौनक, कैसे चलेगा शिक्षा, स्वास्थ्य और कारोबार का निर्वाध सिलसिला यह यक्ष प्रश्न फिर खड़ा हो गया है। आतंकी देश को तो चुनौती दे ही रहे हैं मगर जन-धन की हानि करके वे कश्मीरियों के लिए सबसे बड़ी चुनौती खड़ा कर रहे हैं, वास्तव में यह स्थानीय लोगों के हित और स्वाभिमान पर हमला है, यह बात कश्मीरियों को समझनी होगी और माकूल जवाब देकर देश के आवाम का दिल जीतना होगा।

भारतीय सेना के जवान अपनी जान की परवाह किए बिना चप्पे-चप्पे पर घाटियों में लगे हैं इसमें आम आवाम की जिम्मेदारी है कि वे भी कंधा से कंधा मिलाकर उनका साथ और समर्थन दें। पर्यटक ही उनके आय के श्रोत हैं उनकी सुरक्षा तो कश्मीरियों को अपने जान पर खेलकर करनी चाहिए। पहले जब कर्फ्यू लगते थे तो रोज कमाने खाने वालों के पेट पर ताले लग जाते थे। लोग सरकारों को दोषी बताते थे। पक्ष विपक्ष की लड़ाई में कश्मीर की दशा दयनीय बताई जाती थी, एक दूसरे पर पाकिस्तान परस्ती का आरोप जनता लगाती थी, अब बदले हालात में इस दुखद घटना का जिम्मेदार कौन है, कौन जाएगा कश्मीर, कैसे लौटेगी रौनक, कैसे चलेगा शिक्षा, स्वास्थ्य और कारोबार का निर्वाध सिलसिला यह यक्ष प्रश्न फिर खड़ा हो गया है।

ट्रंप के 27% टैरिफ से कौन सा सेक्टर प्रभावित होगा, किस सेक्टर को राहत?

ट्रंप ने अपने व्यापारिक साझेदारों पर 10% से 49% तक का जवाबी टैरिफ लगाने का एलान किया है। अमेरिका ने इस कड़ी में भारत पर भी 27% टैरिफ लगाने का एलान किया है। अमेरिकी टैरिफ के असर से भारत के निर्यात से जुड़े प्रमुख क्षेत्रों पर नकारात्मक असर पड़ सकता है। हालांकि, कुछ क्षेत्रों को जवाबी टैरिफ से फिलहाल तो राहत दी गई है, लेकिन उनका भविष्य भी अनिश्चत है।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने अमेरिका में बाहर से आकर बिकने वाली वस्तुओं पर जवाबी टैरिफ लगाने का एलान कर दिया। ट्रंप प्रशासन ने भारत पर भी पारस्परिक टैरिफ लगाया है। अमेरिकी सरकार ने बताया है कि भारत की ओर से अमेरिका को निर्यात किए जाने वाले सभी सामानों पर 27% का एकसमान टैरिफ लगाया जाएगा। ट्रंप ने अपने व्यापारिक साझेदारों पर 10% से 49% तक का जवाबी टैरिफ लगाने का एलान किया। हालांकि कुछ भारतीय चीजों के निर्यात पर अमेरिका ने जवाबी टैरिफ से छूट भी दी है। इस बारे में आगे जानेंगे, पहले जानते हैं अमेरिकी प्रशासन ने भारत के संदर्भ में क्या कहा है?

अमेरिका और भारत के बीच टैरिफ का गणित क्या?

व्हाइट हाउस के एक बयान के अनुसार अमेरिका भारत से आने वाले यात्री वाहनों के आयात पर 2.5% टैरिफ लगाता है, जबकि भारत अमेरिकी गाड़ियों पर 70% टैरिफ लगाता है। भारतीय सेब को अमेरिका में बिना किसी शुल्क के प्रवेश प्रवेश की अनुमति है, लेकिन भारत अमेरिका से आने

भारत और अमेरिका एक दूसरे पर कितना टैरिफ लगाते हैं?

उत्पाद श्रेणी	भारत का टैरिफ (%)	अमेरिकी टैरिफ (%)
कृषि, मीट और प्रोसेस्ड फूड	37.66	5.29
ऑटोमोबाइल	24.14	1.05
हीरे, सोना और संबंधित उत्पाद	15.45	2.12
रसायन और फार्मास्यूटिकल्स	9.68	1.06
इलेक्ट्रिकल, दूरसंचार और इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पाद	7.64	0.41
चिकित्सा, चमड़ा, कागज, कांच, जहाज, विमान	9.7	2.79
प्लास्टिक, वस्तुएं	9.95	4.38
मशीनरी, कंप्यूटर	6.6	1.3
लोहा, इस्पात और आधार धातुओं के उत्पाद	4.54	2.06
वस्त्र और परिधान	10.37	8.99
अयस्क, खनिज और पेट्रोलियम	6.67	2.31
शराब व अल्कोहॉल	124.58	2.49
डेयरी प्रोडक्ट	39.78	1.54
फिश मीट, फ्रोजन	28.42	0.59
लाइव एनिमल प्रोडक्ट	28.4	0.66
चीनी, कोकोआ, प्रोसेस्ड फूड	29.66	4.67
खाद्य तेल	12.07	1.4
अनाज, सब्जी, फ्रूट, मसाले	8.82	3.1
तंबाकू सिगरेट	33	201.15
ऑटोमोबाइल बाइक पार्ट्स	24.14	1.05
जूते	24.33	8.77
हीरा, सोना, चांदी	15.45	2.12
दवाएं	10.91	0.01
आर्टिफिशियल फ्लावर, छाते	12.89	2.59
घड़ी, मेडिकल उपकरण, खिलौने, आर्ट	10.31	1.42
सेरामिक उत्पाद, ग्लास, सीमेंट उत्पाद	11.65	3.38
कागज और लकड़ी से बने उत्पाद	9.06	1.18
रबड़ और उससे बने उत्पाद	9.79	2.03
इलेक्ट्रिकल, टेलीकॉम और इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद	7.64	0.41
कपड़े और कार्पेट	10.14	3.55
फार्मा छोड़कर अन्य रसायन	9.44	3.39
प्लास्टिक और उससे बने उत्पाद	9.95	4.38
मशीनरी और कंप्यूटर उत्पाद	6.6	1.3
रेलवे, एयरक्राफ्ट और शिप के उत्पाद	5.23	0.23
चमड़े से बने उत्पाद	11.98	7.29
लोहे के उत्पाद और स्टील	5.12	1.49
सिले और इस्तेमाल हुए कपड़े	11.85	8.99
बेस मेटल उत्पाद	4.09	2.98
अयस्क, मिनरल और पेट्रोलियम	2.31	6.67
गार्मेंट्स	7.43	12.05

वाले सेबों पर 50% शुल्क लगाता है। चावल पर अमेरिका 2.7% शुल्क लगता है, जबकि भारत अमेरिका के चावल पर 80% टैरिफ लगाता है। अमेरिकी सरकार की ओर से जारी बयान में यह भी बताया गया कि नेटवर्किंग स्विच और राउटर पर अमेरिका 0% टैरिफ लगाता है, लेकिन भारत 10-20% तक का टैरिफ लगाता है। अमेरिका का भारत के साथ व्यापार घाटा 46 अरब डॉलर है।

अमेरिकी टैरिफ से भारत के कौन से क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित होंगे?

अमेरिका के 27% के जवाबी टैरिफ से भारत के कई क्षेत्रों पर चुनौतीपूर्ण असर पड़ सकता है। करीब 14 अरब डॉलर का इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पाद क्षेत्र और 9 अरब डॉलर से अधिक का रत्न और आभूषण क्षेत्र ट्रंप के ताजा टैरिफ वार से सबसे अधिक प्रभावित हो सकता है। हालांकि अमेरिका की ओर से घोषित 26% टैरिफ फिलहाल ऑटो पार्ट्स और एल्युमीनियम उत्पादों पर लागू नहीं होगा। इन उत्पादों पर ट्रंप की ओर से पूर्व में घोषित 25% टैरिफ ही लागू होगा। व्हाइट हाउस ने कहा कि फार्मास्यूटिकल उत्पाद, जिनका निर्यात मूल्य सरकारी आंकड़ों के अनुसार लगभग 9 अरब डॉलर हैं उन्हें फिलहाल जवाबी टैरिफ से छूट दी गई है। इसके अलावा ऊर्जा उत्पादों को भी टैरिफ से छूट प्रदान किया गया है। ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव के अनुसार, भारत के ऑटोमोबाइल, रत्न व आभूषण, रसायन व फार्मास्यूटिकल्स और इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों पर वाशिंगटन क्रमशः 1.05%, 2.12%, 1.06% और 0.41% टैरिफ लगाता रहा है।

अन्य एशियाई देशों पर ट्रंप ने कितना टैरिफ लगाया?

एशियाई देशों की बात करें तो अमेरिका ने चीन पर 34% पारस्परिक कर लगाया है। ट्रंप प्रशासन ने जापान के निर्यात पर 24%, थाईलैंड पर 36%, बांग्लादेश पर 37%, मलेशिया पर 24%, ताइवान पर 32%, दक्षिण कोरिया पर 25% और वियतनाम पर 46% जवाबी टैरिफ का एलान किया है सबसे अधिक है। अमेरिका ने यूरोपीय संघ पर 20 प्रति टैरिफ लगाने का एलान किया है। व्हाइट हाउस के बयान में कहा गया है कि भारत ने रसायन, दूरसंचार उत्पादों और चिकित्सा उपकरणों जैसे क्षेत्रों में अत्यधिक बोझिल और दोहराव से भरे परीक्षण और सर्टिफिकेशन कानून लागू कर रखे हैं, जिससे अमेरिकी कंपनियों के लिए भारत में अपने उत्पाद बेचना कठिन और महंगा हो जाता है। बयान में कहा गया है, 'यदि ये बाधाएं हटा दी जाएं तो अनुमान है कि अमेरिकी निर्यात में प्रतिवर्ष कम से कम 5.3 बिलियन डॉलर की वृद्धि होगी।'

अमेरिकी टैरिफ का भारतीय निर्यात पर असर

1. फार्मास्युटिकल्स

भारत के फार्मास्यूटिकल्स सेक्टर को फिलहाल 27% की जवाबी टैरिफ से बाहर रखा गया है, लेकिन इस क्षेत्र में भी

अनिश्चितता बनी हुई है। फार्मास्यूटिकल सेक्टर भारत के अमेरिका को किए जाने वाले निर्यात में लगभग 12.2 अरब डॉलर का योगदान देता है। इस क्षेत्र को फिलहाल टैरिफ के प्रभाव से बचा लिया गया है। प्रमुख भारतीय फार्मास्यूटिकल कंपनियों के लिए यह राहत की बात है। भारतीय दवा कंपनियों के लिए अमेरिका एक महत्वपूर्ण बाजार बना हुआ है। हालांकि, विश्लेषक भविष्य में टैरिफ में होने वाले किसी भी संशोधन की आशंका के बारे में सतर्क हैं।

ब्रोकरेज हाउस बर्नस्टीन ने हेल्थकेयर सेक्टर पर टैरिफ के सीमित प्रतिकूल प्रभावों को देखते हुए इस क्षेत्र में वृद्धि की उम्मीद जताई है। वहीं सीएलएसए ने कहा है, फार्मा इंडस्ट्री को टैरिफ से छूट मिली है इसलिए इसकेस्टॉक में सुधार की उम्मीद है। पहले से इस क्षेत्र के उत्पादों पर 10% टैरिफ लगाया जा रहा है। वहीं, ब्रोकरेज हाउस जेफरीज ने कहा है कि अभी के लिए भारतीय फार्मा सेक्टर पर ट्रंप के जवाबी टैरिफ का न्यूनतम प्रभाव पड़ेगा लेकिन भविष्य में किसी अतिरिक्त टैरिफ से इनकार नहीं किया जा सकता है। अमेरिका में कारोबार करने वाले जेनेरिक फार्मा कंपनियों के शेयरों में तेजी दिख सकती है। ब्रोकरेज हाउस सिटी ने कहा, 'हम छूट को सकारात्मक मानते हैं, हालांकि यह छूट कब तक जारी रहेगी इस अवधि के बारे में अनिश्चितता बरकरार है।

2. ऑटोमोबाइल

ऑटोमोबाइल उद्योग की अमेरिका को भारत के कुल निर्यात में लगभग 3इ हिस्सेदारी है। ट्रंप के ताजा टैरिफ से इस सेक्टर को झटका लगने की उम्मीद है। मैक्वेरी ने कहा, '27% का व्यापक टैरिफ अमेरिकी बाजार में भारतीय ऑटोमोबाइल निर्यात की मांग और प्रतिस्पर्धा को प्रभावित करेगा। इससे उत्पादन लागत में वृद्धि, संभावित छंटनी और आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान का खतरा पैदा हो सकता है।'

3. विनिर्माण और सामान्य निर्यात

भारत का व्यापक विनिर्माण क्षेत्र को 27% टैरिफ के बोझ से संघर्ष करना पड़ेगा। मैक्वेरी के अनुसार, 'बढ़ी हुई लागत अमेरिकी बाजार में भारत से निर्यात होने वाले विनिर्माण क्षेत्र की वस्तुओं की प्रतिस्पर्धा को प्रभावित करेगी। इस हालत में इन कंपनियों की वृद्धि भी धीमी पड़ सकती है। इससे जीडीपी पर 50 आधार अंकों तक का प्रभाव पड़ सकता है।'

4. आईटी और सेवा क्षेत्र

अमेरिका का जवाबी बहुत हद तक भौतिक वस्तुओं पर केंद्रित हैं, जिसका अर्थ है कि भारत का आईटी और सेवा क्षेत्र टैरिफ के असर से काफी हद तक अछूता रह सकता है। हालांकि, विशेषज्ञों का मानना है कि ट्रंप प्रशासन का ताजा टैरिफ विवेकाधीन खपत को प्रभावित कर सकता है। अमेरिका की ओर से जवाबी टैरिफ के एलान के बाद शुरुआती कारोबार में डॉलर के मुकाबले रुपया कमजोर हुआ और बाजार में उतार-चढ़ाव के बीच 85.69 रुपये के करीब कारोबार करता दिखा। बर्नस्टीन के अनुसार आईटी क्षेत्र पर सबसे बड़ा असर अमेरिका में लोगों की खपत में गिरावट आने से पड़ेगा। अमेरिकी व्यय में गिरावट से भारतीय आईटी फर्मों पर असर देखने को मिल सकता है, क्योंकि यह क्षेत्र अमेरिकी बाजार पर बहुत अधिक निर्भर हैं।

भारत के लिए अब आगे क्या रास्ता है?

फरवरी में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अमेरिका यात्रा के दौरान भारत और अमेरिका ने व्यापार समझौता करने और टैरिफ पर गतिरोध को जल्द से जल्द सुलझाने पर सहमति व्यक्त की थी। इस बीच ट्रंप प्रशासन ने कई बार दावा किया कि भारत 23 अरब डॉलर से अधिक की अमेरिकी वस्तुओं पर टैरिफ में पर्याप्त कटौती कर सकता है। समाचार एजेंसी रॉयटर्स ने सूत्रों के हवाले से बताया कि भारत सरकार की एक आंतरिक रिपोर्ट के अनुसार, ट्रम्प की ओर से चीन पर उच्च टैरिफ लगाए जाने के कारण, जिन क्षेत्रों में भारत अमेरिका को निर्यात में बाजार हिस्सेदारी हासिल कर सकता है, उनमें कपड़ा, परिधान और जूते जैसे उत्पाद शामिल हैं। रिपोर्ट के अनुसार, भारत को लोहा और इस्पात उत्पादों के निर्यात को बढ़ाने का भी अवसर मिलेगा। चीन पर भारत की तुलना में अधिक टैरिफ लगाया गया है। ऐसे में भारत अपनी विनिर्माण क्षमता इस्तेमाल कर अमेरिकी बाजार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने की दिशा में कदम बढ़ा सकता है।

अमेरिकी टैरिफ पर वाणिज्य मंत्रालय ने क्या प्रतिक्रिया दी?

वाणिज्य व उद्योग मंत्रालय ने भी डोनाल्ड ट्रंप प्रशासन के जवाबी टैरिफ पर प्रतिक्रिया दी है। मंत्रालय के अनुसार अमेरिकी राष्ट्रपति ने पारस्परिक शुल्क पर एक कार्यकारी आदेश जारी किया है, जिसके तहत सभी व्यापारिक साझेदारों से आयात पर 10% से 50% तक टैरिफ लगाया जाएगा लगाया जाएगा। 10% का आधारभूत शुल्क 05 अप्रैल, 2025 से प्रभावी होगा और शेष शुल्क 09 अप्रैल, 2025 से प्रभावी होगा। अमेरिकी प्रशासन के कार्यकारी आदेश के अनुलग्नक-I के अनुसार भारत पर 27% टैरिफ लगाया गया है।

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय ने कहा है, 'हम अमेरिकी राष्ट्रपति की ओर से की गई घोषणाओं के निहितार्थों की सावधानीपूर्वक जांच कर रहे हैं। विकसित भारत के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए, विभाग भारतीय उद्योग और निर्यातकों सहित सभी हितधारकों के साथ संपर्क में है और टैरिफ के बारे में उनके आकलन पर प्रतिक्रिया ले रहा है। हम स्थिति का आकलन कर रहे हैं। विभाग अमेरिकी व्यापार नीति में इस नए बदलाव के कारण पैदा हुए अवसरों का भी अध्ययन कर रहा है।' ●

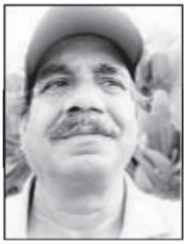

अँधेरे में रौशनी की तलाश

–भगवान स्वरूप कटियार

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने जब व्यापार युद्ध का बिगुल बजा ही दिया है तो दुनिया के मौजूदा आर्थिक परिदृश्य को समझना जरूरी हो गया है। और यह भी जानना जरूरी हो गया है कि इस युद्ध का उद्देश्य क्या है ? और इसके घातक परिणाम भुगतने वाले तीसरी दुनिया के देश इसे किस नजरिये से देख रहे हैं? और क्या सोच रहे हैं? सोवियत संघ के ढहते ही दुनिया एक ध्रुवीय में तब्दील हो गयी और पूंजीवादी अमेरिका उस एक ध्रुवीय दुनिया का सरगना बन गया। अब दुनिया की एक उभरती नयी आर्थिक महा शक्ति चीन अमेरिका के लिए चुनौती बना हुआ है जो फिर से दो ध्रुवीय दुनिया के उदय का सबब बना हुआ है। यह आर्थिक उपनिवेश का दौर है। दुनिया की आर्थिक शक्तियों का उद्देश्य देशों को हथियारों के साथ-साथ भुखमरी, कंगाली, बीमारी और बेरोजगारी के हथियारों से परास्त कर उन्हें आर्थिक गुलाम बना कर अपने फायदे की आर्थिक नीतियों के जरिये बाजार में तब्दील करना है। अब कोई देश किसी को उपनिवेश बना कर अपना शासन नहीं करेगा। बल्कि आर्थिक गुलाम देशों की सरकारें औपनिवेशिक ताकतों के इशारे पर काम करेंगी। यह अपने तरह का एक नया उपनिवेशवाद है। उनके कहने पर उनके हथियार खरीदने पड़ेंगे और उनके ही कहने पर अपने पड़ोसी देशों से जंग लड़नी पड़ेगी। युद्ध अब स्वाभाविक नहीं होंगे घाटे -मुनाफे के नजरिये से गढ़े और लड़ें जायेंगे।

ताजा आंकड़ों के अनुसार लगभग 09 अरब की आबादी की इस दुनिया की कुल अर्थव्यवस्था 105 ट्रिलियन डॉलर की है जिसमें दुनिया की सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था अमेरिका 26.9 ट्रिलियन डॉलर की है और दूसरे नंबर पर चीन 19.4 ट्रिलियन डॉलर की है।इसके बाद जापान 4.4 ट्रिलियन डॉलर की दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था है और चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था 4.3 ट्रिलियन डॉलर की यूरोपीय संघ है। भारत 3.7 ट्रिलियन डॉलर की पांचवी अर्थव्यवस्था है। यू के 3.2 ट्रिलियन डॉलर और रूस 2.1 ट्रिलियन डॉलर की अर्थ व्यवस्थाएं हैं। इन अर्थव्यवस्थाओं को देश की जनसंख्या और क्षेत्रफल और प्रति व्यक्ति आय की दृष्टि से भी देखना होगा ताकि जीवन स्तर की असलियत के आधार पर अर्थव्यवस्था का वास्तविक मुल्यांकन हो सके। दुनिया की कुल जीडीपी 75 प्रतिशत है। दुनिया की कुल संपदा (एसेट) 271 ट्रिलियन डॉलर है। दुनिया का कुल कर्ज 270 ट्रिलियन डॉलर है। अमेरिका की कुल जीडीपी का 77 प्रतिशत सर्विस सेक्टर से, 17 प्रतिशत औद्योगिक क्षेत्र से और मात्र 0.9 प्रतिशत कृषि क्षेत्र से है। जबकि चीन की कुल जीडीपी का 53.31 प्रतिशत सेवा क्षेत्र से, 39.43 प्रतिशत औद्योगिक क्षेत्र और 7.26 प्रतिशत कृषि क्षेत्र से है। भारत में 45 फीसदी रोजगार कृषि क्षेत्र में हैं पर जीडीपी में कृषि क्षेत्र की भागीदारी मात्र 15 फीसदी है जबकि आजादी के बाद कृषि क्षेत्र का जीडीपी में योगदान 50 फीसदी से ज्यादा रहा है क्योंकि भारत कृषि प्रधान देश रहा है और आज भी है पर सरकारों की उपेक्षा के कारण कृषि क्षेत्र लगातार कमजोर होता गया। और आज तो भारत के किसान आत्महत्या के लिए विवश हैं। सरकार उनके कृषि उत्पादों के दाम लागत और श्रम और उसके लाभ के अनुपात में नहीं देती है। सरकार किसानों से खेती छीन कर कापोर्रेट को सौपने पर आमादा है जहाँ किसान सिर्फ कापोर्रेट के गुलाम बन कर रह जायेंगें। धरती के कुल

क्षेत्रफल का मात्र 38 फीसदी हिस्सा खेती योग्य है और कुल 2.5 फीसदी पीने के लिए मीठा पानी है, उसमें भी मात्र 01 फीसदी ही मानव उपयोग के लिए उपयुक्त है। दुनिया को खुशहाल बनाने और खुशहाल देखने वालों को कुदरत के इन त्रासदियों की ओर भी देखना और सोचना होगा। क्योंकि बड़ी आर्थिक ताकतें ही ये त्रासदियाँ पैदा कर रहीं हैं इसके लिए छोटे देशों और छोटी अर्थव्यवस्थाओं को एक जुटता बनानी पड़ेगी खास कर वे देश जो खुशहाली के इंडेक्स में सबसे शीर्ष पर हैं। विश्व शांति, युद्ध मुक्त और खुशहाल दुनिया का सपना देखने और उसे जीने वाले देश ही इस धरती को बड़ी और लुटेरी साम्राज्यवादी ताकतों से मुक्त करा सकते हैं। नवीनतम 2025 वर्ल्ड हैप्पिनेस इंडेक्स के अनुसार फिनलैंड, डेनमार्क, स्वीडन, नार्वे, न्यूजीलैंड, आइसलैंड, नीदरलैंड, लुक्सजमबर्ग, स्वीटजरलैंड, फिलिपींस, इजराइल, कोस्टरिका, मेक्सिको खुशहाल देश हैं। इसका आधार है प्रति व्यक्ति आय और अवसाद मुक्त समाज। साथ ही बेरोजगारी और अपराधमुक्त समाज भारत का दुनिया के 218 देशों में 136 वां स्थान है। इस मामले में हम नेपाल, भूटान और पाकिस्तान से भी पीछे हैं।

दुनिया की कुल अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा वार इकोनोमी अर्थात युद्ध के लिए सामग्री उत्पादन का है जिससे दुनिया के विनाश के जरिये मुनाफा कमाने के मनसूबे फल फूल रहे हैं। अमेरिका विगत वर्षों में 14 ट्रिलियन डॉलर युद्ध पर खर्च कर चुका है। यह 14 ट्रिलियन डॉलर की धनराशि भारत के 8 साल के वार्षिक बजट के बराबर है। अमेरिका ने यह पूंजी कहीं युद्ध थोपने में कहीं इराक, अफगानिसतान और वियतनाम में सीधे दादागिरी में खर्च की है। दुनिया में युद्ध पर होने वाले खर्च में 74।3 फीसदी अमेरिका और उसके सहयोगी नाटो देश करते हैं जबकि चीन 10 फीसदी, बांकी देश 9।7 फीसदी खर्च करते हैं। भारत भी 2।8 फीसदी खर्च करता है। नवीनतम आंकड़ो के अनुसार भारत के 284 अरबपतियों के पास देश की कुल संपदा 98 लाख करोड़ रुपये हैं जो देश की कुल जीडीपी का एक तिहाई भाग है जो चीन की तुलना में काफी ज्यादा है। चीन के अरबपतियों के पास कुल 29027 करोड़ रुपये की संपदा है। भारत की कुल जीडीपी 184।8 लाख करोड़ रुपये है। अडानी समूह के पास 8।4 लाख करोड़ रुपये की सम्पदा है और रिलाइंस इंडरस्टीज के पास 8।6 लाख करोड़ रुपये की संपदा है। इन दोनों कार्पोरेट घरानों की संपदा में सरकार के अकूत कर्ज माफी और बैंकों के अकूत कर्ज भी शामिल है। हालाकि हिंडनबर्ग की रिपोर्ट के बाद अडाणी समूह को काफी नुकसान उठाना पड़ा है। रोशनी नादर 3।5 लाख करोड़ रुपये की मालकिन के रूप में देश की सबसे अमीर महिला हैं। उनका नाम विश्व की पांच अमीर महिलाओं में शामिल हो गया है। भारत के युवा अरबपति रेजरपे शशांक कुमार और हर्षिल माथुर 8643 करोड़ रुपये की संपदा के मालिक हैं। रिपोर्ट के अनुसार भारतीय अरबपतियों की औसत आयु 68 वर्ष है जो वैश्विक अरबपतियों से दो वर्ष अधिक है। क्या वैश्विक आर्थिक ढांचे का नये सिरे पुनर्निधारण की कवायद अमेरिका कर रहा है ? उसके ग्रेट अमेरिका के यूटोपियन ड्रीम का आखिर क्या खाका है, इसे समझना भी जरूरी है। आज अमेरिका की रूस के साथ जिस तरह नजदीकियां बढ़ी हैं उससे तो साफ जाहिर है कि अब वैचारिक प्रतिबद्धता और अंतर्राष्ट्रीय सम्बंधों का नीति शास्त्र ही बदल गया। यह खुला नियतिखोरी का खेल है। ट्रंप जिस तरह नाटो देशों के संगठन को भंग करने और संयुक्त राष्ट्र संघ से अपना नाता ही खत्म करने की सोच रहा है इससे लगता है कि दुनिया की पूंजी का बेताज बादशाह बन कर दुनिया की अर्थव्यवस्था को अपनी मुट्ठी में लेना चाहता है। वैसे चीन उसे चुनौती दे रहा है। पर चीन भी अब कोई वैचारिक समाजवादी देश तो रह नहीं गया है और न ही सोवियत संघ की तरह कोई समाजवादी ब्लॉक बनाने का उसका कोई इरादा है। माओ शुरू से ही सोवियत संघ के वैश्विक समाजवादी ब्लॉक के खिलाफ थे। इसे वे देश का धन और ऊर्जा का अपव्यय मानते थे। फिलहाल ट्रंप के व्यापार युद्ध में चीन को प्रतिद्विन्द्वी मानते हुए भी अमेरिका

का चीन के प्रति मुलायम रुख है। चीन फिर भी आक्रामक रुख अपनाये हुए है क्योंकि चीन का वैश्विक व्यापार अमेरिका से कई गुना ज्यादा है। अमेरिका तक में उसकी व्यापारिक जड़ें बहुत गहरी हैं। जिस तरह दुनिया में आर्थिक उलट पुलट हो रहा है जिसका मुख्य ध्येय है मुनाफा सिर्फ मुनाफा। और छोटे-छोटे देशों के प्राकृतिक संसाधनों पर कब्जा करना जो फिलिस्तीन के गाजा पर कब्जे और युक्रेन प्राकृतिक स्रोतों के खनन के अमेरिकी इरादे से साफ जाहिर है। इस बंदर बाँट में फायदा उठाने के लिए रूस की तरह अमेरिका चीन को भी अपना दोस्त बना ले और कहे कि लूट के लिए अपनी सुविधा के मुताबिक दुनिया के देशों को बाँट लें तो आश्चर्य नहीं । चीन एक चालाक और सयाना देश है और वैश्विक आर्थिक और व्यापारिक ताकत बनने की उसकी भूख अमेरिका से कम नहीं है। तो फिर काल्पनिक निर्मिति यह होगी कि दो ध्रुवीय दुनिया फिर एक ध्रुवीय दुनिया बन कर रह जाएगी जिसके मालिक होंगे अमेरिका, रूस और चीन जैसे लुटेरों का गिरोह आज की वैश्विक राजनीति का दुर्भाग्य यह है कि पूरी दुनियां में नकारात्मक और जन विरोधी राजनीति तीव्र गति से विकसित हो रही है एक तरह से सांप्रदायिक और नस्लवादी दक्षिणपंथी राजनीति। यद्यपि स्ट्रामर जैसा वामपंथी प्रधानमंत्री ट्रंप के खिलाफ ताल ठोंक कर यूक्रेन के बचाव में खड़ा है। इससे एक उम्मीद की रौशनी तो दिख रही है पर यह बहुत नाकाफी है। यूरोप में ट्रंप राजनीति से खलबली तो मची है और यूरोपीय यूनियन भी ट्रंप की व्यापार नीतियों के खिलाफ मुखर है। पर ट्रंप के टारगेट में तो एशियाई, अफ्रीकी, अरब और लैटिन अमेरकी देश हैं जिनके मुकाबले पूरा यूरोप बहुत छोटा हिस्सा है। दुनिया की दो तिहाई आर्थिक संपदा एशियाई, अफ्रीकी लैटिन अमेरिकी और अरब देशों की है। इन पर अधिपत्य कायम कर ट्रंप और उनका गिरोह यूरोप को भी तमाम मूल जरूरतों को लेकर परेशानी में डाल सकता है। वैश्विक दादागिरी के सामने जो लाचारी दुनिया में दिखाई दे रही है कमोबेश वही भारत में दिख रही है। मोदी ने जिस तरह विगत 11 सालों में भारत को आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से तबाह किया है ऐसी स्थिति में भारत अमेरिका और चीन के बीच कठपुतली बना झूल रहा है। जो मांगे देदो, जो बेंचे खरीद लो । इसी तरह दुनिया के अन्य तमाम देशों का यही हाल है। भले ही ये स्थितियां उन देशों की घटिया राजनीति और घटिया स्वार्थी नेतृत्व से पनपी हों पर देश और वहां की जनता के भविष्य तो कसाइयों की गिरफ्त में हैं।

ऐसी उलझी हुई जटिल वैश्विक परिस्थितियों पर सोचते हुए सर चकराने लगता है। कभी कभी सोचता हूँ कि जब इतनी सुन्दर दुनिया बनाई थी तो इतने शैतान क्यों पैदा किये दुनिया की तबाही के लिए ? पूरी पृथ्वी सात महाद्वीपों में बंटी है। पर ज्यादातर डेटा बेस अपने आर्थिक विश्लेषण में एक इकाई के तौर पर महादेशों को कसौटी नहीं बनाते। कम से कम सभी को तो नहीं बनाते हैं। कुछ हद तक इसका कारण समझा जा सकता है जैसे आखिर तेल संपन्न पश्चिम एशिय, दक्षिण एशिया से एक दम बहुत अलग है जबकि दोनों एशियाई महादेश के ही हिस्से हैं दुनिया के महादेशों की अपनी अपनी विशेशताएँ हैं और सबके अपने अपने संसाधन और प्राकृतिक स्रोत हैं। सभी पर समुद्र के टापू हैं तो मुंह चिढाती गरीबी भी तेजी से विकसित होती दुनिया में कुछ देशों ने पारस्परिक सहयोग से आर्थिक तरक्की की नई नई मिसालें कायम की हैं तो कुछ शक्तिशाली देशों ने गरीब देशों के संसाधन लूट कर उन्हें तबाह किया है। विश्व बैंक ने वैश्विक जीडीपी में दुनिया के देशों की हिस्सेदारी या योगदान का डाटा बेस तैयार किया है जो दिलचस्प और देखने योग्य है। सोवियत संघ के विघटन के बाद की अवधि में 1989 से पहले रूस की जीडीपी कार्य अनुमान के आधार पर प्रायः 4 प्रतिशत से कम रहा। दशकीय आधार पर विश्लेषण से पता चलता है कि यह एशिया के उदय की कहानी है। 2010-2023 की अवधि में एशिया का विश्व जीडीपी में 34 प्रतिशत योगदान रहा। एशिया को यह फायदा उत्तरी अमेरिका और यूरोप के नुकसान की कीमत पर हुआ। एशिया का वैश्विक जीडीपी में योगदान बेहद महत्वपूर्ण है। यह इस तथ्य से प्रमाणित होता है कि एशिया का 60 के दशक में वैश्विक जीडीपी में योगदान 17 फीसदी था जो 2010-2023 की अवधि में 48।5 फीसदी तक पहुँच गया। वैश्विक विकास में एशिया का योगदान लगातार बढ़ता रहा है। 1960 में

यूरोप का वैश्विक जीडीपी में 30 प्रतिशत योगदान था जो गिर कर 2010- 2023 की अवधि में 18।9 फीसदी रह गया और इसी तरह अमेरिका के भी इसी अवधि में वैश्विक योगदान में जीडीपी 28।7 फीसदी से गिर कर 23।1 फीसदी देखी गयी। इस तस्वीर का एक दूसरा पहलू भी है। देशों की? अहमियत के आधार पर जब हम विश्लेषण करते हैं तो एशियाई प्रभुत्व की तस्वीर बदल जाती है। साल 2023 में एशिया की कुल जीडीपी में 49।6 फीसदी योगदान केवल चीन का था। यदि हम चीन और अमेरिका के सयुक्त जीडीपी का योगदान देखें तो 2010-2023 की अवधि में क्रमशः चीन का 47।7 फीसदी और अमेरिका का 39।9 फीसदी रहा। जाहिर है कि यह मौजूदा आंकड़े चीन और अमेरिका की अहमियत को रेखांकित करते हैं। इसी अवधि में तेजगति से चलने का दावा करने वाली भारत की अर्थव्यवस्था काफी पीछे रही। वैश्विक जीडीपी में भारत काफी योगदान कुल 05 फीसदी है। जबकि जनसंख्या और संसाधनों के लिहाज से भारत दुनिया का दूसरा और कई मायने में यह दुनिया का सबसे बड़ा देश भी है। वैश्विक जीडीपी के लिहाज से एक और अहम् पहलू है कि शीर्ष के दो देशों अमेरिका और चीन की साझा जीडीपी में अमेरिका की हिस्सेदारी कम होती गयी। उसकी वजह शायद यह हो सकती है अमेरिका अपनी आर्थिक शक्ति बाहरी दुनिया के देशों पर युद्ध थोपने, सीधे युद्ध में घुसने में अपव्यय करता है जैसे इराक, लीबिया, पश्चिमी एशिया के अरब देशों में घुसपैठ और रूस युक्रेन युद्ध में रूस के खिलाफ यूक्रेन की मदद आदि जबकि अमेरिका की जनता अकसर अमेरिकी सरकार के खिलाफ युद्ध में संलिप्तता का विरोध करती सड़कों पर उतरती देखी गयी है। पर अमेरिका अपनी साम्राज्यवादी और उपनिवेशवादी लुटेरी हरकतों से बाज ही नहीं आता है। चीन इससे इतर अपनी आर्थिक और सामरिक ताकत तो लगातार बढ़ा रहा है। मगर युद्ध की संलिप्तता से लगभग दूर ही रहता है। जैसा कि लगता था रूस यूक्रेन युद्ध में चीन रूस के साथ खड़ा होगा और उसके सहयोगी के रूप में लड़ेगा पर बड़ी होशियारी से न्यूट्रल हो गया। इधर भारत पर उसकी नजर बहुत सजग है और लगातार घुसपैठ की हरकतें करता रहता है पर युद्ध जैसा परिदृश्य नहीं रच रहा है। भारत की सीमाओं पर अपनी चौकियां और गांव लगातार बसा रहा है। पाकिस्तान के कंधे पर चीन का वरद हस्त लम्बे समय से है क्योंकि पाकिस्तान उसके हथियारों का सबसे बड़ा खरीदार है और सीमाओं के लिहाज से पाकिस्तान उसके लिए बहुत महत्वपूर्ण है। चीन ने भारत के पड़ोसी देशों पर अपनी आर्थिक ताकत के प्रभाव में अपना वर्चस्व कायम कर रखा है जैसे नेपाल, भूटान, बांग्लादेश और पाकिस्तान आदि। इसके पहले ऐसा कभी नहीं रहा। भारत चीन और अमेरिका के बीच एक असहाय की तरह झूल रहा है। भारत आतंरिक रूप से भी अपनी कट्टर अल्पसंख्यक विरोधी और सांप्रदायिक नीतियों के कारण बहुत कमजोर हो चला है। बढ़ता व्यापार घाटा, बढ़ता कर्ज बढ़ता आयात बढ़ता बेरोजगारी, महंगाई और भ्रष्टाचार सरकार की विफलता को दशार्ते हैं। जबकि जनसंख्या और संसाधनों के लिहाज से भारत को दुनिया की दूसरी या तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होना चाहिए। इधर यूरोप की वैश्विक विकास दर लगातार घटी है। ग्रीस जैसे कई देश कंगाली में डूब गये। जबकि एशिया का योगदान वैश्विक विकास में लगातार बढ़ा है। पर अधिकांश एशियाई देश इसके बावजूद तबाही के हालात में हैं। लैटिन अमेरिकी और अफ्रीकी देशों की स्थिति में कोई बदलाव नहीं दिख रहा है। वे भी अपने आतंरिक संघर्षों में उलझे हुए हैं जिसमें अमेरिका और यूरोपीय देशों की सक्रिय भूमिका देखी जा सकती है। आज का दौर एशियाई, अफ्रीकी। लैटिन अमेरिकी और यूरोपीय देशों को अमेरिका जैसे व्यापार युद्ध छेड़ने वाले के खिलाफ एक जुट होने का है। अब दुनिया के स्वार्थरत वैश्विक गुटों जैसे ब्रिक्स, क्वाड, जी- 20, जी-7, आसियान आदि से काम चलने वाला नहीं है। अब छोटे छोटे देशों की जनता को युद्ध और क्रूर कम्पटीशन के विरुद्ध युद्ध मुक्त और पारस्परिक सहयोग की रणनीति के बलबूते अमेरिका जैसे साम्राज्यवादी देश के व्यापार युद्ध के खिलाफ लामबंद होकर मानवीकृत जन कल्याणकारी राज्यों के निर्माण की अवधारणा पर जोर देना होगा जहाँ रोजगार हों, खुशहाली हो और भ्रष्टाचार और अपराध से मुक्ति पायी जा सके और एक खुशहाल दुनिया का निर्माण किया जा सके जो मानव सभ्यता का तकाजा है। वरना यह आधुनिक मानव कृत्रिम मेधा और सेटलाइट के युग में भी हम एक दूसरी की जान के प्यासे बने रहेंगे।

09 अरब की आबादी की इस दुनिया की कुल अर्थव्यवस्था 105 ट्रिलियन डॉलर की है जिसमें दुनिया की सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था अमेरिका 26.9 ट्रिलियन डॉलर की है और दूसरे नंबर पर चीन 19.4 ट्रिलियन डॉलर की है।इसके बाद जापान 4.4 ट्रिलियन डॉलर की दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था है और चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था 4.3 ट्रिलियन डॉलर की यूरोपीय संघ है। भारत 3.7 ट्रिलियन डॉलर की पांचवी अर्थव्यवस्था है। यू के 3.2 ट्रिलियन डॉलर और रूस 2.1 ट्रिलियन डॉलर की अर्थ व्यवस्थाएं हैं।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं, संपर्क 70074 68067)

अली सरदार जाफ़री (जन्म : 29 नवम्बर 1913, निधन : 1 अगस्त 2000) प्रगतिशील लेखक संघ के संस्थापकों में से एक थे और आख़िरी वक्त़ तक वे प्रगतिशील साहित्य आंदोलन से जुड़े रहे। अली सरदार जाफ़री की पहचान एक अज़ीम शायर की है, लेकिन वे एक बेहतरीन अफ़साना निगार भी थे। और उन्होंने कुछ कहानियॉं और ड्रामे भी लिखे। उनकी पहली किताब 'मंज़िल' थी, जो साल 1938 में प्रकाशित हुई। किताब में उनकी पॉंच कहानियों के अलावा 'सिपाही की मौत' एकांकी शामिल है।

'परवाज़', 'नई दुनिया को सलाम', 'ख़ून की लकीर', 'एशिया जाग उठा' और 'मेरा सफ़र' सरदार जाफ़री के नज़्मों-ग़ज़लों के प्रमुख संकलन हैं। 'दीवान-ए-ग़ालिब', 'दीवान-ए-मीर' और 'कबीर बानी' वे किताबें हैं जिनमें उन्होंने ग़ालिब, मीर एवं कबीर की शायरी का आलोचनात्मक विश्लेषण किया है। अली सरदार जाफ़री की कई प्रमुख रचनाओं का दीगर हिंदुस्तानी ज़बानों समेत दुनिया की कई ज़बानों में अनुवाद हुआ है। देश के सांस्कृतिक राजदूत के तौर पर उन्होंने कई मुल्कों की यात्रा की। अदब और इंसानियत की खद्मित के लिए अली सरदार जाफ़री को अनेक बड़े सम्मान और पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। जिसमें कुछ खास़ सम्मान-पुरस्कार हैं- 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' (साल 1997), 'राष्ट्रीय इक़बाल सम्मान', 'सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार' (साल 1965), 'अंतरराष्ट्रीय उर्दू अवार्ड' और साल 1999 में हावर्ड यूनीवर्सिटी अमेरिका द्वारा 'अंतरराष्ट्रीय शांति पुरस्कार' आदि।

बारह आने

–अली सरदार जाफ़री

शहर के भीड़-भाड़ वाले हिस्से में गली के मोड़ पर एक कबाड़िए की छोटी-सी दुकान थी। जिस पर एक बुड्ढा शिकारी जैसी आँखों का आदमी ऊँघा करता था। कभी-कभार जब कोई ग्राहक आ जाता, तो कबाड़िया चौंकता नहीं। उसी तरह अपनी आँखें बंद किए बैठा रहता। उसकी आँखों में कीचड़ इस तरह भरी रहती कि वो दूर से दो छोटे-छोटे ज़ख्म मालूम होते थे। दुकान के पीछे एक अँधेरा कमरा था, जिसके वजूद का इल्म वहाँ आनेवालों के सिवा किसी और को न था। ये एक गंदा शराबखा़ना था। इसमें दस-पन्द्रह आदमियों के बैठने की गुंजाइश थी। छत इतनी नीची थी कि मालूम होता था, अभी गिर पड़ेगी। और कच्ची ज़मीन में इतनी शराब और ताड़ी अवशोषित हो चुकी थी कि हर वक्त़ सीली रहती थी। एक तरफ़ दीवार में बहुत बड़ा छेद था। जिसके अंदर छत पर जाने का रास्ता साफ़ दिखाई देता था। उसका भी मालिक यही कबाड़िया था। जो ख़ुद तो दुकान पर बैठा रहता था और बेटा अंदर ताड़ी और कच्ची शराब बेचता था। रात का वक्त़ था, कबाड़िये की दुकान ब-दस्तूर खुली हुई थी। सड़क पर बिजली की रौशनी गुल हो चुकी थी। और गली के अंदर जहाँ आने-जानेवालों का सिलसिला कम हो चुका था, म्युनिसिपैलटी की अंधी लालटेन टिमटिमा रही थी। लेकिन शराबखा़ना अपनी पूरी रौनक पर था। छह-छह, सात-सात मज़दूरों की तीन-चार टोलियाँ अलग-अलग बैठी हुईं, ताड़ी पी रही थीं। एक कोने में एक ताँगेवाला अकेला बैठा शराब उड़ा रहा था। टूटे हुए कुल्हड़ और मिट्टी के प्याले हर तरफ़ पड़े थे। एक मज़दूर जो कई महीने बाद आया था, बैठा अपनी टोलीवालों से कह रहा था,

''अंधे हो जाओ, तो काम से अलग कर दिए जाओ। वो तो जानो परमात्मा की कृपा थी कि मजूरी फिर मिल गई। ससुरे मुंशी ने पूरे दस रुपए लिए। कोई पैसा भी नहीं छोड़ा। उधार क़र्ज़ लेकर दे दिए। सोचा कि मजूरी अब की गई, तो फिर न मिलेगी। चाहे परमात्मा आकाश से उतर आएँ।''

दूसरा मज़दूर बोला, ''तब ही हम कहत रहे कि छेदी कहाँ है? माल न बेचे, यहाँ ताड़ी पीअत रहा हो। छोड़ो यहीं!''

छेदी ने कहा, ''जब पैसे ही पल्ले न हों, तो कहाँ से पी?''

सबने उससे इत्तिफ़ाक़ किया और फिर पीने में मशगूल हो गए। दूसरी टोली का एक काना मज़दूर नशे में बड़बड़ाने लगा,

''दिन भर काम करो। शाम को औरत की बातें सुनो। नोन नहीं, तेल नहीं, लकड़ी लाओ! ई लाओ, ऊ लाओ। छोटी–सी काल कोठरी। वहीं चूल्हा, वहीं बर्तन, वहीं बाल-बच्चे। फिर औरत है कि चुड़ैल!''

ये अभी इतना ही कहने पाया था कि पास वाले मज़दूर ने कुछ ज़्यादा पी लेने की वजह से उल्टी की। और उगली हुई शराब से काने की मैली धोती भर दी। काना गुस्से में नाचने लगा,

''ससुर झापड़े दें। काहे इतनी पी ली सबने!''

बीच-बचाव कर दिया, नहीं तो मार-पीट हो जाती। ताँगेवाला जो दूर बैठा था, आकर इन लोगों में मिल गया। और काने का कंधा पकड़कर कहने लगा,

''यार! तुझे कितना रोज़ मिलता है?''

''आठ आने!''

''फिर तो मैं मज़े में हूँ।'' ताँगेवाले ने अभिमान से कहा, ''मेरा मालिक छह आने रोज़ देता है और दो-ढाई रुपया मैं पहले ही बचा लेता हूँ।''

सारे मज़दूर हैरान होकर उसकी तरफ़ देखने लगे।

''ये कैसे?'' एक लँगड़े मज़दूर ने पूछा।

''ये बहुत आसान है। मैं अगर दिन भर में पाँच रुपए कमाता हूँ, तो मालिक को तीन

ही बताता हूँ।''

इस मुख़्तसर-सी गुफ़्तगू के बाद ताड़ी और शराब का दौर फिर चलने लगा। भद्दे क़हक़हों के साथ शराब और ताड़ी की हलक से नीचे उतरने की ग़रग़राहट और खाली प्यालों के टूटने की आवाज़ें आने लगीं।

''अबे ओ कनुआ!'' छेदी ने काने को अपनी टोली से आवाज़ दी। सब क़हक़हा मारकर हँस पड़े।

''आज जान पड़त है, मजूरी ज़्यादा पाये हो?''

काने ने अपनी कानी आँख को कुछ और दबाकर कहा, ''थहारी दीदी की आँख, तो माँगे न गई रहा!''

छेदी तिलमिलाकर उठा। काना उसे जो चाहता, कहता। उसकी दीदी का नाम उसने कैसे लिया। उधर काने की मदद पर लँगड़ा था। जिसे देखकर, छेदी के तेवर कुछ बुझ गए।

''जाओ बच्चा! आज छोड़ दिया है। अबके से दीदी के नाम लिये तो बताई!''

काना और लंगड़ा दोनों एक साथ उठे और बाहर चले गए। छेदी कुछ पैसे नौजवान कबाड़िये को देकर, छत पर चढ़गया। इतने में दो देहाती लड़कियाँ जीने की ओर आईं। एक ज़रा तेज़-तेज़ क़दम रख रही थीं और दूसरी ज़रा झिझक-झिझक कर एक साथ अंदर दाखिल़ हुईं। उनके पीछे दोनों मज़दूर थे। जो अभी चंद मिनट हुए बाहर गए थे। ज़मीन, छत और दीवारों से निकलने वाले ताड़ी और शराब के भभकों ने उनका स्वागत किया। नौजवान कबाड़िया उन्हें देखकर मुस्कराया। और दोनों को जीने की तरफ़ इशारा करके, अपने काम में व्यस्त हो गया। ताँगेवाला लड़कियों को देखकर, अपनी जगह से उठा और लड़खड़ाता हुआ कबाड़िये के पास आया। वो कुछ कहने ही वाला था कि दरवाज़े में लाल पगड़ी दिखाई दी। पुलिस का एक सिपाही अंदर दाख़िल हुआ। ताँगेवाला घबराकर अपनी जगह वापस लौट गया। और लड़कियों के पीछे आनेवाले काने और लंगड़े एक कोने में दुबक गए। टोलियों में बैठे हुए मज़दूर आपस में कुछ काना–फ़ूसी करने लगे।

सिपाही ने कबाड़िए के पास आकर कहा, ''क्यूँ जी क्या रंग है?''

कबाड़िये ने जेब से एक रुपया निकाला और अपने दाँत होठों से बाहर निकालते हुए कहा,

''अजी क्या पूछते हो, नाइक साहब? बस दो वक्त़ की रोटी चल जाती है।''

सिपाही जो अब क़रीब आ चुका था; ज़रा अकड़कर बोला, ''आजकल तो बहुत से ग्राहक फाँस रखे हैं।''

उसका इशारा दोनों लड़कियों की तरफ़ था। कबाड़िये ने अपना रुपए वाला हाथ इस तरह आगे बढ़ाया, जैसे हाथ मिलाना चाहता है। सिपाही ने रुपया लेकर, बजाया। देर तक उसे देख-देखकर मुस्कराता रहा।

फिर कहा, ''बिटिया कई दिन से परेशान कर रही थी कि रबड़ का बबुआ ला दो। मेरे पास पैसे कहाँ थे? सोच रहा था कि कहीं अच्छी जगह ड्यूटी लग जाए।''

''हाँ....हाँ, तो फिर आज बिटिया को बबुआ ख़रीद दीजिए।'' कबाड़िए ने चापलूसी करते हुए कहा।

''आज लेता जाऊँगा। रोज़ ज़िद करती थी। एक दिन उसे साहब के यहाँ सलाम को ले गया था। बाबा लोग बबुए से खेल रहे थे। बस, उसी रोज़ से जान खा रही थी।''

''बच्चे ऐसे ही होते हैं।''

सिपाही ने रुपया जेब में डाल लिया। कबाड़िए ने झुककर अदब से सलाम किया। और उसे दरवाज़े तक पहुँचाकर लौट आया।

ताँगेवाला पास आकर कहने लगा, ''आज तो एक नई लड़की आई है!''

कबाड़िया मुस्कराया। दोनों कोने में दुबके हुए मज़दूर भी आ गए।

काना बोला, ''नई लड़की!''

लँगड़े ने कहा, ''कितने पैसे लेगी?''

ताँगेवाले ने हैरत से कहा, ''नई है नई! पैसे नहीं, रुपए लेगी।''

''रुपए!'' मज़दूर ने हैरत से पूछा।

''हाँ, रुपए...! कुछ है गिरह में?'' ताँगेवाले ने कहा।

दोनों मज़दूर एक-दूसरे की सूरत देखकर, ख़ामोश हो गए।

ताँगेवाला कबाड़िए से मुखा़तिब हो गया,

''यार! फिर सौदा कराते हो?''

''क्या है तुम्हारे पास?''

''तीन रुपए!''

''नहीं, पाँच रुपए।''

''पाँच, तो मेरे पास नहीं हैं।''

''किसी से उधार ले लो। बिल्कुल नई लड़की है।''

''फिर तुम्ही दे दो, उधार।'' ताँगेवाले ने खिसियाकर कहा।

कबाड़िया अपनी उँगली हिलाकर बोला, ''अच्छा बोलो, कितने रुपए हैं?''

''चार!''

''दो शराब के दाम।''

''इसीलिए तो तीन रुपए कह रहा हूँ। एक रुपया तुम शराब की क़ीमत ले लो।''

''अच्छा दाम निकालो!'' कबाड़िये ने कहा। ''दो रुपए फिर दे देना।''

ताँगेवाले ने चार रुपए उसके हाथ पर रख दिए। जिन्हें कबाड़िये ने अपनी मुट्ठी में दबा लिया और ग्राहक को साथ लेकर जीने पर चढ़गया। दोनों मज़दूरों ने आपस में कुछ काना-फ़ूसी की और फिर ताड़ी पीने लगे। छत पर कई कोठरियाँ बनी थीं। दो-तीन अंदर से बंद थीं। एक कोठरी में कई औरतें जमा थीं। दूसरी में दोनों देहाती लड़कियाँ बैठी थीं। कबाड़िये ने दरवाज़े में से 'रामी' कहकर एक लड़की को बाहर बुलाया। और अलग ले जाकर पूछा कि

''नई लड़की कौन है?''

''उसका नाम यमुना है। एक किसान

की लड़की है। क़रीब के देहात में रहती है।''

''तुझे कहाँ से मिल गई?''

''तीन दिन से मैं उसकी फ़िक्र में थी।'' रामी ने हँसकर कहा, ''सड़क पर मारी-मारी फिर रही थी। मज़दूरी नहीं मिल रही थी।'' मैंने कहा, 'चलो! मैं पैसे दिलवाऊँगी।' पहले दिन राज़ी नहीं हुई। आख़िर आज आई और अगर आज न आती, तो कल आ जाती।''

''तो अब राज़ी है?'' कबाड़िये ने पूछा।

''राज़ी न होती, तो यहाँ आती ही क्यों?''

''फिर उसे रोज़ यहाँ आने पर राज़ी करो।''

''एक दिन आने के बाद, फिर कहाँ जा सकती है?''

कबाड़िया नीचे चला गया। ताँगेवाला कोठरी में घुस गया और रामी छत पर खड़ी रही। थोड़ी देर बाद ताँगेवाला कोठरी से बाहर निकला, तो रामी अंदर गई। उसकी नयी सहेली, जो अब उसकी तरह पुरानी हो चुकी थी, टूटी हुई चारपाई पर बैठी हुई काँप रही थी। आँसू उसकी आँखों में भरे थे। सलूका, आस्तीन और सीने पर से अस्त-व्यस्त हो गया था। रामी को देखते ही उसने कहा,

''अब मैं जाऊँगी!''

उसकी आवाज़ में बिल्कुल जान नहीं थी।

''क्यों? जल्दी क्या है? अब तो कमाई का वक़्त आ रहा है।''

''नहीं!'' यमुना ने मुर्दा आवाज़ में कहा। ''मैं तो शहर में मज़दूरी करने आयी थी।''

''मज़दूरी में तुम्हें ज़्यादा पैसे नहीं मिलेंगे!'' रामी ने उसे तसल्ली देते हुए कहा, ''फिर आजकल मज़दूरी है कहाँ?''

यमुना ने कहा, ''लेकिन मैं तो जाऊँगी। मेरे जो कुछ पैसे हों, मुझे दिला दो।''

''अच्छा! जैसी तुम्हारी मर्ज़ी।'' ये कहकर रामी कोठरी से बाहर निकल गई।

उसने सोचा कि आज अगर उखड़ गई, तो फिर कभी नहीं आएगी। जब तक रामी वापस आए, जमुना अपनी हालत पर ग़ौर करती रही। बाप की क़र्ज़े के बोझ से झुकी हुई कमर। माँ ग़म की उलझनों से झुर्रियों भरा चेहरा। छोटे-छोटे बहन-भाई। देहात, जहाँ कोई आमदनी की सूरत नहीं। शहर का शोर-ओ-गुल। मोटरगाड़ी, ट्राम का आना-जाना। ऊँचे-ऊँचे महल, जिनके दरवाज़ों में किसी को घुसने की इजाज़त नहीं। गंदा शराबखा़ना। छोटी सी अँधियारी कोठरी। शराब में मस्त ग्राहक। जज़्बात से खाली और पैसे की उम्मीद से भरी हुई जवानी। एक नौ-सिखिया लड़की की जवानी। उसकी आँसूओं से भरी हुई आँखें छलक पड़ीं। इतनी देर में रामी वापस आ गई।

उसे देखकर बोली, ''तुम क्यों रो रही हो?''

''कुछ नहीं!'' यमुना ने आँसू पोंछकर कहा, ''पैसे लाईं?''

रामी ने बारह आने पैसे उसे दिए। यमुना ने पैसे हाथ में लेकर गिने।

और कहने लगी, ''बस! बारह आने!''

''और क्या इतनी देर में कोई बारह रुपए मिलेंगे!''

यमुना खा़मोश हो गई और पैसे अपने आँचल में बाँधकर उठ खड़ी हुई।

रामी ने कहा, ''थोड़ी देर ठहरो यमुना! अभी और लोग आते होंगे।''

यमुना ने कोई जवाब न दिया। और दरवाज़े की तरफ़ चल दी। रामी उसे साथ लेकर जीने से नीचे उतरी। यमुना के क़दम उस वक़्त डगमगा रहे थे। मुश्किल से रामी का सहारा लिए वो शराबखा़ने से बाहर आई।

अँधेरी गली में पहुँचकर उसने कहा, ''अब मैं चली जाऊँगी।''

रामी ने पूछा ''फिर कल आओगी ना?''

यमुना पहले तो चुप रही। फिर गर्दन हिलाती हुई चली गई। फ़ौरन ही दो मज़दूर बाहर निकले। एक लंगड़ा, एक काना। और यमुना के पीछे हो लिए।

(प्रकाशन वर्ष : 1937)

उर्दू से हिंदी अनुवाद : ज़ाहिद खा़न और इशरत ग्वालियरी

संपर्क : महल कॉलोनी, शिवपुरी—473551 (मध्य प्रदेश) मो. 9425489944

गाँव गिराँव हिन्दी मासिक पत्रिका पाठकों के लिए gaongiraw.in पर भी उपलब्ध।
अन्य वेबपेज के लिए देखें
www.gaongiraw.com
www.gaongirawsports.com

समागम

–ओल्गा

सूरज ढलने के समय एक ओर अरण्य अरुण की लाल किरणों से ढका हुआ था तो दूसरी ओर जंगल में चारों ओर फैले हुए अँधेरे रूपी काले धुएँ के बीच जलता हुआ सुर्ख़ सूरज भट्टी की तरह लग रहा था। पक्षियों का झुंड अपने बसेरे की ओर चला जा रहा था। उस चहचहाहट से पूरे वन में एक चहलक़दमी फैली हुई थी। मृगों का झुंड दिन भर के आलस्य से अपने आपको छुड़ाकर स्फूर्त हो चाँदनी के विहार के लिए तैयार हो रहा था। घने जंगल में फैली यह शमाँ बेहद सुकून भरी और खूबसूरत लग रही थी। ऐसे में मुनि का आश्रम किसी प्रतिभाशाली कलाकार की सृष्टि सा लग रहा था।

आश्रम में संध्या के समय होने वाले कार्यक्रमों का आरंभ हो रहा था। यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित होने लगी, गंभीर मंत्र नाद का मधुर स्वर सुनाई देने लगा था। मुनि पत्नियाँ फल फूलों के तरुणों को पानी दे रही थीं। पूजा के लिए माला बन रही थी। बच्चे अरण्य संचार से वापस आकर व्याकुल उनकी प्रतीक्षा करने वाली अपनी माँओं की ममता भरी गोद में समा गए। माँएँ अपने बच्चों को संध्या समय के अनुष्ठान के लिए तैयार कर रहीं थीं। वहीं छोटी सी एक कुटिया में एक माँ अरण्य संचार से लौटकर आने वाले अपने बच्चों का इंतज़ार कर रही थी। अपने उन बालकों पर ही उसके प्राण अटके हुए थे। उसकी आँखें गवाही दे रही थीं कि वह उन्हें देख-देखकर ही अपना जीवन बिता रही है। आतुरता, प्रेम, स्नेह, दया बरसाने वाली उनकी आँखों में डर ने अपना घर कर लिया है। वह माँ थी सीता।

अपने दो कुमारों का इंतज़ार कर रही थी।

प्रति दिन इस समय तक वह दोनों लौटकर आ जाया करते थे।

आते-जाते जंगल से जंगली फूल लाया करते थे। उन फूलों को देवार्चन के लिए उपयोग करने की ज़िद किया करते थे। जिन फूलों का नाम तक पता नहीं है उन फूलों को पूजा में नहीं रखूँगी कहती थी सीता। दोनों भाई उन फूलों के अजीब-अजीब से नाम दिया करते थे। सीता हँसती तो वे दोनों रूठ जाते। सीता उन दोनों को बहलाती फुसलाती और उन फूलों से पूजा कर दोनों को संतुष्ट करती। अँधेरा होते ही सारा वन इन दोनों के गान में तल्लीन हो जाता। वह लव कुश अभी लौटे नहीं थे। लव कुश जंगल का चप्पा-चप्पा जानते थे। उनका जन्म उसी वन में हुआ था, वह वहीं पले बढ़े, वह अरण्य पुत्र थे। किंतु आज देर होने की वजह क्या है, यही भय और संदेह का कारण था। जबसे लव कुश अयोध्या से लौटे हैं सीता के मन में बच्चों को लेकर एक अजीब सी घबराहट एवं परेशानी ने घर कर लिया है, इससे पहले उसकी ऐसी हालत नहीं थी। अनजान बेचैनी और डर ने उसके मन में घर कर लिया है। अभी भी वह बेचैनी उसके मन में घर कर गयी थी किंतु उसकी यह बेचैनी वन को लेकर नहीं नगर को लेकर थी। अँधेरा छाता गया और धीरे-धीरे चारों ओर फैल गया। सीता की आँखें दीपों की तरह प्रज्वलित थीं। इतने में उन नयन दीपों में दोनों बालक आकर समा गए। सीता ने चैन की साँस ली, इतनी देर होने का कारण पूछा।

लव - 'माँ यह देखो' कहते हुए अपने गमछे में बाँधकर लाए हुए फूलों को थाली में डाल दिया। क्षण भर में कुटिया उसके सुगंध से महकने लगी। उस सुगंध को उससे पहले कभी नहीं जाना था।लाल, सफ़ेद, हरे, पीले फूल थाली में भरे हुए थे। ऐसा लग रहा था मानो वे फूल हँस रहे हों। उन फूलों को पहले कभी नहीं देखा था। उस सुगंध को कभी नहीं जाना था। लव कुश दोनों ने अपने उन फूलों की प्राप्ति को लेकर गौरवान्वित भाव में माँ की ओर देखा।

''कहाँ के हैं यह फूल, कितने सुंदर हैं'' अपनी उँगलियों के कोमल स्पर्श से फूलों को छूते हुए सीता ने पूछा।

''माँ आज जंगल में एक नए उद्यान की खोज की हमने। ऐसा उद्यान कहीं नहीं देखा। वाल्मीकि नाना जी द्वारा वर्णित नन्दनवन भी इसके आगे कुछ नहीं है।'' कहा कुश ने।

कुश की बातों के समर्थन में सिर हिलाकर आँखों से इशारा किया लव ने।

''किसका उद्यान है वह कुश'' सीता ने पूछा।

''माँ वह उद्यान जितना सुंदर है उसका मालिक उतना ही कुरूप है। हमें फूल तोड़ता देखकर वह वहाँ आयीं। हम उसे देखकर डर गए। भैय्या ने किसी तरह हिम्मत जुटायी और कहा कि हम मुनि बालक हैं। पूजा के लिए फूल तोड़ने के लिए आए हैं। हम जल्दी-जल्दी वहाँ से चले आए। ऊ.....माँ वह रूप अति कुरूप, पूरी कुरूपी, अपनी आँखें मुँह मीचते हुए कहा लव ने।

''यह ग़लत है बेटा, मनुष्य के आकार को देखकर उससे घृणा नहीं करनी चाहिए। वह कुरूपी है तो क्या हुआ कितने सुंदर फूलों का उद्यान लगाया है उसने? है न।'' कहते हुए समझाया सीता ने।

''उसका शरीर ठीक ही है माँ लेकिन नाक कान नहीं है। ऐसा लगता है मानो उसको किसी ने काट दिया है। किसी की काट की तरह उस जगह पर बढ़ा सा गड़ा है।'' कुश ने अपना मुँह मीच लिया।

एक पल के लिए सीता को ऐसा लगा मानो किसी ने उसकी पीठ पर कोड़ा मारा हो।

''नाक कान नहीं हैं?''

''नहीं है मतलब कभी रहे होंगे, किसी ने काट दिया ऐसा लग रहा था, है न भैया''कुश का समर्थन चाह रहा था लव। सीता को अब विश्वास हो गया कि वह ज़रूर शूर्पणखा ही है।

18 साल पहले की बात है। राम के प्रेम के लिए आयी थी, कितनी सुंदर लड़की थी, राम लक्ष्मण के क्रूर परिहास के कारण

बेचारी कुरूपी हो गयी है। वह शूर्पणखा अभी इसी अरण्य में ही है? कितना समय बीत गया! शूर्पणखा का राम ने अपमान किया तो रावण ने उसका (सीता का) अपहरण कर राम से अपना प्रतिकार लेना चाहा था। पुरुषों के क्रोध, प्रतिकारों का बदला लेने के लिए ही स्त्रियाँ हैं? अगर रावण की बहन होने का पता चलता तो राम लक्ष्मण शूर्पणखा के साथ ऐसा व्यवहार करते ही नहीं। रावण को उकसाना ही राम का अभिप्रेत था। रावण से युद्ध करने की वजह की तलाश शूर्पणखा के चलते पूरी हुई। वह सब एक राजनीतिक दाँवपेच थे।बेचारी शूर्पणखा प्रेम-प्रेम करते हुए आयी थी। बिना नाक कान वाली उस कुरूपिनी को और कौन चाहेगा? प्रेम करेगा? क्या पूरा जीवन उसने बिना प्रेम के ही बिता दिया? क्या अपने अंदर के प्रेम को उड़ेल कर ही उसने इस उद्यान को सींचा है? उसका निर्माण किया है? उसके हृदय की सुकुमारता के प्रतिफल हैं ये फूल। बेचारी शूर्पणखा!

सीता की आँखों में आँसू देखकर आश्चर्यचकित रह गए लव कुश – ''क्या है माँ यह, किसी अनजान के बारे में सुनने मात्र से ही क्यों इतनी दुखी हो रही हो।''

सीता ने आँखों को पोंछते हुए धीरे से हँसते हुए कहा – ''कल मुझे उस उद्यान में ले चलोगे? उसका रास्ता याद है न?''

सीता की बातों को सुनते ही दोनों भाइयों की ख़ुशी का ठिकाना न रहा। माँ हमारे साथ अरण्य विहार के लिए चल रही है, यह सोचते ही उनका मन ख़ुशी से झूम उठा। सुपरिचित जंगल के प्रांतों को दिखाने के लिए दोनों उतावले हो रहे थे। मगर सीता उनके साथ कभी नहीं आती थी। अगर कभी जाती भी तो मुनिपुत्रियों के साथ ही। दोनों सोचने लगे कि माँ का हाथ पकड़कर उस दुर्ग अरण्य का संचार करेंगे, माँ डरेगी तो उसे धैर्य देंगे, जंगल के सभी अजूबों को दिखायेंगे, सोचते हुए उनका उत्साह रुक नहीं पा रहा था। वह सोच रहे थे कि यह प्रतीक्षा की घड़ी कब समाप्त होगी।

सीता के लिए भी वह रात भारी गुज़री। बीते कल की यादों को हटाने पर भी वह बार-बार आगे आकर खड़े होने लगे थे।

राम के साथ गुज़ारे हुए अरण्य के वे दिन, शूर्पणखा का आना, कितनी मनोहरता के साथ चलते हुए आयी थी वह। सफ़ेद चमेली के फूल सर में, हरे फूलों की माला गले में पहने हुए, हाथों में नीलांबरों की मालाएँ पहने हुए हवा में लहराती हुई फूलों की डाल की तरह आयी थी वह, मैं उसके गहनों की ओर आश्चर्य से देख रही थी।

'परिमलहीन, सौकुमार्यहीन भार को क्यों ढो रही है' के भाव से देख रही थी।

उसे सिर्फ़ देखा था कहा कुछ नहीं, सीधे राम के पास चली गयी। वह उनकी बातों की ओर ध्यान देकर कुछ कर रही थी। अभी थोड़ा ही समय बीता था कि आश्रम में रक्तपात होने लगा।

एक स्त्री का हृदय विदारक रोदन

कितने श्राप दिये उस घटना को लेकर उसने

लगता है उस श्राप ने अभी तक पीछा नहीं छोड़ा।

उससे कोई पुरुष प्रेम नहीं करेगा।

जिससे वह प्रेम करती थी उसी पुरुष ने उसे दूर कर दिया।

दोनों की जीवन गाथा अंत में एक..... ही है?

मुझे देखकर शूर्पणखा पता नहीं क्या कहेगी?

क्रोध से बात नहीं करेगी शायद– फिर भी देखेंगे, शूर्पणखा को देखना है।

2 2 2

दूसरे दिन सवेरे काम समाप्त करके सीता को साथ लेकर लव कुश दोनों शूर्पणखा से मिलने के लिए निकल पड़े।

लव ने कहा ''माँ आज तुम्हें अपने राजा से मिलाऊँगा।''

अरण्य में स्वतंत्र घूमने वाला मस्त हाथी लव के वश में था। उसपर चढ़कर दोनों भाई अरण्य विहार करते थे।

''माँ...तुम राजा पर नहीं चढ़ोगी।'' लाड़ से पूछा लव ने।

''नहीं पुत्र, मुझे चलना ही अच्छा लगता है।'' कहा सीता ने। राज्य के गज पर विहार किए हुए दिनों को याद करते हुए।

दोनों भाइयों को लगा कि सीता को हाथी से डर लगता है। ''बेचारी माँ को हाथी पर चढ़ना कैसे आयेगा? डर भी लगेगा'' लव पर गुस्सा किया कुश ने।

अरण्य के अपने दोस्त जानवरों से माँ का परिचय कराते हुए आगे बढ़े। बच्चों की बातों में रास्ते की दूरी तथा थकान का पता ही नहीं चला सीता को।

''यही है माँ वह उद्यान वन।''

सीता रुक गयी। प्रकृति के मधुर रहस्य के समान उस उद्यान को देखकर शब्द नहीं निकले सीता के मुँह से। अशोक वन इसके आगे कुछ नहीं।

''धन्य है शूर्पणखा'' सीता ने सोचा।

''आओ माता अंदर चलें'' कहा बच्चों ने।

''मैं अकेली जाऊँगी, आप शाम तक जंगल में घूमकर आओ। मिलकर आश्रम जाएँगे।''

दूर से एक स्त्री दिखायी दी। वह दूसरी ओर मुड़ी हुई थी। आकार को देखकर सीता ने सोचा कि वह शूर्पणखा ही हो सकती है।

पास जाकर धीरे से सीता ने आवाज़ दी ''शूर्पणखा''

शूर्पणखा पलट कर देखी। उसने सीता को नहीं पहचाना। ''कौन हो माता आप? रास्ता भूलकर आयी हो क्या? मेरा नाम कैसे जानती हो?''

''रास्ता नहीं भूली शूर्पणखा - रास्ता ढूँढ़ते हुए आयी हूँ। मैं सीता हूँ।''

शूर्पणखा कुछ नहीं कह पायी।

सीता, यही है सीता। कितनी बदल गयी है। गहनों से लदी हुई सीता को वह जानती थी। वह भी अधिक समय तक नहीं देखा था।

रावण का संहार कर आर्य साम्राज्य

को दक्षिण पथ तक विस्तार करने वाले साक्षात चक्रवर्ती श्री रामचन्द्र की पटरानी सीता यही है? शूर्पणखा को विश्वास नहीं हो रहा था। यह नार की साड़ी क्या है, यह फूलों से बने हुए गहने? धूप से मुरझाई हुई सुनहरी काया? यही सीता है। राम की पत्नी सीता ही है?

''सीता -- (मतलब) यानि श्री रामचन्द्र की --'' शूर्पणखा को बीच में ही टोक दिया।

''मैं सीता हूँ। जनक की पुत्री जानकी, भूपुत्री'' कहा अभिमान एवं गर्व से।

''फिर श्रीराम'' शूर्पणखा के लिए यह सभी संदेहास्पद था।

''श्री राम ने मेरा परित्याग किया है, फिलवक़्त वाल्मीकि के आश्रम में रह रही हूँ।''

शूर्पणखा (कुछ नहीं कह पायी) श्री राम का सीता का परित्याग करना - सीता-राम के प्रेम के बारे में उसे कुछ कम मूल्य चुकाना नहीं पड़ा।

श्रीराम को चाहने वाली हर स्त्री को वेदना ही मिलेगी?

सीता के मुख पर शूर्पणखा को शांत गंभीरता के अतिरिक्त वेदना की छाया दिखायी दे रही थी।

सीता काफ़ी आगे निकल चुकी है। सोचा शूर्पणखा ने।

''कल मेरे बालकों ने तुम्हारा उद्यान देखा। तुम्हें देखा। आज वही मुझे यहाँ लेकर आये हैं। तुम्हारा उद्यान कितना सुंदर, हरा-भरा है'' मंद मुस्कान से कहा सीता ने।

शूर्पणखा ने कहा, ''वह बालक तुम्हारे कुमार हैं, कितने सुन्दर हैं।''

''हाँ इसीलिए इतना मनोहर है'' मान लिया सीता ने।

शूर्पणखा की आँखों में गर्व, गर्व की तरह ही आकर रुक गया।

''बताओ शूर्पणखा - तुम्हारा जीवन कैसा है?''

''यह हृदय, मन सुन्दरता एवं आनंद से भरा हुआ है।''

''मुझे ख़ुशी है शूर्पणखा। तुम्हारे साथ हुए अपमान के बाद एक सोच में पड़ गयी थी। पता नहीं तुम क्या हो जाओगी। तुम्हारी सौंदर्याकांक्षा मुझे पता है। अपनी कुरूपता को तुम बर्दाश्त कर पाओगी? बर्दाश्त न कर पाकर अपने आप को क्या कर लोगी? यह सोचकर, तुम्हारी याद आती थी।'' उसकी ओर देखने वाली उन आँखों में दया, प्रेम को देखकर पिघल गयी शूर्पणखा। उन दोनों के हृदय में स्नेह की कोमल भावना अंकुरित होने लगी। ''तुम धैर्यवान और साहसी हो'' कहा सीता ने।

''मुझे अभी इस हाल में देखकर यह मत सोचो सीता कि यह सब इतनी आसानी से हुआ होगा। जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना करते-करते कठोर बन गयी हूँ। सौंदर्य का अर्थ जानने में ही आनन्द का अनुभव खोज पायी हूँ।विरूपी होने के बाद आरंभ के दिनों में जीवन यापन करना ही दुर्लभ हो गया था। अपने ही चेहरे से घृणा होती थी, नफ़रत करती थी। वे दिन भी हैं जब अपनी जान लेने की कोशिश की थी मैंने।

मुझे सुन्दरता चाहिए। प्रेम चाहिए। इन दोनों के बिना मैं ज़िन्दा नहीं रह पाऊँगी। ऐसी मैं कुरूपी हो गयी। मेरे रूप पर मोहित होने वाले पुरुष भी मुझसे नफ़रत करने लगे थे।

सोचती थी कि अब जीवित क्यों रहूँ। वे दिन नरक के समान गुज़रते थे। मेरा मन हमेशा दर्द से, घृणा से जलता रहता था। राम को, उसके भाई को, तुम्हें कितने श्राप दिए, विष बरसाया। तुम्हारे लिए मेरे मन में लेश मात्र भी प्रेम न था, द्वेष ने मेरे मन में पूर्ण रूप से घर कर लिया था। सुन्दरता को पूजने वाली मैं हर सुन्दर चीज़ से घृणा करने लगी थी। मेरी सौंदर्याकांक्षा सुंदरियों के लिए जलन के रूप में बदल गयी।

''मैं चलती फिरती ज्वालामुखी बन गयी। दुख का महासागर हो गयी थी।''

दुख और दर्द से भरी हुई शूर्पणखा की यादों से दोनों के मन भारी होने लगे।

''इतने दर्द से कैसे बाहर निकल पायी शूर्पणखा''

''बहुत मुश्किलें उठानी पड़ीं। सौंदर्य के असली अर्थ को समझ पाना बहुत मुश्किल था। सौंदर्य से गर्वित। अपने आप को देखकर, अपनी सुंदरता को देखकर कितना गर्व करती थी मैं तुम्हें नहीं पता। तुम आर्यों की सीधी नाक मुझे अजीब सी लगती थी। विचित्रता में सुंदरता न हो ऐसा तो नहीं है न। मेरी नाक लम्बी नहीं नकटी भी नहीं थी। नाक कैसी भी हो उस ईश्वर ने सृष्टि के आरंभ में जिस तरह की नाक सोचा होगा वैसे ही थी मेरी नाक। इस पर मुझे बहुत गर्व था। हरे, सफ़ेद जंगल के फूलों का आभूषण बनाकर पहनती थी नाक के दोनों ओर तारों की तरह चमकने वाले। जब भी मेरा प्रेमी हलके से मेरी नाक को चूमता, मैं पुलकित हो जाती थी। ऐसी नाक को खो देने का दुख क्या होता है यह मेरे सिवा और किसी के समझ में नहीं आयेगा। उसे मैंने कितना सहा है। विरूपता के कारण विकृत विचारों का भार भी मैंने ढोया है। सभी को एक साथ विकृत कर देने का मन करता था।उस घृणा से बाहर निकलने के लिए, फिर सौंदर्य से, सुंदरता से प्रेम करने के लिए मुझे अपने आपसे महासंग्राम करना पड़ा। उस महायुद्ध में मेरी सहायता करने वाली यह अनन्त प्रकृति ही है। प्रकृति के लिए रूप कुरूप का कोई फ़र्क़ नहीं है। यह जानने के लिए मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ी। अनेक प्राणियों को बड़े ध्यान से जाना, प्राणहीन स्तब्ध जड़ पदार्थों के साथ-साथ प्राणवान वस्तुओं में विद्यमान एकरूपता को जाना। रंगों को जाना समझा। इस विषय में मेरा कोई गुरु नहीं था। मैंने अपने आप से साधना की है। प्रकृति के प्रत्येक कण को लेकर शोध किया। इस शोध ने मेरा दृष्टिकोण ही बदल दिया। मेरी आँखों को प्रत्येक वस्तु सुंदर लगने लगी। अपने आप के साथ हर वस्तु से घृणा करने वाली मैं, हर एक से प्रेम करने लगी। साथी पक्षियों से किसी कारणवश नोच-नोच कर पर निकालने वाला छोटा सा पक्षी मुझ में

जागृत करने वाला स्पंदन जितना प्रेमयुक्त है उतना ही सौंदर्यमय भी है। इसको ग्रहण करने के लिए, उस स्पंदन को पकड़ कर उसको समझने के लिए की गयी मेरी साधना सामान्य नहीं थी। लगातार अपने हाथों को प्रेम करना सिखाया। इतना सब कुछ होने के लिए दस वर्ष से अधिक समय लगा। दस साल की कठिन दीक्षा, श्रम के फल उगने के बाद इस उद्यान को सींचना शुरू किया।

अपने सत्य सौंदर्यमय जीवन की घटनाओं को सीता के समक्ष रखा सूर्पणखा ने।

"तुम कितनी सुंदर हो शूर्पणखा। तुम्हारी सुंदरता को कोई पुरुष नहीं जान सकता, न जानता हो लेकिन..." सीता का गला रुँध गया।

उनकी अग्निपरीक्षा के आगे शूर्पणखा के साथ जो हुआ वह अग्निपरीक्षा से कम नहीं था, यह सोचते ही सीता की आँखें अश्रुमय हो गयीं। शूर्पणखा ख़ुशी से बड़ी ही सुंदरता के साथ हँसने लगी।

"सिर्फ़ पुरुषों को ही आँखें नहीं होतीं? दिल नहीं होता? कुरूपी बनाने से उनसे घृणा करने से, इतनी जानकारी रखने वाले पुरुषों के बारे में ही नहीं।"

"मतलब" सीता के रुक जाने से उसका अभिप्राय समझ गयी।

"तुम्हारी कल्पना सच है सीता। मुझे एक पुरुष का साहचर्य मिला है। मेरे हाथों से प्रकृति में प्रवाहित होने वाले सौंदर्य को अपना कर, अपने आपको मुझे समर्पित करने वाला सौभाग्यशाली कहते हुए शूर्पणखा ज़ोर से 'सुधीरा' कहकर आवाज़ देती है। सुधीरा नाम को सार्थक करने वाला आजान बाहु युवक वहाँ पर आया। "यह है सीता"

सुधीरा ने आदर के साथ नमस्कार किया। "सीता को तुम्हें दिखाने के लिए बुलाया।"

उसकी बात सुनने के बाद सुधीरा वापस चला गया। उस छोटी सी घटना के बाद किसी भी स्त्री पुरुष के बीच उसकी जानकारी के अनुसार जो बंधन होता है, ऐसा बंधन इन दोनों के बीच होगा ऐसा नहीं लगा सीता को।

"तुमने अपने जीवन को सफल बना लिया..."

"सफलता का अर्थ पुरुषों के साहचर्य में नहीं है। इस बात को ग्रहण करने के बाद ही मुझे इस पुरुष का साहचर्य मिला है।"

सीता शूर्पणखा की बातें ध्यान से सुन रही थी। कोई बौद्धिक शालीनता, गंभीरता उसकी बातों में थी। बार-बार उन्हें सुनने का मन करता था।

"सीता-तुम"

"कुमारों की परवरिश में ही मेरा जीवन सार्थक हो रहा है।"

"वही तुम्हारा जीवनादर्श है?"

"हाँ... मैं राम की पत्नी हूँ। पटरानी की तरह अपनी ज़िम्मेदारी निभा नहीं पायी। रामराज्य को उसके उत्तराधिकारियों को तो देना ही होगा न।"

"कभी राज्य में नहीं रही फिर भी तुम्हारा जीवन किस तरह राज्य से बंधा हुआ है न सीता।"

"राजा की पत्नी होने के कारण यह सब आवश्यक है न।" हँसने लगी सीता।

"पता नहीं क्यों मुझे पहले से ही राज्य से भय लगता है। मेरे भ्राता के कितना कहने पर भी लंका नगर में नहीं रहा करती थी। अरण्य विहार में जो ख़ुशी है, वह कहीं नहीं मिलती।"

"मुझे अरण्य में रहना ही अच्छा लगता है। राम के परित्याग करने पर इस अरण्य ने ही मेरे दुख कम किए हैं।" बातों में समय कब बीत गया पता ही नहीं चला।

"मेरे कुमारों को यह नहीं पता कि वे राम के लड़के हैं। मैंने नहीं बताया। समय आने पर पता चल जाएगा।"

"पता चलने के बाद क्या वह इस अरण्य में क्षण भर के लिए भी रह पायेंगे?" शूर्पणखा ने सीता की ओर दीनता से देखा।

"उन्हें भी जंगल में रहना अच्छा लगता है।" कमज़ोर पड़ती आवाज़ से सीता ने कहा।

"उन्हें अच्छा लगता हो लेकिन राज्य को जंगल अच्छा लगेगा क्या? नगरों की अभिवृद्धि के लिए, नागरिकों की रक्षा के लिए अरण्य पुत्रों को जाना ही होगा शायद।" सीता जानती है कि यह ज़रूरी है।

"तब क्या करोगी, अकेले वाल्मीकि के आश्रम में रह जाओगी?"

"नहीं शूर्पणखा! अपनी माता भू देवी के आश्रय में रह जाऊँगी।"

"तुम्हारी माता कहाँ नहीं है सीता -- तो फिर मुझे लगता है कि तुम्हारी माता का इससे सुंदर रूप और कहीं नहीं होगा।" गर्व से पूरे उद्यान पर नज़र दौड़ाते हुए कहा शूर्पणखा ने। शूर्पणखा का उद्देश्य भाप गयी सीता और हँसने लगी। उस अकारण आदर से सीता का मन भर आया। एक बहन होने का भाव मन में उभरा। "ज़रूर आऊँगी शूर्पणखा। मेरे बच्चे मुझे छोड़कर जब नगर चले जाएँगे उसके बाद मैं भू पुत्री हो जाऊँगी। इस शीतल तरु की छाया में आराम से इस जीवन को एक नया अर्थ दूँगी।

बच्चों के आ जाने से उनके वार्तालाप में रुकावट आ गयी। शूर्पणखा ने दोनों को मीठे फल दिए। वह उन फलों को खाने लगे।

"कौन है माता वह" बच्चों ने बीच रास्ते में माता से पूछा।

"मेरी बहुत प्रिय और आत्मीय है वह"

"फिर हमें कभी नहीं बताया"

"समय आने पर सब कुछ पता चल जायेगा, लेकिन इस अरण्य में इस उद्यान वन का रास्ता कभी मत भूलना। तुम कहीं भी जाओ, कुछ भी करो। यह रास्ता मत भूलना। नहीं भूलोगे न।"

"नहीं भूलेंगे माता" माँ से वादा किया लव कुश ने।

अनुवाद : डॉ. साबिरा

सम्पर्क (अनुवादक) : बी-3 टीचर्स कालोनी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद-211002, मो. 9848711684 ई-मेल : sabirahcu@gmail.com,

चाय, चमचा और चुटकी नमक

कहते हैं कि अगर आपकी चाय में नमक पड़ जाए तो या तो आप बहुत बड़े नेता बनने वाले हैं, या फिर किसी ने आपके जीवन की मिठास में सेंध लगा दी है। मेरे मोहल्ले के शशिकांत जी ने दोनों कर डाले - नेता भी बन गए और मोहल्ले की बहुओं की आँखों से गंगाजल भी बहवा दिया। वो जब सुबह-सुबह अपनी बीवी को 'गुड मॉर्निंग' कहते थे तो बीवी नमकदानी फेंक देती थी - 'तुमसे तो गुडनाइट ही बेहतर है।' मोहल्ले में कोई मरता, तो शशिकांत जी सांत्वना देने से पहले पूछते, 'मौत अचानक हुई या रूटीन की?' उनके चेहरे पर हमेशा एक स्थायी व्यंग्य होता - मानो जिंदगी को उन्होंने ईएमआई पर ले रखा हो।

पिछले महीने उन्होंने समाज सेवा का नया स्टार्टअप खोला- 'चाय विद चुटकी'। उद्देश्य था- 'एक कप में समाज की सारी समस्याओं को घोलना और फिर उसे गर्मागरम परोस देना।' लेकिन पहले ही दिन समस्या घुल नहीं पाई, चाय में नमक घुल गया। वो चाय पीने वालों से बोले, 'भाइयों और बहनों, यह चाय नहीं, व्यवस्था का घड़ा है - पी जाओ, तभी तो सुधार होगा।' लोगों ने पिया... और उल्टी भी की। पर शशिकांत जी मुस्कराए- 'क्रांति ऐसे ही होती है।'

हर मोहल्ले में एक चमचा होता है। पर शशिकांत जी के यहाँ तो चमचों की पूरी पंचायत थी- रामलाल, जमुना प्रसाद, और विमलेश। ये लोग हर बात पर ताली बजाते- 'वाह साहब! आपने तो गधे को भी घोड़ा बना दिया!' शशिकांत जी मुस्कराते, 'सही पकड़े हैं।' उन्होंने हर समस्या का हल चाय में ढूंढा - बेरोजगारी? एक चाय दो, नौकरी लग जाएगी। गड्ढों वाली सड़क? चाय पर चर्चा कर लो, सड़क तो न बदलेगी, मन जरूर बदल जाएगा। एक बार तो उन्होंने कहा - 'जीडीपी गिर रही है? कोई बात नहीं, कप तो उठ रहा है न?' और पूरा मोहल्ला हँसते-हँसते रो पड़ा।

घर में शशिकांत जी के बच्चे उन्हें 'पापा' नहीं, 'पब्लिक स्पीकर' कहते थे। जब भी उनकी बेटी उनसे नए जूते मांगती, वो कहते- 'बेटी, असली सुंदरता आत्मा की होती है, पैर की नहीं।' बेटे ने एक बार कहा, 'पापा, स्कूल में सब मेरा मज़ाक उड़ाते हैं।' जवाब मिला - 'तो क्या हुआ? मैं भी नेता बना हूं, मेरा भी मज़ाक उड़ता है, फिर भी जनता मुझे वोट देती है।' घर की रसोई में नमक खत्म हो जाए, तो शशिकांत जी कहते - 'चलो बेटा, समाज को सुधारने चले चलते हैं, वापसी में नमक भी ले आएंगे।'

उनकी पत्नी- गीता देवी- अब तक तो भगवद्गीता की भी सारी शिक्षाएँ भूल चुकी थीं। कहती थीं, 'जैसे कृष्ण ने अर्जुन को समझाया, वैसे ही मैं भी हर रोज इन्हें समझाती हूं- लेकिन ये महाभारत तो क्या, महाअव्यवस्था रचकर ही दम लेते हैं।' एक दिन गीता देवी ने गुस्से में कहा, 'अब बस! या तो तुम, या चाय की दुकान।' शशिकांत जी बोले- 'तो फिर मैं चाय को चुनता हूं।' और मोहल्ले में पहली बार तालियाँ नहीं, सिसकियाँ सुनाई दीं।

उनकी दुकान पर रोज़ नए-नए नारे लगते- 'देश बदलेगा, जब चाय उबलेगा!' लेकिन धीरे-धीरे उनकी चाय में न नशा रहा, न चर्चा। ग्राहक कम हुए, और व्यंग्य ज्यादा। लोग कहते- 'शशिकांत जी की चाय पीने से पेट तो नहीं भरता, पर दुख जरूर उबल जाता है।'

एक दिन एक बूढ़ी अम्मा आईं, चाय पी और बोलीं- 'बेटा, यह चाय नहीं, यह तो मेरी बुढ़ापे की दवा बन गई है।' और वहीं कुर्सी पर बैठकर रो पड़ीं। शशिकांत जी ने उन्हें देखा और पहली बार उनकी आँखों में व्यंग्य नहीं, पानी था।

समाज सुधारते-सुधारते शशिकांत जी अब खुद समाज की चाय बन चुके थे- जिसे कोई पीता नहीं, सिर्फ छोड़ देता है। एक दिन दुकान बंद मिली। दरवाज़े पर लिखा था- 'अब न चाय बचेगी, न चुटकी नमक। समाज में सब कुछ नमकीन है, पर दिल अब बेस्वाद हो चुका है।' मोहल्ला ठहरा, लोग ठिठके- और पहली बार, उनकी गैर-मौजूदगी में शोर नहीं, सन्नाटा था।

शशिकांत जी अब नहीं हैं। कहते हैं, अंतिम समय में उन्होंने कहा - 'मेरी अस्थियाँ किसी सरकारी गड्ढे में बहा देना... कम से कम वहाँ कुछ भराव तो होगा।' मोहल्ले में उनकी याद में एक पत्थर रखा गया - उस पर लिखा है - 'यहाँ वो आदमी बैठता था, जो समाज को चाय के प्याले में घोलकर पी जाना चाहता था।'

हर शाम अब वहाँ लोग चुपचाप बैठते हैं- बिना चाय, बिना नमक - पर आँखों में नमी, और दिल में 'उरतृप्त' पीड़ा लिए हुए।

- डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'

समकालीन नवगीत /कविताएँ

जयप्रकाश श्रीवास्तव

भोर के उजाले

फूलकी हथेली पर
ओस के निवाले,
चिड़ियों की चोंचों में
भोर के उजाले।

कहाँ जाए नागफनी
दुख लेकर मौसम,
ऋतु बावली नाचे
हवाओं के परचम,

आलस के मनसूबे,
फेंककर दुशाले।

नदी नहाकर निकली
रेत के घरोंदे,
घाट पर खड़ी बिजली
रह रहकर कोंधे,

लहरों की चंचलता,
नाव के हवाले।

शब्द-शब्द जपता मन
मंत्र बाँचता दिन,
टूट गया सन्नाटा
तम मरता पल-छिन,

सूर्य किरन ने गाए
गीत धूप वाले।

जंगल के बीच

नैसर्गिक लगें
आओ चलो
जंगल के बीच में चलें।

निर्मलमन झरने
नदियों के गहने
आदमी के रूप
वृक्षों ने पहने

आओ वहीं
बनकर हिमखंड से गलें।

वेद की ऋचाएँ
पढ़रही हवाएँ
रोज नया दर्शन
खोलती दिशाएँ

आओ किसी
यज्ञ की समिधा से जलें।

जंगलशाश्वत हैं
अक्षर हैं, अक्षत हैं
भीतर बाहर से
जगे अनवरत हैं

आओ हँसें
फूलों में गंध से खिलें।

रात उतरी है ज़मीं पर

कुछ कहो मत
चाँद लेकर
रात उतरी है ज़मीं पर।

बैठकर चुपचाप
सन्नाटा बुनो
खोलदो सब खिड़कियाँ
आँगनों छत पर
चाँदनी तानो
सितारों की पन्नियाँ
लिखो स्वागत
द्वार मन के
प्रीति मुस्काई कहीं पर।

अर्थ वाले सपन
आँखों में भरो
तोड़कर संधि समास
मौन से हटकर
ज़रा वाचालबन
क्रियाओं से जोड़ आस
धड़कनों से
बाँध धड़कन
गीत गाओ चाँदनी पर।

साफ सुथरी नदी
घाटों तक बिछी
पालनावों के खुले
बाँध जूड़ा हवा
बैठी सुगंध के
फूललहरों से धुले
उम्र बाँधो
धार के सँग
रचो कविता आदमी पर।

आई.सी.5 सैनिक सोसायटी शक्तिनगर
जबलपुर 482001 मो.7869193927

taste king ™
Mint House, Nadesar, Varanasi

विनय मिश्र की तीन ग़ज़लें

(1)

दूसरों को देखने की मुझको आदत ही नहीं
जो नहीं हूँ वो मुझे होने की चाहत ही नहीं

यह समय रोबोट का है यह समय ए.आइ. का
इस समय को आदमी की अब ज़रूरत ही नहीं

कितने सपने सच हुए हैं कितने सपने मर चुके
आज तक इस पर लगी कोई अदालत ही नहीं

जाल फैलाए हुए बाज़ार हैं चारों तरफ
लोग राहत चाहते हैं और राहत ही नहीं

झूठ का परचम यहाँ लहरा रहा है शान से
पर यहाँ सच के लिए दिलमें बगावत ही नहीं

आँसुओं में बह गई उम्मीद तिनके की तरह
हैं यहाँ कुछ लोग जिनको फिर भी हैरत ही नहीं

मेरे मन में रोज झरते हैं दुखों के हरसिंगार
इसलिए ही खुशबुओं का मन में स्वागत ही नहीं

(2)

सब कुछ बिखर गया है सँवारा नहीं गया
अपना ही बोझ सिर से उतारा नहीं गया

उस घर से कितनी यादें जुड़ी हैं मैं क्या कहूँ
जिस घर में लौटकर मैं दुबारा नहीं गया

अपने दुखों की राख से जनमा हूँ बार-बार
लपटों के हाथ मैं कभी मारा नहीं गया

कुछ भीगे पल रहे हैं हमेशा हमारे साथ
मौसम हमारी आँखों का खारा नहीं गया

माना बहुत है सस्ता ये सौदा ज़मीर का
जीते जी मुझसे मौत से हारा नहीं गया

गर्माहटें नहीं तो भी दिल के अलाव से
बुझती उदासियों का सहारा नहीं गया

होने लगी जो भोर तो ग़ज़लों की दी चहक
हालात से मैं करके किनारा नहीं गया

(3)

यहाँ एक खूब़ी ग़ज़ब रंग में है
कोई रात काली ग़ज़ब रंग में है

चिताओं से पहले यहाँ गिद्ध पहुँचें
ये मुर्दों की बस्ती ग़ज़ब रंग में है

अभी गुलमोहर थी अभी है चमेली
ये मन की उदासी ग़ज़ब रंग में है

अभी बात पूरी कहाँ हो गई है
अभी बात आधी ग़ज़ब रंग में है

जो बैठा है पत्थर हुआ दो मिनट में
ये लकड़ी की कुर्सी ग़ज़ब रंग में है

हथेली पे' मलते ही चढ़ती मगज़ पर
हथेली की खैनी ग़ज़ब रंग में है

कहाँ कोई जीवन की आहट है मन में
यहाँ मौत दिखती ग़ज़ब रंग में है

बी 27/64 सी एण्ड डी, दुर्गाकुंड
आनंद पार्क के सामने, वाराणसी
मो.9414810083

प्रशांक चंद्रा की गजलें

ग़ज़ल -1

बारहा आज़माये जाने से
दिल परेशाँ है इस ज़माने से

अब कमी तेरी खाए जाती है
पहले ख़ुश था मैं तेरे जाने से

वार उसका अचूक था मुझ पर
तीर ख़ुद हट गया निशाने से

याद करते हैं उसको अब भी हम
पर किसी हीले से बहाने से

उम्र ने दिल में गर्द भर दी है
ये हटेगी नहीं हटाने से

ये यक़ीनन किसी का होगा फिर
पहले दिल आ तो ले ठिकाने से

ग़ज़ल -2

इन्साँ को पहचाना कर
सबको मत बेगाना कर

वो तेरा हो जाएगा
थोड़ा आना - जाना कर

माना, उससे अनबन है
बंद न हाथ मिलाना कर

जिसने छोड़ा, लौटेगा
अपने साथ ज़माना कर

दीन-धरम तू जो भी कह
एक मगर पैमाना कर

इश्क़ नहीं जो कर पाया
खाना और कमाना कर

डी2-6/6
एनटीपीसी बाढ़
टाउनशिप
बाढ़, पटना
(बिहार) 803215

‘चौथी का जोड़ा’ एक आलोचनात्मक समीक्षा

–ख़्वाजा अहमद अब्बास

‘कहानी’ एक सृजनात्मक साहित्य की विधा है। चाहे चिड़वे-चिड़िया की कहानी हो या एक परी और शहज़ादे की कहानी हो या लैला-मजनूँ, हीर-राँझा या रोमियो-जूलियट की दास्ताँ-ए-इश्क़ हो। मगर आज के ज़माने में और आजकलके समाज में कुछ ऐसी कहानियों की ज़रूरत है और ऐसी कहानियाँ होती भी हैं, जो समाज को खुलकर नंगा कर देती हैं। इस्मत चुग़ताई जिन्हें हम सब इस्मत आपा कहते हैं, चाहे उनसे छोटे हों या उनसे बड़े हों। वो समाज की न सिर्फ़ खालउतार लेती हैं, बल्कि सर्दी के ज़माने में समाज के ऊपर से लिहाफ़ भी घसीट लेती हैं। ताकि हम सबको अपने समाज के शक्लसूरत नज़र आ सकें। उसकी नंगी असलियत बे-नक़ाब हो जाए। ये हिम्मत कम अदीबों में होती है। वही इस हिम्मत का इस्तेमालकरते हैं, जिनकी सामाजिक चेतना जागी हुई होती है। जो असली और नकली किरदारों में फ़र्क कर सकते हैं। कौन नक़ाब पहने हुए है ? कौन अपने बदसूरत चेहरे को रेशमी रूमालसे छुपाये हुए है ? और कौन–सा बदनसीब अपने ज़ख़्मों के ऊपर पट्टियाँ लपेटे हुए है ? कौन अपने सामाजिक ज़ख़्मों की सड़ांध को छुपाने के लिए इत्र और सेंट का इस्तेमालकरता है। इसलिए कुछ कहानियाँ समाज के अंदर की गहराई में जाकर मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और आर्थिक उलझनों को व्यक्त करती हैं। ऐसी ही एक कहानी इस्मत आपा ने आज से कोई पन्द्रह-बीस बरस पहले लिखी थी। मगर इतनी ख़ूबसूरत और मज़बूत थी ये कहानी कि आज तक मैं उसके असर से आज़ाद नहीं हो सका। अगर मुझसे पूछा जाए कि उर्दू ज़बान में कौन सी बेहतरीन कहानियाँ हैं ? तो मैं बिला झिझक ‘चौथी का जोड़ा’ का चयन उन कहानियों में करूँगा। ‘लिहाफ़’ अगरचे हमारे सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कमज़ोरियों को दिलेरी से बे-नक़ाब करती है, मगर चरित्र चित्रण में इतनी ख़ूबसूरत नहीं थी। जितनी ‘चौथी का जोड़ा’ में है।

‘चौथी का जोड़ा’ हमारे समाज की एक ट्रेजडी है। निचले मध्यमवर्ग की एक कहानी है। जिसमें ‘चौथी का जोड़ा’ को एक निशानी, एक प्रतीक के तौर पर इस्तेमालकिया गया है। ये सिम्बलहै, उन लड़कियों का जो अपनी खा़नदानी ग़रीबी की वजह से बिन ब्याही रह जाती हैं। मगर इतनी कलात्मक ख़ूबसूरती से ये कहानी बयान की गई है, ऐसे ख़ूबसूरत और प्रतीकात्मक अल्फ़ाज़ में कि आपको पता भी नहीं चलता है कि इतने बड़ी सामाजिक त्रासदी को बयान कर रही है। कहानी के शुरू ही से लेखिका ने अपने अल्फ़ाज़ के जादू से माहौलऔर किरदार को ऐसी ख़ूबसूरती से अदा किया है कि ये कहना ही नहीं पड़ता कि ये खा़नदान, ये परिवार ग़रीबी का मारा हुआ है। मगर कभी उनकी हालत अच्छी भी थी, मगर वो सब अतीत में खो गई है। ये है कहानी का पहला पैराग्राफ़, जो कहानी की जुबान बताता है,

‘‘काली दरी के तख़्त पर आज साफ़-सुथरी जाज़म (कालीन पर फैला हुआ लिनन का कपड़ा) बिछी हुई थी। टूटी हुई खपरैलकी झिर्रियों में से आड़ी-तिरछी जालियाँ पूरे दालान में बिखरी हुई थीं। मुहल्ले, पड़ोस की औरतें खा़मोश और सहमी हुई बैठी हुई थीं। जैसे कोई बड़ा हादसा होने वाला हो। माँओं ने बच्चे छातियों से निकाललिए थे। कभी-कभी कोई बड़ा, दुबला, पतला-सा चिड़चिड़ा बच्चा खाने की कमी की दुहाई देकर झल्ला उठता। आज कितनी आस भरी निगाहें कुबरा की माँ के फ़िक्र में डूबे हुए चेहरे को तक रही थीं। छोटे अरज़ की टोलके दो पाट तो जोड़ दिए गए थे, मगर अभी सफ़ेद मोटे सस्ते कपड़े के निशान काँट-छाँट करने की किसी की हिम्मत न पड़ी थी, काँट-छाँट के मामले में कुबरा की माँ का बहुत ऊँचा मुक़ाम था। उनके सूखे-सूखे हाथों ने न जाने कितने दहेज सॅंवारे थे। कितने माँ और बच्चे के जोड़े तैयार किए थे। कितने कफ़न काट-छाँट किए थे।’’

देखा आपने कि पहले ही पैराग्राफ़ में माहौलभी बयान कर दिया और किरदारों का भी ज़िक्र कर दिया। और कफ़न का नाम लेकर जो त्रासदी घर में होने वाली है, उसके लिए भी भविष्यवाणी पहले से कर दी। अच्छे अफ़साने की यही तारीफ़ है कि अफ़साने के समापन तक जो होने वाला है, उसकी पहले ही नींव डालदी जाए। ताकि क्लाइमैक्स तक पहुँचते-पहुँचते पढ़नेवाले का जेहन उसके लिए तैयार हो जाए। किरदार कितने जीते-जागते और अस्लहैं। जैसे आपने अपने मुहल्ले-पड़ोस में देखे या सुने होंगे। एक ‘बी अम्माँ’ हैं, जो बूढ़ी हैं। जिनके चेहरे पर पड़ी झुर्री कितनी ही कहानियाँ बयान करती हैं। एक उनकी बड़ी लड़की ‘कुबरा’ है, जो ‘बी आपा’ कहलाती है। जो बड़ी उम्र के बावजूद अब तक गैऱ शादीशुदा है। एक उसकी छोटी बहन ‘हमीदा’ है, जिसकी उम्र अब जवानी

में क़दम धर रही है। मगर असलकिरदार 'राहत भाई' का है, जो इस त्रासदी का केन्द्रीय किरदार है। जो उन लड़कियों का रिश्ते का मामूँ-ज़ाद भाई है। जो कोई ख़ूबसूरत हीरो नहीं है। न ही बदसूरत फ़िल्मी विलेन है। मामूली शक्ल-ओ-सूरत का नौजवान है। वो जब पुलिस की ट्रेनिंग के सिलसिले में आकर उस घर में ठहरता है, तो लगता है कि 'बी अम्माँ' को लड़का मिलगया है। उसकी ख़ातिर तवाज़ो बहुत ज़्यादा की जाती है। रोज़ पानी का गिलास पीकर 'कुबरा' उसके लिए परांठे और दूध की मलाई का नाश्ता तैयार करती है। जो छोटी बहन 'हमीदा' उस तक पहुँचाती है। 'दूल्हाभाई' से जो रिवायती मज़ाक़ किए जाते हैं, वो सब होते हैं। घी के कबाब खिलाए जाते हैं। 'बी अम्माँ' की ख़्वाहिश है कि किसी तरह लड़का 'कुबरा' को पसंद कर ले। लेकिन पर्दे का रिवाज भी सख़्त है।

'बी अम्माँ' गर्व-से कहती हैं कि ''मेरी लड़की की किसी ने आज तक परछाईं भी नहीं देखी।''

'कुबरा' ख़ुद रूमानी उम्र से निकलचुकी है। रात-दिन चूल्हे में झुकी रहती है। मगर राहत के लिए एक स्वेटर बुनती है। और हमीदा के हाथ उसको भेजती है, मगर कह देती है कि

''ये मत कहना कि मैंने बनाया है।''

जब हमीदा राहत को स्वेटर देती है, तो वो पूछता है, (अब मैं कहानी में से पढ़रहा हूँ।)

''क्या स्वेटर आपने बनाया है ?''

''नहीं तो !'' वो जवाब देती है।

''तो हम नहीं लेंगे।''

मेरा जी चाहा (हमीदा सोचती है) कि उसका मुँह नोच लूँ। कमीने, मिट्टी के टीले। ये स्वेटर हाथों ने बनाया है, जो जीते-जागते ग़ुलाम हैं। उसके एक-एक फंदे में नसीबों जली के अरमानों की गर्दन फंसी हुई है। ये उन हाथों का बना हुआ है, जो पालना झुलाने के लिए पैदा हुए हैं। टूटे बटन लगाने के लिए और फटा हुआ दामन रफ़ू.करने के लिए बनाये गए हैं। उनको थाम ले गधे कहीं के। और ये दो पतवार बड़े से बड़े तूफ़ान के थपेड़ों से तुम्हारी ज़िंदगी की नाव को बचा कर पार लगा देंगे। ये सितार के गीत ना बजा सकेंगे। मणिपुरी और भारतनाट्यम के मुद्रा ना दिखा सकेंगे। उन्हें पियानो पर नृत्य करना नहीं सिखाया गया। उन्हें फूलों से खेलना नहीं नसीब हुआ। मगर ये हाथ तुम्हारे जिस्म पर चर्बी चढ़ाने के लिए सुबह से शाम तक सिलाई करते हैं। साबुन और सोडे में डुबकियाँ लगाते हैं। चूल्हे की आँच सहते हैं।''

कितनी अच्छी तारीफ़ की है, एक ग़रीब लड़की की। मेहनत-कश हाथों की। जो सरदार जाफ़री की नज़्म 'हाथों का तराना' की याद दिलाती है।

इन हाथों की ताज़ीम करो
इन हाथों की तकरीम करो।

मगर राहत को काम करनेवाले हाथों की ज़रूरत नहीं है। जो विलेन नहीं है, मगर हीरो भी नहीं है। मामूली समझ-बूझ का आदमी है। इसलिए जब उसे मौक़ा मिलता है, तो 'बी अम्माँ' जब उसे आराम करने के लिए मौला अली के कूंडों का मलीदा उसको छोटी बेटी 'हमीदा' के हाथ भेजती है, तो वो बेचारी सोचती है। (मैं फिर इस्मत आपा के अल्फ़ाज़ दोहरा रहा हूँ।)

''जैसे वो साँप की बाबनी में घुस आई हो और फिर पहाड़ खिसका। राहत ने मुँह खोलदिया। वो फ़ौरन पीछे हट गई। मगर कहीं दूर बरात की शहनाइयों ने चीख मारी। जैसे कोई उसका गला घोंट रहा हो। काँपते हाथों से पाक मलीदे का निवाला बनाकर, उसने राहत की मुँह की तरफ़ बढ़ा दिया। एक झटके से उसका हाथ पहाड़ की खोह में डूबता चला गया। नीचे बहुत नीचे अंधेरे की अथाह गुफा की गहराइयों में और एक बड़ी-सी चट्टान ने उसकी चीख का गला घोंट दिया। नियाज़ के मलीदे की थाली हाथ से छूटकर लालटेन के ऊपर गिरी। लालटेन ने ज़मीन पर गिर कर दो-चार सिसकियाँ भरीं। और गुलहो गई। और फिर सुबह की गाड़ी से 'राहत' छह महीने की मेहमान-नवाज़ी का शुक्रिया अदा करता हुआ रवाना हो गया। अपनी शादी और कहीं करने के लिए। उसके बाद उस घर में परांठे न पके, अंडे न तले गए। और स्वेटर न बुने गए। तपेदिक जो एक अरसे से कुबरा की ताक में भागी-भागी चली आ रही थी, एक ही छलॉंग में उसे दबोच बैठी और उसने अपना अभागा बदन उसकी गोद में सौंप दिया। और फिर उसी काली दरी में चौकी पर साफ़-सुथरी जाज़म बिछाई गई। मुहल्ले की बहू-बेटियाँ जमा हुईं। कफ़न का सफ़ेद लट्ठा मौत के आँचलकी तरह 'बी अम्माँ' के सामने फैलाया गया। कफ़न के लट्ठे की कान निकालकर उन्होंने चोहरा तह किया। और उनके दिलपर अनगिनत कैंचियाँ चलगईं। आज उनके चेहरे पर शांति और मौत भरा इत्मिनान था। जैसे उन्हें पक्का यक़ीन हो कि और जोड़ों की तरह चौथी का ये जोड़ा कभी खराब नहीं होगा।''

कहानी खत्म हो जाती है। मगर ये कहानी कभी खत्म होनेवाली नहीं है। इसलिए कि इसमें एक लड़की की वंचनाओं का बयान नहीं है। एक पूरी नस्लकी ये त्रासदी है। कितनी कुँवारियाँ इंतज़ार कर रही हैं कि कोई दूल्हा एक दिन आएगा और उनको ब्याह कर ले जाएगा। मगर ग़रीबी उनके अरमानों का गला घोंट देती है। समाज उनके दर्द को न समझता है, न दूर करने की कोशिश करता है। यहाँ तक कि मौत का दूल्हा उनको कफ़न का 'चौथी का जोड़ा' पहनाकर ले जाता है।

(उर्दू से हिन्दी लिप्यंतरण :
जाहिद खान और इशरत ग्वालियरी।)

महलकॉलोनी, शिवपुरी–473551 (म.प्र.)
मोबाइलः 94254 89944

बखरी से होटल तक आंगन की ढलती परछाइयाँ

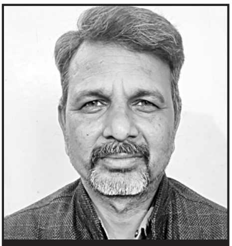
महेंद्र प्रसाद गांधी

नब्बे के दशक तक जब संयुक्त परिवारों का जमाना था, तब 'बखरी' शब्द केवल मकानों के समूह का नाम नहीं था, बल्कि एक जीवंत संस्कृति का प्रतीक था। बखरी का हृदय होता था उसका आंगन – विशाल, खुला और सभी पारिवारिक गतिविधियों का केंद्र। आंगन में बच्चों की किलकारियाँ गूँजती थीं, बुजुर्गों की चौपाल सजती थी और सबसे बड़ी बात, शादी-ब्याह जैसे मांगलिक आयोजनों का मंच वही आंगन बनता था।

आंगन की अपनी सामाजिक महत्ता थी। घर के आंगन का आकार और साज-सज्जा परिवार की प्रतिष्ठा का दर्पण माना जाता था। विवाह समारोहों में पूरा गांव जुटता, मंगलगीत गाए जाते, रस्में निभाई जातीं। पूरा वातावरण पारिवारिक सौहार्द और सामूहिकता से सराबोर रहता था। बारात किसी के घर में नहीं गांव में आ रही है इसकी खुशामद, सेवा सत्कार गांव की जिम्मेदारी होती थी, सामूहिकता का यह जीवंत उदाहरण था। शादी विवाह एक रस्म अदायगी नहीं, आत्मीय मिलन था। बारातियों की इक्षा जब तक बारात रोकें रहें उनके स्वागत में कोई कमी नहीं। द्वारपूजा से मड़वा मिलनी तक की रस्म अदायगी में भी तीन दिन तो कम से कम लग ही जाते थे।

90 के दशक में जैसे-जैसे शहरीकरण का प्रभाव गाँवों तक पहुँचा, जीवनशैली में परिवर्तन आने लगा। बखरी सिमटने लगी। बड़े आंगन बरामदों में तब्दील हो गए। फिर

भी, विवाह के अवसर पर यह छोटा आंगन ही परिवार के सभी रस्मों का साक्षी बनता था। चारों तरफ बरामदे में बैठकर महिलाएँ गीत गातीं, पुरुष पंडाल सजाते और बच्चे रस्मों में भाग लेते थे।

परन्तु वर्ष 2005 के बाद से परिदृश्य ने तेज़ी से करवट ली। मध्यवर्गीय परिवारों ने पारंपरिक आंगन को छोड़, शादी-ब्याह के लिए लॉन और होटलों को प्राथमिकता देनी शुरू कर दी। अब वैवाहिक आयोजनों का केंद्र होटल बन गया, जहां व्यवस्था तो भव्य हो जाती है मगर वह आत्मीयता और अपनापन खोने लगा जो आंगन की मिट्टी से उपजता था।

आज शादी-ब्याह में माड़ो गाड़े तो जाते हैं, पोखर से मिट्टी लाने की रस्म निभाई जाती है, लेकिन सिल-बट्टा, ओखरी-मूसर, हरीश जैसे परंपरागत घरेलू उपकरण अब बाजार से प्रतीकात्मक रूप में खरीदे जाते हैं। सब कुछ औपचारिक हो गया है। लान संस्कृति ने संस्कार, सामाजिक एकजुटता, पारिवारिक परिवेश सब कुछ छीन लिया।

। शहरीकरण का यह प्रभाव अब गॉवों को आगोश में ले लिया है। लान भी अब कस्बे कस्बे में खुल गये हैं। कोई शादी ब्याह अब घर से नहीं करना चाहता। इसके पीछे स्टेटस सिंबल भी एक कारण है।

वह अपनापन, वह मेहनत, वह सामूहिकता सबकुछ अब एक औपचारिकता में सिमट गया है। रस्मों में संस्कार, संस्कृति, सभ्यता धार्मिकता छिपी होती थी,इसी से पारिवारिक परिवेश, एकता का संदेश जाता था। बदलते दौर की चमक तो हम देख रहे हैं मगर टूटता परिवार,बॅटता समाज, बिखरते गांव हमें दिखाई नहीं दे रहे हैं। सब कोइ एक रखने वाली वह कड़ी बखरी का आंगन आज बिखर गया है। पीढ़ियों की पहचान, पुरखों की धरोहर, अब बंट चुके हैं। इस अंधी दौड़ में हम कहां से कहां आ गए यह विचारणीय है। भावी पीढ़ी को हमने क्या दिया, जितना हमने पाया उससे अधिक खोया है।

शायद आधुनिकता की चमक के बीच, हमें उन पुराने आँगनों की आत्मा को भी सहेजने की ज़रूरत है ताकि आने वाली पीढ़ियाँ जान सकें कि उनका संस्कार किस मिट्टी से उपजा था।

डब्ल्यूसीएल द्वारा कार्यशाला आयोजित

वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (डब्ल्यूसीएल) द्वारा आज 'कोयला खनन में संसाधन नियोजन हेतु फॉरेस्ट क्लीयरेंस की महत्ता' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य कोयला खनन में फॉरेस्ट क्लीयरेंस अनुपालन को सुदृढ़ बनाना एवं खनन क्षेत्र में सतत विकास को प्रोत्साहित करना रहा।

इस कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डब्ल्यूसीएल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक जे. पी. द्विवेदी ने की। इस अवसर पर निदेशक (तकनीकी) संचालन अनिल कुमार सिंह, निदेशक (वित्त) बिक्रम घोष, मुख्य सतर्कता अधिकारी अजय मधुकर म्हेत्रे, महाराष्ट्र शासन के नोडल अधिकारी तथा पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (श्ईईण्) के वरिष्ठ अधिकारी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

अपने अध्यक्षीय भाषण में जे. पी. द्विवेदी ने कहा कि डब्ल्यूसीएल में फॉरेस्ट क्लीयरेंस केवल औपचारिकता नहीं बल्कि प्रकृति के साथ उत्तरदायी सह-अस्तित्व का संकल्प हैं। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण के प्रति डब्ल्यूसीएल की प्रतिबद्धता पर बल देते हुए कहा कि इस कार्यशाला के माध्यम से प्रतिभागियों को नियामक परिदृश्यों में कुशलतापूर्वक कार्य करने की जानकारी प्राप्त होगी जिससे वे वनों के संरक्षण की जिम्मेदारी भी बखूबी निभा सकेंगे।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में स्वागत भाषण डब्ल्यूसीएल के निदेशक (तकनीकी) संचालन अनिल कुमार सिंह ने तथा धन्यवाद ज्ञापन महाप्रबंधक (फॉरेस्ट) डॉ. एस. के. जेना ने प्रस्तुत किया। कार्यशाला में कोयला खदानों से संबंधित नीतिगत मुद्दे, खनन कार्य के लिए वन विभाग से मंजूरी प्राप्त करने की प्रक्रिया, कोयला खनन में लीनियर डायवर्सन प्रपोजल आदि विषयों पर सत्र आयोजित किए गए।

डब्ल्यूसीएल के वन विभाग द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में नीति निर्माताओं, पर्यावरण विशेषज्ञों और उद्योग प्रतिनिधियों ने फॉरेस्ट क्लीयरेंस प्रक्रियाओं पर विस्तार से विचार-विमर्श किया। कार्यशाला में नियामक विकास, प्रक्रिया दक्षता एवं पर्यावरण अनुकूल खनन पर विशेष बल दिया गया।

जनसंपर्क में उत्कृष्ट योगदान के लिए मिला पीआरएसआई पुरस्कार

पब्लिक रिलेशन सोसायटी ऑफ इंडिया (पीआरएसआई), रायपुर चैप्टर द्वारा राष्ट्रीय जनसंपर्क दिवस के अवसर पर एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बालको के जनसंपर्क अधिकारी विजय वाजपेयी को रामशंकर अग्निहोत्री स्मृति जनसंपर्क पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में जनसंपर्क और मीडिया क्षेत्र से जुड़ी कई प्रतिष्ठित हस्तियों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रशस्ति-पत्र और सम्मान प्रदान किए गए। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने इस अवसर पर जनसंपर्क दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए पुरस्कृत पीआर पेशेवरों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

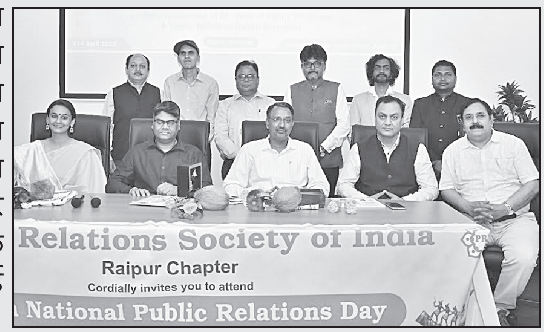

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए भारत एल्युमिनियम कंपनी लिमिटेड (बालको), कोरबा की पीआर हेड सुश्री सुची मिश्रा ने कहा कि हमें आधुनिक तकनीकियों का उपयोग करते हुए सत्य और वस्तुनिष्ठ जानकारी जनता तक पहुँचानी चाहिए। पीआर में सच्चाई और वास्तविकता बहुत आवश्यक हैं। जब हम तथ्यों पर आधारित कार्य करते हैं तो कठिनाइयाँ स्वतः दूर हो जाती हैं। उन्होंने यह भी कहा कि आज के दौर में तकनीक की गहरी समझ और नवीनतम ट्रेंड्स से अपडेट रहना हर जनसंपर्क अधिकारी के लिए जरूरी है। सूचना में सत्यता और रिपोर्टिंग यथासंभव तथ्यात्मक होनी चाहिए।

पीआरएसआई रायपुर के चेयरमेन डॉ. शाहिद अली ने स्वागत भाषण में छत्तीसगढ़ में जनसंपर्क सोसाइटी के विभिन्न आयोजनों और पुरस्कृत व्यक्तियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी। समारोह में पीआरएसआई रायपुर के सचिव डॉ. कुमार सिंह तोप्पा, कोषाध्यक्ष डॉ. दानेश्वरी संभाकर, अडानी ग्रुप के वाईस प्रेसिडेंट डॉ. प्रतीक पाण्डे, उप संचालक जनसंपर्क नसीम अहमद खान एवं सौरभ शर्मा तथा डॉ. कीर्ति सिसोदिया संपादक, मुकेश एस सिंह वरिष्ठ पत्रकार, सत्येश भट्ट जनसंपर्क अधिकारी सहित बड़ी संख्या में जनसंपर्क, पत्रकारिता एवं साहित्य जगत से जुड़ी हस्तियां मौजूद थे।

बीसीसीएल द्वारा 'नारी शक्ति से विकसित भारत' कार्यक्रम आयोजित

मुख्य अतिथि के तौर पर उपायुक्त धनबाद सुश्री माधवी मिश्रा कार्यक्रम में हुईं शामिल

वीमेन इन पब्लिक सेक्टर (विप्स) के तत्वाधान में उपायुक्त धनबाद सुश्री माधवी मिश्रा की अध्यक्षता बीसीसीएल के अन्नपूर्णा सभागार कोयला नगर में 'नारी शक्ति से विकसित भारत' विषय पर एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मूल रूप से बीसीसीएल की महिला कार्मिकों को समर्पित इस सांस्कृतिक समारोह-सह-कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य महिला सशक्तिकरण की दिशा में बीसीसीएल द्वारा किए जा रहे प्रयासों की एक सशक्त प्रस्तुति के साथ भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में महिलाओं की भूमिका की विवेचना एवं उनके योगदान को रेखांकित करते हुए सार्वजनिक क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी तथा विशेषकर माइनिंग उद्योग में महिलाओं की सहभागिता एवं उनकी उपलब्धियों का सम्मान करना था।आयोजन इस वर्ष महिला दिवस 2025 के अवसर में बीसीसीएल मुख्यालय एवं भिन्न क्षेत्रों में आयोजित गतिविधियों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं प्रतिस्पर्धाओं इत्यादि की समापन कड़ी के रूप में भी मनाया गया। जिसमें उक्त गतिविधियों एवं प्रतिस्पर्धाओं में विजयी प्रतिभागियों एवं महिला कार्मिको को पुरस्कृत किया गया।

उपायुक्त सुश्री मिश्रा के अतिरिक्त कार्यक्रम में दीक्षा महिला मंडल की उपाध्यक्ष श्रीमती पूर्बिता रमैया, श्रीमती नमिता सहाय तथा श्रीमती रंजना सिंह भी उपस्थित रही। निदेशक (मानव संसाधन) श्री मुरली कृष्ण रमैया भी कार्यक्रम में शामिल हुए तथा औपचारिक रूप से बीसीसीएल की ओर मुख्य अतिथि उपायुक्त, धनबाद तथा दीक्षा महिला मंडल की उपाध्यक्षों का पुष्प गुच्छ एवं स्मृति चिह्न देकर स्वागत अभिनन्दन किया।सीएमएस डॉ. पूनम दुबे भी उपस्थित रही।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में उपायुक्त सुश्री माधवी मिश्रा ने अपने ओजस्वी और प्रेरणादायक संबोधन में महिला सशक्तिकरण के बहुआयामी पहलुओं पर प्रकाश डाला और कहा कि महिलाओं को हर परिस्थिति में खुद पर भरोसा होने के साथ अपने-आप पर गर्व होना चाहिए। उन्होंनें कहा कि जब एक महिला आगे बढ़ती है, तो वह केवल अपने लिए नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए रास्ता बनाती है। खनन जैसे पारंपरिक पुरुष-प्रधान क्षेत्र में महिलाएं जिस प्रकार निष्ठा और प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही हैं, वह अनुकरणीय है। उन्होंनें कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए बीसीसीएल को बधाई दी तथा कार्यक्रम में उपस्थित सभी महिलाओं के लिए अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की।

इस दौरान उन्होंनें उत्कृष्ट कार्य हेतु बीसीसीएल की दो महिला कार्मिकों, अधिकारी श्रेणी में सीएमएस डॉ. पूनम दुबे तथा गैर-अधिकारी श्रेणी में श्रीमती लक्ष्मी कुमारी (जनरल असिस्टेंट, सिजुआ एरिया) को पौधा एवं प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया।

निदेशक (मानव संसाधन) श्री रमैया ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा कि आयोजित कार्यक्रम केवल एक सांस्कृतिक उत्सव नहीं बल्कि महिलाओं की हर क्षेत्र विशेषकर सार्वजनिक क्षेत्रों में बढ़ती भागीदारी का स्वीकरण है, जो बीसीसीएल जैसे किसी भी संस्थान के लिए प्रेरणास्पद है ।

दीक्षा महिला मंडल की उपाध्यक्ष श्रीमती पूर्बिता रमैया ने सभा को संबोधित करते हुए महिला मंडल द्वारा किए जा रहे समाजसेवी कार्यों की जानकारी दी और कहा कि महिलाओं के पास समाज निर्माण की असाधारण क्षमता है। उन्होंने एक कविता के माध्यम से यह अभिव्यक्त किया कि जब महिलाओं को केवल सहयोगी नहीं, बल्कि नेतृत्वकर्ता के रूप में स्वीकार

किया जाता है, तभी समाज में सच्चा परिवर्तन आता है।

दिवस के कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रगान और कोल इंडिया के कॉर्पोरेट गीत के साथ हुईं जिसके पश्चात मंचासीन अतिथियों द्वारा दीप-प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम को विधिवत प्रारंभ किया गया। सांस्कृतिक टीम द्वारा स्वागत गीत के पश्चात वरीय प्रबंधक (मानव संसाधन) श्रीमती निर्मला किरण ने स्वागत भाषण दिया। जिसके उपरांत मुख्यालय की टीम द्वारा एक सुंदर समूह गीत एवं नृत्य प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात वीडियो प्रस्तुति के माध्यम से महिला दिवस के उपलक्ष्य में बीसीसीएल के विभिन्न क्षेत्रों और मुख्यालय में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ प्रस्तुत की गईं। इसके अतिरिक्त संभलपुरी लोक नृत्य तथा क्विज़ प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसमें महिला सशक्तिकरण, बीसीसीएल की उपलब्धियों और सामाजिक विषयों से जुड़े प्रश्न पूछे गए। इसके पूर्व कार्यक्रम के अंतिम सत्र में उन विजेताओं को सम्मानित किया गया, जिन्होंने महिला दिवस के तहत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया था।

कार्यक्रम में मुख्यालय एवं विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में बीसीसीएल की महिला अधिकारी एवं कर्मी उपस्थित थीं। कुल 48 महिला कार्मिकों को सम्मानित किया गया जिन्होनें महिला दिवस समारोहों के दौरान भिन्न कार्यक्रमों में भाग लिया था। मंच संचालन वरीय प्रबंधक (मानव संसाधन) सुश्री गार्गी मुखोपाध्याय एवं योगिता सकलानी ने संयुक्त रूप से किया तथा धन्यवाद शोभा जैतुन कुजूर (विभागाध्यक्ष, अधिकारी स्थापना विभाग) ने व्यक्त किया। कार्यक्रम में सुश्री मधुस्मिता लकड़ा, किरन रानी नायक आदि का सराहनीय योगदान रहा। ●

मंदिरों की मौजूदा स्थिति में हो व्यापक सुधार

देश में मंदिरों को लेकर विमर्श निरंतर रुप से जारी है। राम मंदिर के निर्माण के बाद अब ज्ञानवापी, श्री कृष्ण जन्मभूमि समेत कई मंदिरों के मामले कोर्ट के सामने विचाराधीन हैं। इन पर जो भी फैसला आएगा वह तो फिलहाल पता नहीं पर जो मंदिर हमारे आस-पड़ोस में हैं, उनकी क्या स्थिति है यह सोचने वाली बात है। अगर कुछ बड़े मंदिरों को छोड़ दिया जाए तो देश के अधिकांश मंदिर गंदगी, बदहाली और मिसमैनेजमेंट का शिकार बने हुए हैं।

मंदिरों की समुचित देखभाल के लिए योग्य पुजारी नहीं हैं। ऐसे पुजारी बहुत कम हैं जिन्हें संस्कृत भाषा एवं धर्म शास्त्रों का अच्छा ज्ञान हो साथ ही साथ उनका चरित्र भी अच्छा हो। दान में आने वाली राशि का कोई हिसाब-किताब नहीं है- पैसा कहाँ से आ रहा है और किन कार्यों में खर्च हो रहा है यह आम जनता को पता ही नहीं होता। मंदिर परिसर में और उसके आस पास साफ-सफाई नहीं होती एवं परिसर में बुनियादी सुविधाओं जैसे- पीने का पानी, शौचालय आदि का अभाव दिखता है। मंदिर प्रबंधन का सेवा कार्यों के प्रति उदासीनता का भाव दिखता है।

भारत में बहुत कम मंदिर ऐसे हैं जो विभिन्न सेवा कार्यों में लगे हुए हैं। मंदिर के प्रबंधन में घोर कुव्यवस्था होने के कारण लंबी कतारें दिखती हैं और कभी कभी भगदड़ मचने पर लोगों की मौत भी हो जाती है। इतने भीड़ भाड़ वाले माहौल में मानसिक शांति की उम्मीद करना बिल्कुल ऐसा ही है जैसे रेगिस्तान में पानी खोजना।

जैसे गुरुद्वारे में सिख समुदाय के लोग सहर्ष श्रमदान करते हैं, वैसे ही मंदिरों में भी साफ-सफाई, मेंटेनेंस जैसे कार्यों में सनातन धर्मावलंबी लोगों श्रमदान करना चाहिए। मंदिर के प्रबंधन को ट्रस्ट और कमिटी के द्वारा सुधारा जाना चाहिए एवं आय-व्यय का पूरा हिसाब होना चाहिए। मानव सेवा के कार्यों में मंदिरों की भागीदारी बढ़नी चाहिए। पटना के महावीर मंदिर के द्वारा इस मामले में सराहनीय कार्य किया जा रहा है- दिवंगत आचार्य किशोर कुणाल के नेतृत्व में इस मंदिर के द्वारा कई सामाजिक संस्थाओं को चलाने का प्रशंसनीय प्रयास किया गया (महावीर नेत्रालय, महावीर कैन्सर संस्थान, हार्ट हॉस्पिटल, वात्सल्य अस्पताल, राम-रसोई आदि)।

इसी तरह ISKCON के द्वारा संचालित अक्षय पात्र फाउण्डेशन, भारत के16 राज्यों और 3 केंद्र शासित प्रदेशों के 78 स्थानों पर स्थित 23,581 सरकारी स्कूलों और आंगनवाड़ी केंद्रों में पढ़ने वाले 22.5 लाख से अधिकस्कूली बच्चों कोनिःशुल्क भोजन उपलब्ध कराती है।इस संस्था का उद्देश्य यही है कि देश में कोई भी गरीब बच्चा भूख की वजह से अपनी पढाई नहीं छोड़े।

तिरुमला तिरुपति वेंकटेश्वर मंदिर, श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर(तिरुवनंतपुरम), सिद्धिविनायक मंदिर, शिरडी साईं बाबा मंदिर, मीनाक्षी मंदिर, सोमनाथ मंदिर, सबरीमाला अय्यप्पा मंदिर,जगन्नाथ मंदिर(पुरी), स्वामीनारायण अक्षरधाम मंदिर, वैष्णो देवी मंदिर,काशी विश्वनाथ मंदिरआदि की कुल कमाई करोड़ों में है।26 अप्रैल 2024 को The Economic Times में छपी एक रिपोर्ट के अनुसार तिरुपति मंदिर ट्रस्ट सिर्फ़ फिक्स्ड डिपॉजिट्स (एफडी) पर ही सालाना ₹1,600 करोड़ का ब्याज कमाता है।

कुछ मंदिर, मठ, आश्रम सेवा कार्यों में अवश्य लगे हुए हैं लेकिन यह भावना हर मंदिर में होगी तभी आम जनता उससे जुड़ाव महसूस करेगी। पुजारियों की समुचित ट्रेनिंग (भाषा, व्याकरण एवं धर्मशास्त्रों का ज्ञान) बहुत जरूरी है। अपने इष्ट के प्रति श्रद्धा होना अच्छी बात है किन्तु धर्म के नाम पर अंधविश्वास और पाखंड को बढ़ावा नहीं दिया जाना चाहिए।कुल मिलाकर बात यह है कि जो मंदिर पहले से हमारे आस-पास में मौजूद हैं उनकी स्थिति को सुधारा जाए, बेहतर किया जाए। उन्हें लोक सेवा का ज़रिया बनाया जाए। ताकि वहाँ आने वाले लोगों को थोड़ी देर के लिए ही सही लेकिन मानसिक शांति, सुकून और आध्यात्मिक अनुभूति मिले।

डॉक्टर प्रभात कुमार
जनसंपर्क अधिकारी
टीएचडीसी खुर्जा

महाराष्ट्र का खजाना है कोयनानगर

देश के पश्चिमी भाग में स्थित महाराष्ट्र एक प्रमुख राज्य होने के साथ ही खूबसूरती के लिए भी जाना जाता है। यह एक ओर ऊंचे-ऊंचे पहाड़ तो दूसरी ओर अरब सागर से घिरा है। महाराष्ट्र अपनी खूबसूरती के कारण पर्यटकों के अपनी ओर आकर्षित करता है। महाराष्ट्र में कई ऐसी हसीन, ऐतिहासिक और शानदार जगहें मौजूद हैं, जहां पर घूमने के लिए दुनियाभर से लोग आते हैं। महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई से लेकर लोनावाला, खंडाला और माथेरान जैसी जगहों के बारे में तो हर कोई जानता है, लेकिन यहां पर स्थित कोयनानगर के बारे में कम लोग जानते हैं। इस जगह को महाराष्ट्र का छिरा हुआ खजाना माना जाता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कोयनानगर की खासियत, यहां की खूबसूरती और यहां पर मौजूद शानदार जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं।

महाराष्ट्र में कोयनानगर

कोयनानगर महाराष्ट्र के सतारा जिले में स्थित है। सतारा जिला खूबसूरत पहाड़ और झील-झरनों के लिए जाना जाता है। वहीं कोयनानगर को कोयना के नाम से भी जाना जाता है।

सतारा जिले में कोयना नदी के किनारे कोयनानगर है। यह सतारा शहर से कुछ ही दूरी पर बसा है। कोयनानगर महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई से करीब 294 किमी दूर है। पूणे से 190 किमी और सांगली से 130 किमी दूर है।

कोयनानगर की खासियत

कोयनानगर चिपलून-सांगली राजमार्ग पर स्थित है और यह कई चीजों के लिए फेमस माना जाता है। कोयनानगर में स्थित कोयना बांधा भारत की सबसे बड़ी जल विद्युत परियोजनाओं में से एक माना जाता है।

कोयना बांध के पीछे स्थित शिवसागर जलाशय भी कोयनानगर को खास बनाने का काम करता है। यह जगह सतारा जिले के साथ ही पूरे महाराष्ट्र का छिपा हुआ खजाना माना जाता है। यहां पर आप एडवेंचर एक्टिविटी भी कर सकते हैं।

कोयनानगर की खूबसूरती

बता दें कि कोयनानगर को खूबसूरती का खजाना माना जाता है। यह जगह शहर की भीड़-भाड़ से दूर अपने शांत और शुद्ध वातावरण के लिए भी जाना जाता है। प्रकृति प्रेमियों के लिए यह जगह स्वर्ग से कम नहीं है। कोयनानगर की हरियाली यहां की खूबसूरती में चार चांद लगाने का काम करती है।

यहां पर क्रिस्टल क्लियर झील, ऊंचे-ऊंचे पहाड़ और घने जंगल देखने को मिलेंगे। वहीं वीकेंड पर कई पर्यटक यहां पर पिकनिक मनाने पहुंचते हैं। वहीं मानसून में कोयनानगर की खूबसूरती देखने लायक होती है।

कोयनानगर में घूमने की जगहें

कोयनानगर में कई शानदार और बेहतरीन जगहें हैं, जहां पर घूमने के बाद आप महाराष्ट्र की फेमस जगहों को भूल जाएंगे। यहां पर कोयना डैम, कोयना नदी, नेहरु गार्डन और कोयनानगर वाइल्ड लाइफ सेंचुरी आदि खूबसूरत जगहें मौजूद हैं।

कोयनानगर के आसपास कामरगांव, हूंबर्ली, वजेगांव, ओज़ार्डे वॉटरफॉल और कोयना बैकवाटर व्यू पॉइंट जैसी जगहों को घूम सकते हैं।

कैसे पहुंचे कोयनानगर

यहां पर पहुंचना बहुत आसान है, कोयनानगर का सबसे नजदीकी एयरपोर्ट पुणे है। जोकि करीब 192 किमी दूर है। वहीं कोयनानगर का नजदीकी रेलवे स्टेशन चिपलून है जो 42 किमी दूर है। पुणे से चिपलून के लिए लोकल ट्रेन आदि चलती हैं और यह शानदार जगह चिपलून-सांगली राजमार्ग पर स्थित है। ●

गर्मियों में लें तरबूज की आइसक्रीम का आनंद

गर्मी का मौसम आ गया है, और आइसक्रीम खाने का समय भी। अब आप अपने शरीर को ठंडी आइसक्रीम से ठंडा कर सकते हैं। बाजार से आइसक्रीम मंगवाना एक अच्छा विकल्प है, लेकिन घर पर आइसक्रीम बनाना और भी बेहतर है। आप अपनी पसंद के अनुसार सामग्री चुन सकते हैं और स्वस्थ आइसक्रीम बना सकते हैं। बस कच्चा माल मंगवाएं और आइसक्रीम बनाने की तैयारी करें।

तरबूज की आइसक्रीम एक अनोखा और ताजा स्वाद है जो आपको बाहर शायद ही मिले। घर पर आइसक्रीम बनाने से आप अपनी पसंद के अनुसार फ्लेवर और सामग्री चुन सकते हैं और इसे और भी स्वादिष्ट बना सकते हैं। तो देर किस बात की? घर पर आइसक्रीम बनाना शुरू करें और गर्मियों का आनंद लें।

तरबूज की आइसक्रीम बनाने के लिए क्या चाहिए?

- 3 कप कटे हुए तरबूज (बिना बीज वाले)
- 1 कप दानेदार चीनी
- 1 कप क्रीम
- 1 बडा चम्मच नींबू का रस
- एक चुटकी नमक

बनाने का तरीका

1. कटे हुए तरबूज को ब्लेंडर में डालकर चिकना होने तक ब्लेंड करें। प्यूरी को बारीक छलनी से छान लें ताकि अतिरिक्त गूदा और रेशे निकल जाएं।

2. एक बडे कटोरे में, तरबूज की प्यूरी को दानेदार चीनी और नींबू के रस के साथ तब तक मिलाएं जब तक कि चीनी घुल न जाए।

3. फ्लेवर को घुलने देने के लिए मिश्रण को कम से कम 2 घंटे या रात भर के लिए फ्रिज में रख दें।

4. एक अलग कटोरे में, भारी क्रीम को तब तक फेंटें जब तक कि यह सख्त न हो जाए। व्हीप्ड क्रीम को ठंडे तरबूज के मिश्रण में मिलाएं।

5. मिश्रण को उथले धातु के पैन या बेकिंग डिश में डालें। प्लास्टिक रैप या एल्युमिनियम फॉयल से ढकें और फ्रीजर में रखें।

6. हर 30 मिनट में, मिश्रण को फ्रीजर से निकालें और किसी भी बर्फ के क्रिस्टल को तोडने के लिए इसे कांटे से खुरचें। इस प्रक्रिया को 2-3 घंटे तक दोहराएं।

7. जब आइसक्रीम वांछित स्थिरता तक पहुंच जाए, तो इसे एक एयरटाइट कंटेनर में डालें और कम से कम 1 घंटे के लिए जमने दें।

एलोवेरा से करें स्किन की केयर

अगर आपकी स्किन सेंसेटिव है तो ऐसे में आपको किसी भी प्रोडक्ट को बहुत ही सोच-समझकर इस्तेमाल करना होता है। अगर जरा सी भी लापरवाही बरती जाए तो इससे आपकी स्किन को बहुत अधिक परेशानी का सामना करना पड़ता है। सेंसेटिव स्किन की केयर करने के लिए एलोवेरा का इस्तेमाल करना काफी अच्छा माना जाता है। यह ना केवल स्किन पर जेंटल होता है, बल्कि इससे स्किन को ठंडक भी मिलती है। साथ ही साथ, बिना किसी साइड इफेक्ट के यह आपकी स्किन को ठीक भी करता है। चाहे सनबर्न हो, रैश हो या पूरे दिन की थकान, एलोवेरा आपकी स्किन की हर समस्या से निजात दिला सकती है।

मॉइश्चराइज़र की तरह करें इस्तेमाल- एलोवेरा जेल को आप सेंसेटिव स्किन पर बतौर मॉइश्चराइजर भी इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके लिए आप पौधे से एलोवेरा जेल निकाल लें। फेस वॉश के बाद आप थोड़ा सा जेल चेहरे पर लगाओ। इससे आपकी स्किन को दिनभर ठंडक और नमी मिलती रहेगी।

फेस मिस्ट की तरह करें इस्तेमाल- एलोवेरा जेल गर्मी के दिनों में आपकी स्किन के लिए एक बेहतरीन फेस मिस्ट भी साबित हो सकता है। इसके लिए आप 1 हिस्सा एलोवेरा जेल 2 हिस्से गुलाब जल लेकर मिक्स कर लें। अब इसे स्प्रे बोतल में भर लो। जब भी चेहरा टाइट या चिड़चिड़ा लगे, दिन में 2-3 बार स्प्रे कर लो। आप इसे मेकअप सेट करने के लिए भी इस्तेमाल कर सकते हो।

पुस्तकालय विज्ञान में अपार संभावनाएँ

सुधांशु शेखर मिश्रा
लाइब्रेरियन

पुस्तकालय–यह शब्द सुनते ही किताबों की धूलभरी अलमारियाँ और शांत कोनों की तस्वीर उभरती है। लेकिन आज का पुस्तकालय विज्ञान उस पुरानी छवि से कहीं आगे निकल चुका है। यह अब केवल किताबों का ठिकाना नहीं, बल्कि एक ऐसी गतिशील शक्ति है जो डिजिटल युग में ज्ञान, तकनीक और समाज को जोड़ रही है। सूचना प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, और डेटा प्रबंधन के साथ पुस्तकालय विज्ञान अपार संभावनाओं का खजाना बन गया है। यह लेख आपको इस रोमांचक क्षेत्र की सैर कराएगा, जहाँ शिक्षा, रोज़गार, और सामुदायिक विकास के नए द्वार खुल रहे हैं।

पुस्तकालय विज्ञानः पुरातन से आधुनिक तक की यात्रा

पुस्तकालयों का इतिहास प्राचीन है–चाहे वह अलेक्जेंड्रिया की विशाल लाइब्रेरी हो या भारत के तक्षशिला और नालंदा के ज्ञान भंडार। ये स्थान कभी विद्वानों के लिए तीर्थ थे। लेकिन समय बदला, और पुस्तकालय विज्ञान ने भी अपनी परिभाषा बदल दी। पहले यह किताबों को सहेजने और सूचीबद्ध करने तक सीमित था, पर आज यह डिजिटल क्रांति का हिस्सा है। ई-बुक्स, ऑनलाइन जर्नल्स, और डिजिटल संग्रहों ने इसे हर घर तक पहुँचा दिया। पुस्तकालय विज्ञानी अब केवल संरक्षक नहीं, बल्कि तकनीक के जादूगर हैं, जो सूचना को हर कोने तक ले जा रहे हैं। यह बदलाव अनगिनत संभावनाओं का आलम लेकर आया है।

डिजिटल पुस्तकालयः हर हाथ में ज्ञान

सूचना प्रौद्योगिकी ने पुस्तकालयों को दीवारों से आज़ाद कर दिया। आज 'नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया' (एनडीएलआई) जैसी पहलें लाखों किताबें, शोध पत्र, और दस्तावेज़ आपके मोबाइल पर ला रही हैं। भारत जैसे देश में, जहाँ ग्रामीण इलाकों में किताबों और इंटरनेट की पहुँच सीमित है, यह एक क्रांति है। एक गाँव का छात्र अब घर बैठे विज्ञान पढ़ सकता है, एक किसान खेती की नई तकनीक सीख सकता है, और एक महिला उद्यमी बाज़ार की जानकारी ले सकती है। डिजिटल पुस्तकालय ने ज्ञान को लोकतांत्रिक बना दिया है।

ओपन एक्सेस आंदोलन ने इसे और आगे बढ़ाया। पुस्तकालय विज्ञानी अब डेटाबेस डिज़ाइन करते हैं, मेटाडेटा बनाते हैं, और डिजिटल संग्रहों को व्यवस्थित करते हैं। यह न सिर्फ शोधकर्ताओं के लिए, बल्कि हर उस व्यक्ति के लिए वरदान

है जो सीखना चाहता है। ग्रामीण भारत में यह शिक्षा और आर्थिक विकास का पुल बन सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ताः पुस्तकालय का स्एमार्ट दोस्त

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) पुस्तकालय विज्ञान को जादुई रंग दे रही है। कल्पना करें–आप एक डिजिटल पुस्तकालय में सवाल पूछते हैं, 'मुझे पर्यावरण संरक्षण पर किताब चाहिए,' और एक एआई चैटबॉट पलक झपकते ही आपको सही संसाधन सौंप देता है। यह समय बचाता है और खोज को मज़ेदार बनाता है।

एआई डेटा विश्लेषण में भी कमाल कर रहा है। पुस्तकालय अब यह समझ सकते हैं कि लोग क्या पढ़ना पसंद करते हैं–कौन सी किताबें चलन में हैं, कौन से विषयों की माँग है। इससे संग्रह को बेहतर बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, अगर गाँव में किसान जैविक खेती पर जानकारी चाहते हैं, तो पुस्तकालय उस दिशा में संसाधन बढ़ा सकता है। यह पुस्तकालयों को ज़माने के साथ चलायमान रखता है।

रोज़गार का नया आसमान

पुस्तकालय विज्ञान अब करियर का एक सुनहरा क्षेत्र है। डिजिटल संग्रहण, सूचना प्रौद्योगिकी, और डेटा साइंस की माँग ने इसे बहुआयामी बना दिया। पुस्तकालय विज्ञानी अब विश्वविद्यालयों से लेकर कॉर्पोरेट ऑफिसों और सरकारी संगठनों तक में जगह बना रहे हैं। भारत में 'स्किल इंडिया' जैसे अभियानों के साथ यह युवाओं को तकनीकी हुनर सिखाने का मंच बन सकता है।

ग्रामीण पुस्तकालयों को प्रशिक्षण केंद्रों में बदला जा सकता है। सोचिए–एक गाँव का पुस्तकालय जहाँ किसानों को डिजिटल खेती, युवाओं को ऑनलाइन कोर्स, और महिलाओं को उद्यमिता की ट्रेनिंग मिले। यह न केवल रोज़गार पैदा करेगा, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मज़बूत करेगा।

समाज को सशक्त करने की ताकत

पुस्तकालय अब सिर्फ किताबों की जगह नहीं, बल्कि सामुदायिक हब बन रहे हैं। गाँवों में, जहाँ इंटरनेट और शिक्षा की कमी है, ये डिजिटल ठिकाने बन सकते हैं। एक छोटा पुस्तकालय मुफ्त वाई-फाई, ई-लर्निंग, और सरकारी योजनाओं की जानकारी दे सकता है। यह सामाजिक समावेश को बढ़ावा देगा और गाँवों को मुख्यधारा से जोड़ेगा।

साथ ही, यह सांस्कृतिक धरोहर को बचाने का ज़रिया भी है। भारत की लोककथाएँ, मौखिक परंपराएँ, और स्थानीय ज्ञान को डिजिटल रूप में सहेजा जा सकता है। यह हमारी पहचान को अगली पीढ़ी तक ले जाएगा।

राह में रोड़े और रास्ते

संभावनाएँ जितनी बड़ी हैं, चुनौतियाँ भी उतनी ही साफ हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली, इंटरनेट, और तकनीकी समझ की कमी रुकावट है। लेकिन हल मौजूद हैं–सौर ऊर्जा से चलने वाले पुस्तकालय, सस्ता मोबाइल डेटा, और हिंदी व स्थानीय भाषाओं में प्रशिक्षण इन समस्याओं को हल कर सकता है। 'डिजिटल इंडिया' जैसे अभियान और निजी क्षेत्र की भागीदारी इसे सच कर सकते हैं।

अंतिम पन्नाः एक नई शुरुआत

पुस्तकालय विज्ञान अब किताबों से कहीं आगे बढ़ चुका है। यह ज्ञान का वह सूरज है जो हर कोने को रोशन कर सकता है। डिजिटल तकनीक, एआई, और सामुदायिक शक्ति के साथ यह शिक्षा को सुलभ, रोज़गार को संभव, और समाज को मज़बूत बना सकता है। बस ज़रूरत है इसे अपनाने की–हर गाँव में एक डिजिटल पुस्तकालय, हर हाथ में एक मौका। पुस्तकालय विज्ञान का यह नया युग हमें एक ऐसे भारत की ओर ले जा रहा है, जहाँ ज्ञान की कोई सीमा नहीं। तो आइए, इस संभावनाओं के आकाश में उड़ान भरें!

रघुवीर महाविद्यालय, रघुवीर नगर, थलोई, मछलीशहर, जौनपुर (उ.प्र.)

ब्लॉकचेन के माध्यम से कृषि प्रसार : पारदर्शी आपूर्ति श्रृंखला

डॉ. पंकज कुमार ओझा

आधुनिक युग में कृषि क्षेत्र में तकनीकी नवाचारों ने क्रांतिकारी बदलाव लाए हैं। इनमें से ब्लॉकचेन तकनीक एक ऐसी उभरती हुई तकनीक है, जो न केवल कृषि आपूर्ति श्रृंखला को पारदर्शी बनाने में सहायक है, बल्कि कृषि प्रसार सेवाओं को भी अधिक प्रभावी और विश्वसनीय बना रही है। ब्लॉकचेन, जो मूल रूप से एक डिजिटल लेजर तकनीक है, डेटा को सुरक्षित, अपरिवर्तनीय और विकेंद्रीकृत रूप में संग्रहीत करती है। यह लेख ब्लॉकचेन के माध्यम से कृषि प्रसार में पारदर्शी आपूर्ति श्रृंखला की भूमिका, इसके लाभ, चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा करता है।

ब्लॉकचेन क्या है?

ब्लॉकचेन एक डिजिटल डेटाबेस है, जिसमें जानकारी को ब्लॉक्स में संग्रहीत किया जाता है और ये ब्लॉक्स एक श्रृंखला (चेन) के रूप में आपस में जुड़े होते हैं। प्रत्येक ब्लॉक में डेटा, उसका हैश (एक अद्वितीय कोड), और पिछले ब्लॉक का हैश होता है, जो डेटा की सुरक्षा और अखंडता सुनिश्चित करता है। ब्लॉकचेन का विकेंद्रीकृत स्वरूप इसे हैकिंग और छेड़छाड़ से सुरक्षित बनाता है। कृषि प्रसार में, यह तकनीक आपूर्ति श्रृंखला के प्रत्येक चरण को पारदर्शी और ट्रेस करने योग्य बनाती है।

कृषि प्रसार में ब्लॉकचेन की भूमिका

कृषि प्रसार का मुख्य उद्देश्य किसानों को नवीनतम तकनीकों, बाजार की जानकारी और संसाधनों तक पहुँच प्रदान करना है। ब्लॉकचेन इस प्रक्रिया को निम्नलिखित तरीकों से सशक्त बनाता हैः

पारदर्शी आपूर्ति श्रृंखला

ब्लॉकचेन तकनीक आपूर्ति श्रृंखला के प्रत्येक चरण–कृषि उत्पादन, प्रसंस्करण, परिवहन, और बिक्री–को रिकॉर्ड करती है। उदाहरण के लिए, एक उपभोक्ता यह पता लगा सकता है कि उसके द्वारा खरीदा गया चावल किस खेत से आया, उसमें कौन से उर्वरक उपयोग हुए, और उसे कैसे संसाधित किया गया। यह पारदर्शिता विश्वास को बढ़ाती है और नकली उत्पादों की समस्या को कम करती है।

किसानों को उचित मूल्य

आपूर्ति श्रृंखला में बिचौलियों की भूमिका

को कम करके ब्लॉकचेन किसानों को उनके उत्पादों का उचित मूल्य दिलाने में मदद करता है। स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट्स (स्वचालित अनुबंध) के माध्यम से भुगतान तुरंत और पारदर्शी रूप से किया जा सकता है, जिससे किसानों की आय में वृद्धि होती है।

गुणवत्ता और प्रमाणन

ब्लॉकचेन के माध्यम से जैविक उत्पादों, जीआई (भौगोलिक संकेतक) टैग, या अन्य प्रमाणनों की प्रामाणिकता को सत्यापित किया जा सकता है। यह उपभोक्ताओं को गुणवत्तापूर्ण उत्पादों की गारंटी देता है और किसानों को प्रीमियम मूल्य प्राप्त करने में मदद करता है।

वास्तविक समय की जानकारी

ब्लॉकचेन-आधारित प्लेटफॉर्म किसानों को बाजार की कीमतों, मांग-आपूर्ति की स्थिति, और मौसम की जानकारी वास्तविक समय में प्रदान कर सकते हैं। यह कृषि प्रसार सेवाओं को अधिक गतिशील और प्रभावी बनाता है।

खाद्य सुरक्षा

ब्लॉकचेन खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि कोई खाद्य उत्पाद दूषित पाया जाता है, तो ब्लॉकचेन के माध्यम से उसकी उत्पत्ति और वितरण के पूरे मार्ग को तुरंत ट्रेस किया जा सकता है, जिससे त्वरित कार्रवाई संभव होती है।

भारत में ब्लॉकचेन के उदाहरण

भारत में ब्लॉकचेन तकनीक का उपयोग कृषि क्षेत्र में धीरे-धीरे बढ़ रहा है। कुछ उल्लेखनीय उदाहरण हैं:

एग्री-टेक स्टार्टअप्सः स्टार्टअप जैसे Agri10x और CropIn ब्लॉकचेन-आधारित समाधान प्रदान कर रहे हैं, जो किसानों को बाजारों से जोड़ते हैं और आपूर्ति श्रृंखला को पारदर्शी बनाते हैं।

सरकारी पहलः भारत सरकार की डिजिटल इंडिया पहल और e-NAM (राष्ट्रीय कृषि बाजार) जैसे मंच ब्लॉकचेन को एकीकृत करने की दिशा में कदम उठा रहे हैं।

निजी क्षेत्रः रिलायंस और आईटीसी जैसे बड़े कॉर्पोरेट्स ब्लॉकचेन का उपयोग करके अपनी आपूर्ति श्रृंखला को अधिक कुशल और पारदर्शी बना रहे हैं।

लाभ

ब्लॉकचेन के उपयोग से कृषि प्रसार और आपूर्ति श्रृंखला में कई लाभ प्राप्त हो रहे हैं:

विश्वास और पारदर्शिताः उपभोक्ता और किसान दोनों के बीच विश्वास बढ़ता है।

कुशलताः मैनुअल रिकॉर्ड-कीपिंग और बिचौलियों की आवश्यकता कम होती है।

नकली उत्पादों पर नियंत्रणः नकली बीज, उर्वरक, और उत्पादों की समस्या कम होती है।

वैश्विक बाजारों तक पहुँचः पारदर्शी आपूर्ति श्रृंखला के कारण भारतीय कृषि उत्पादों को वैश्विक बाजारों में स्वीकार्यता मिलती है।

चुनौतियाँ

हालांकि ब्लॉकचेन में अपार संभावनाएँ हैं, लेकिन भारत जैसे विकासशील देश में इसके कार्यान्वयन में कुछ चुनौतियाँ हैं:

तकनीकी जटिलताः ब्लॉकचेन को लागू करने और समझने के लिए तकनीकी विशेषज्ञता की आवश्यकता है।

बुनियादी ढाँचाः ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी और डिजिटल उपकरणों की कमी एक बड़ी बाधा है।

जागरूकता की कमीः अधिकांश किसानों को ब्लॉकचेन तकनीक की जानकारी नहीं है।

प्रारंभिक लागतः ब्लॉकचेन-आधारित सिस्टम को स्थापित करने की प्रारंभिक लागत अधिक हो सकती है।

नियामक ढांचाः भारत में ब्लॉकचेन के लिए स्पष्ट नियामक दिशा निर्देशों की कमी है।

भविष्य की संभावनाएँ

ब्लॉकचेन तकनीक का भविष्य कृषि प्रसार में उज्ज्वल है। सरकार, निजी क्षेत्र, और स्टार्टअप्स के सहयोग से ब्लॉकचेन को मुख्यधारा में लाया जा सकता है। कुछ संभावित कदम हैंः

प्रशिक्षण और जागरूकताः किसानों और प्रसार कार्यकर्ताओं को ब्लॉकचेन के लाभों के बारे में प्रशिक्षित करना।

सस्ती तकनीकः कम लागत वाले ब्लॉकचेन समाधानों का विकास।

सार्वजनिक-निजी भागीदारीः सरकार और निजी कंपनियों के बीच सहयोग से बड़े पैमाने पर ब्लॉकचेन को लागू करना।

5G और IoT के साथ एकीकरणः 5G नेटवर्क और IoT के साथ ब्लॉकचेन का संयोजन आपूर्ति श्रृंखला को और अधिक कुशल बनाएगा।

निष्कर्ष

ब्लॉकचेन तकनीक कृषि प्रसार और आपूर्ति श्रृंखला में पारदर्शिता, विश्वास, और कुशलता लाने की क्षमता रखती है। यह न केवल किसानों को उचित मूल्य और बाजार तक पहुँच प्रदान करती है, बल्कि उपभोक्ताओं को गुणवत्तापूर्ण और सुरक्षित उत्पादों की गारंटी भी देती है। हालाँकि, इसके व्यापक कार्यान्वयन के लिए तकनीकी बुनियादी ढाँचे, जागरूकता, और नीतिगत समर्थन की आवश्यकता है। यदि इन चुनौतियों का समाधान किया जाए, तो ब्लॉकचेन भारतीय कृषि को एक नई ऊँचाई पर ले जा सकता है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत होगी और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित होगी।

सुझाव

कृषि प्रसार कार्यकर्ताओं और नीति निर्माताओं को ब्लॉकचेन को अपनाने के लिए पायलट परियोजनाएँ शुरू करनी चाहिए। साथ ही, किसानों को इस तकनीक के लाभों से अवगत कराने के लिए स्थानीय भाषाओं में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। यह तकनीक भारतीय कृषि के लिए एक गेम-चेंजर साबित हो सकती है।

असिस्टेंट प्रोफेसर
बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक
विश्वविद्यालय, बाँदा (उ.प्र.)

गिरजा देवी

(जयंती 8 मई)

गिरिजा देवी का जन्म 8 मई 1929 को कला और संस्कृति की नगरी वाराणसी उत्तर प्रदेश में हुआ था। उनके पिता रामदेव राय जमीदार थे। जो संगीत के प्रेमी रहे उन्होंने 5 वर्ष की उम्र में ही गिरजा देवी को संगीत सिखाने के लिए गुरु के रूप में पंडित सरयू प्रसाद मिश्र को लगा दिया। गिरजा देवी ने ठुमरी, कजरी और चैती में बनारस का खास लहजा और विशुद्धता के साथ शीघ्र ही अपना प्रदर्शन प्रारंभ कर दिया। उनका विवाह एक व्यवसाई परिवार में हुआ। 1949 में इलाहाबाद आकाशवाणी के लिए पहली प्रस्तुति देने के बाद 1951 में बिहार के आरा में आयोजित एक संगीत सम्मेलन में प्रस्तुति दी। उन्होंने मंच तक ही अपने को सीमित नहीं किया बल्कि शैक्षणिक संस्थाओं में भी अपना योगदान दिया। 90 के दशक में उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं को प्राचीन संगीत परंपरा की दीक्षा दी। गिरजा देवी एकमात्र भारतीय शास्त्रीय संगीत के समकालीन वरिष्ठ गायिका में थी जिन्हें विश्वव्यापी प्रतिष्ठा प्राप्त है। ठुमरी की रानी के नाम से विख्यात गिरजा जी को 1972 में पद्मश्री, 1977 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, 1989 में पद्मभूषण, 2012 में महासंगीत सम्मान अवार्ड और 2016 में पद्मविभूषण से नवाजा गया। अंततः 24 अक्टूबर 2017 को दिल का दौरा पड़ने से कोलकाता में उनका निधन हो गया।

मृणालिनी साराभाई

(जयंती 11 मई)

मृणालिनी साराभाई का जन्म केरल में 11 मई 1918 को हुआ था। उनके पिता डॉ. स्वामीनाथन मद्रास हाईकोर्ट में बैरिस्टर थे। मां अम्मू स्वामीनाथन स्वतंत्रता सेनानी थी। बचपन स्विट्जरलैंड में बीता, जहां उन्होंने डेलक्रूज़ स्कूल में पाश्चात्य संगीत की शिक्षा ली, फिर उन्होंने रविंद्र नाथ टैगोर की देखरेख में शांति निकेतन में शिक्षा ग्रहण की।

यहीं से नृत्य उनकी जिंदगी बन गया। उनके पति विक्रम साराभाई सुप्रसिद्ध भौतिक वैज्ञानिक थे। देश सेवा से ओत-प्रोत इनके परिवार का हर क्षेत्र में योगदान रहा। उनकी बड़ी बहन लक्ष्मीसागर आजाद हिंद फौज में महिला विंग की कमान्डर इन चीफ झांसी रेजिमेंट में थी। इनकी बेटी मल्लिका साराभाई प्रसिद्ध नृत्यांगना और समाजसेवी हैं। बाद में मृणालिनी ने भरतनाट्यम सीखा और पंडित रविशंकर के भाई पंडित उदय शंकर के साथ भी काम किया। भारत सरकार ने विशिष्ट नागरिक सम्मान पद्मश्री और पद्मभूषण से इन्हें नवाजा। अंततः इनका निधन 21 जनवरी 2016 को अहमदाबाद गुजरात में हो गया। देश में भारतीय क्लासिकल डांसर के रूप में उन्हें याद किया जाता है।

महेंद्र नाथ मुल्ला

(जयंती 15 मई)

महेंद्र नाथ मुल्ला का जन्म 15 मई 1926 को गोरखपुर उत्तर प्रदेश में हुआ था। उन्होंने 1 मई 1948 को भारतीय नौसेना में कमीशन प्राप्त किया था। महेंद्र नाथ भारतीय नौ सेना के जांबाज ऑफिसर थे। भारतीय समुद्र वाहक पोत आईएनएस खुखरी के कप्तान थे। वर्ष 1971 के भारत-पाक युद्ध के दौरान जब पाकिस्तानी नौसेना ने भारतीय नौसेना को नुकसान पहुंचाया उस समय महेंद्र नाथ चीफ योमेन से कह रहे थे कि वह पश्चिमी नौसेना प्रमुख को सिग्नल भेजें कि कुकरी पर हमला हुआ है। कुकरी में पानी भर रहा था, लोग इधर-उधर भाग रहे थे। कुकरी का ब्रिज समुद्र सतह से चौथी मंजिल पर था, लेकिन मिनट भर से कम समय में ब्रिज और समुद्र का स्तर बराबर हो चुका था। मनु शर्मा और लेफ्टिनेंट कुंदनमल कुकरी के ब्रिज पर महेंद्र नाथ मुल्ला के साथ थे। महेंद्र नाथ ने उनको ब्रिज से नीचे धक्का दिया।

नीचे पानी में आग लगी हुई थी और 80 डिग्री कोण बनाते हुए कुकरी का अगला हिस्सा खड़ा था। पूरे पोत में आग लगी हुई थी और महेंद्र नाथ मुल्ला अपनी सीट पर बैठे रेलिंग पकड़े हुए थे और उनके हाथ में जलती हुई सिगरेट थी। भारत के 174 नाविक और 18 अधिकारी इस ऑपरेशन में मारे गए। कप्तान महेंद्र नाथ मुल्ला ने भारतीय नौसेना की सर्वोच्च परंपरा का निर्वहन करते हुए अपना जहाज नहीं छोड़ा और जल समाधि ली। उनकी इस वीरता के लिए उन्हें मरणोपरांत महावीर चक्र से सम्मानित किया गया।

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

(जयंती 27 मई)

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का जन्म 27 मई 1894 को राजनंद गांव छत्तीसगढ़ में हुआ था। इनके पिता पुन्नालाल बख्शी खेरागढ़ के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। इनकी प्रारंभिक शिक्षा खैरागढ़ से हुई। मैट्रिकुलेशन की परीक्षा के समय उनके नाम के साथ पिता का नाम जोड़ा गया। 1912 में मैट्रिक पास करने के बाद सेंट्रल हिंदू कॉलेज बनारस आ गये। 1916 में इनकी नियुक्ति स्टेट हाई स्कूल राजनांदगांव में हुई। साहित्य के क्षेत्र में अपनी रुचि के कारण 1920 में सरस्वती पत्रिका के सहायक संपादक बने। 1921 में इन्हें प्रधान संपादक बना दिया गया। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के विशेष कृपा पात्र और प्रिय होने का लाभ मिला। इनकी दो आलोचनात्मक कृतियां भी प्रकाशित हुई। हिंदी साहित्य विमर्श 1924, विश्व साहित्य 1924। इनकी अन्य प्रमुख कृति बख्शी ग्रंथावली 8 खंड में प्रकाशित हुई। जीवन पर्यंत शिक्षकीय कार्य करते हुए साहित्य साधना में जुड़े बख्शी जी प्रोफेसर बने और अनेक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया। 1969 में सागर विश्वविद्यालय से डी.लिट की उपाधि से विभूषित किए गए। देश के ख्यातिलब्ध निबंधकार पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का निधन 18 दिसंबर 1971 को रायपुर के शासकीय डीके हॉस्पिटल में हो गया। साहित्य जगत में आज भी इनको पढ़ा जाता है। अपनी रचनाओं के कारण वे आज भी अमर है।

इंदु जैन

(पुण्यतिथि 13 मई)

इंदु जैन का जन्म 8 सितंबर 1936 को फैजाबाद उत्तर प्रदेश में हुआ था। भारत के अरबपतियों में स्थान रखने वाली महिलाओं की रोल मॉडल इंदु जी टाइम्स ऑफ इंडिया मीडिया समूह की चेयरमैन थी और एफआईसीसीआई की महिला विंग

की फाउंडर प्रेसिडेंट भी रहीं। इसके साथ-साथ भारतीय ज्ञानपीठ ट्रस्ट की अध्यक्ष भी रहीं। इनकी शादी अशोक जैन से हुई थी। इनके दो बेटे समीर और विनीत जैन हैं। बेनेट कोलमैन एंड कंपनी देश के सबसे बड़े मीडिया ग्रुप में एक है। इसकी स्थापना 1938 में हुई थी, बाद में 1948 में रामकृष्ण डालमिया ने कंपनी बेनेट कोलमैन को बेच दी थी इस ग्रुप के साथ कई ब्रांड नेम जुड़े हैं। धार्मिक विचारधारा से ओतप्रोत इंदु जी धार्मिक कालम स्वयं लिखती थी। 2015 में 3.1 बिलीयन डॉलर की नेटवर्क के साथ फोर्ब्स की सूची में 57वां स्थान हासिल किया था। कई आध्यात्मिक संस्थाओं से जुड़ी इंदु जी को महात्मा महावीर अवार्ड भी मिला। 84 साल की उम्र में 13 मई 2021 को इनका निधन नई दिल्ली में हुआ। मृत्यु पर शोक नहीं उत्सव मनाया जाए इनका एक लेख पत्र आर्ट आफ डाईंग में लिखा गया था। जो मृत्यु पर एक विस्तृत सत्य है।

बाबा जयगुरुदेव

(पुण्यतिथि 18 मई)

बाबा जयगुरुदेव एक प्रसिद्ध धार्मिक गुरु थे। इनका जन्म गांव चितौरा इटावा उत्तर प्रदेश में हुआ था। बाबा की सोच गांव और गरीब दोनों से जुड़ी थी। बाबा कहते थे शरीर तो किराए की कोठरी है इसके लिए 23 घंटे दो, लेकिन इस मंदिर में बसने

वाले आत्मा के लिए एक घंटा जरूर निकालो। इससे ईश्वर प्राप्ति सहज हो जाएगी। जय गुरुदेव नाम योग साधना मंदिर के प्रकाशन में इनकी उम्र 116 वर्ष बताई गई है। गुरुदेव हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी में पारंगत थे। उन्होंने 5 फरवरी 1973 में कोलकाता में प्रवचन देते हुए कहा था मैं इस किराए के मकान में पांच तत्व से बना साढ़े तीन हाथ का आदमी हूं। मैं सनातन धर्मी, कट्टर हिंदू हूं। गांजा, भांग, बीड़ी, शराब और न ताड़ी पीता हूं। आप सब का सेवादार हूं मैं कोई पैगंबर अवतारी भी नहीं हूं। उनका पहला प्रवचन 10 जुलाई 1952 को वाराणसी में हुआ था। अपातकाल 19 जून 1975 को जेल भी गए। आगरा, बरेली, बंगलुरु के बाद तिहाड़ जेल लाया गया। वहां से 23 मार्च 1977 को रिहा हुए। मथुरा राष्ट्रीय राजमार्ग पर भव्य विशाल श्वेत संगमरमर से बना इनका आश्रम आकर्षण का केंद्र है। धर्मार्थ कार्यों के लिए यह आश्रम जाना जाता ।है अनेक राजनेता उनके अनुयाई रहे हैं। अपने सदगुरुदेव ब्रह्मलीन गोरेलाल जी महाराज की प्रेरणा से 160 फीट ऊंची योग साधना मंदिर और 20 करोड़ से अधिक अपने अनुयायियों के बीच जय गुरुदेव अमर हो गए हैं। इनका निधन 18 मई 2012 को रात्रि मथुरा में हुआ और आश्रम के भीतर ही हिंदू रीति रिवाज से इन्हें जलाया गया। सत्य, धर्म, शाकाहार, परोपकार के लिए इन्हें याद किया जाता है।

पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी

(पुण्यतिथि 22 मई)

पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी का जन्म 22 अगस्त 1935 को सीहोर जनपद मध्य प्रदेश के गांव नादनेर में हुआ था। संस्कृत साहित्य के महाकवि नाटककार और समीक्षक थे। द्विवेदी जी ने संस्कृत भाषा में 3 महाकाव्य, 20 खंडकाव्य और दो नाटकों से ज्यादा कृतियों की रचना की। काशी हिंदू विश्वविद्यालय में 1971 से 1990 तक संस्कृत के प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष और संकाय प्रमुख रहे।

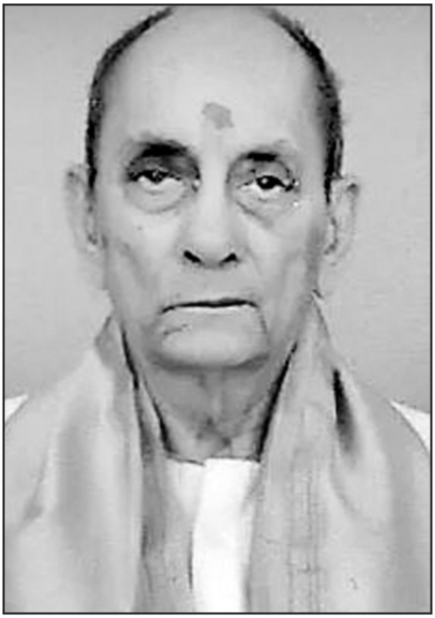

उनके महाकाव्य स्वातंत्र्यसंभवम के लिए 1991 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इसके अतिरिक्त राष्ट्रपति पुरस्कार, वाचस्पति पुरस्कार, बाल्मीकि पुरस्कार, श्रीवाणी अलंकरण आदि से विभूषित किया गया था। काशी के प्रकांड विद्वान काशी विद्वत परिषद के संगठन मंत्री के रूप में उन्होंने विद्वत परिषद को नई ऊंचाई दी। पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी जी स्वामी करपात्री के अनन्य शिष्यों में से एक थे। उन्हें आधुनिक महाकवि कालिदास की उपाधि से अलंकृत किया गया था। पंडित जी का निधन 22 मई 2021 को काशी में ही हुआ। धर्म और संस्कृति की राजधानी काशी इस महान विद्वान की सदैव ऋणी रहेगी।

रामविलास शर्मा

(पुण्यतिथि 30 मई)

रामविलास शर्मा का जन्म 10 अगस्त 1912 को उत्तर प्रदेश के उन्नाव में ऊंचगांव सानी में हुआ था। इन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से एमए और फिर पीएचडी की उपाधि प्राप्त की थी। 1938 में फिर अध्यापन क्षेत्र में आ गए। डॉ. रामविलास शर्मा ने अपने उग्र और उत्तेजनापूर्ण निबंधों से हिंदी समीक्षा को एक गति प्रदान की। इनकी पहचान हिंदी साहित्य में प्रसिद्ध आलोचक, निबंधकार, विचारक एवं कवि के रुप में थी। इन्हें भारत के प्रथम व्यास सम्मान विजेता का गौरव प्राप्त हुआ था। इसके अलावा शलाका सम्मान और अन्य अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया था। इनकी कृतियां प्रेमचंद और उनका युग निराला, भारतेन्दु हरिश्चंद्र, प्रगति और परंपरा, भाषा और समाज, निराला की साहित्य साधना आदि चर्चित हैं। अज्ञेय द्वारा संपादित तारसप्तक के एक कवि के रूप में इनकी कविताएं काफी चर्चित हुई हैं। इनका साहित्य चिंतन समाज, अर्थ, राजनीति, इतिहास को एक साथ लेकर मूल्यांकन करता रहा है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के बाद डॉ. रामविलास शर्मा ही एक ऐसे आलोचक हुए जो स्थापित माने जाते हैं। साहित्य के इस महानायक का निधन 30 मई 2000 को हो गया। साहित्य जगत इन्हें आज भी अमर रचनाकार के रूप में याद करता है। ●

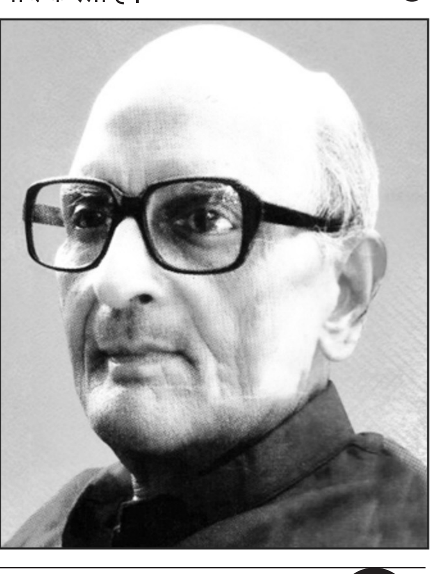

मई मास का राशिफल

पं0 राम कृपाल शुक्ल

धर्मशास्त्राचार्य, पुराणेतिहासाचार्य एवं कर्मकाण्ड कोविद

मो. 9415820597

मेष- आपका यह माह सामान्य है। स्वास्थ्य के प्रति विशेष रूप से सचेत रहना पड़ेगा। मानसिक चिन्ता और शारिरिक पीड़ा दोनों का सामना करना पड़ सकता है। उदर विकास से परेशान रहेंगे। दाम्पत्य जीवन में तनाव रह सकता है। धन की क्षति और विवाद भी सम्भव है। विद्यार्थियों का मन पढ़ाई में कम लगेगा। नया कारोबार शुरू न करें। सट्टा, शेयर से बचें। स्वयं प्रत्यनशील रहें। दिनांक 16, 17, 25, 27 नेष्ट हैं।

वृष- आपका यह माह अच्छा है। खूब व्यस्तता रहेगी। पहले से चले आ रहे कार्यक्रमों को पूरा करने में ही दिन निकल जायेगा। कार्य बाधा के पश्चात् पूर्ण होंगे। सक्रियता बनी रहेगी। व्यक्तित्व का विकास होगा। स्वस्थ रहेंगे। मानसिक शान्ति रहेगी। मन प्रसन्न रहेगा। अच्छे कामों में रूचि रहेगी। थोड़े प्रयत्न से अधिक लाभ होगा। क्रोध से बचें। दिनांक 8, 12, 20, 28 नेष्ट हैं।

मिथुन- आपका यह माह सामान्य है। माह से पूर्वार्ध में कई प्रकार की कठिनाइयों से रूबरू होंगे। पारिवारिक तनाव का सामाना करना पड़ सकता है। धन हानि का योग बना हुआ है। मन अशान्त रह सकता है। अतः प्रत्येक दिशा में सावधानी बरतें। माह का उत्तरार्ध ठीक रहेगा। मित्रों और सहयोगियों के प्रयत्न से स्थितियों में बदलाव होगा। व्यापार में लाभ से मन सुकून में रहेगा। दिनांक 4, 9, 24, 25 नेष्ट हैं।

कर्क- आपका यह माह ठीक है। माह के पूर्वार्ध में परिस्थितियां अनुकूल रहेंगी। इच्छित साधन प्राप्त होंगे जो आपकी दशा में बेहतरी ले आएंगे। व्यस्तता बढ़ेगी और नई-नई योजनाओं पर काम करेंगे। यात्रा लाभकारी होगी। कैरियर को लेकर निवास स्थान परिवर्तन का योग है। मित्रों का सहयोग मिलेगा। शिक्षा क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिए थोड़ी कठिनाइयां हैं। अज्ञात सम्बन्ध काम आएंगे। दिनांक 4, 13, 26, 30 नेष्ट हैं।

सिंह- आपका यह माह ठीक है। हर क्षेत्र में धीमी गति से प्रगति होगी। प्रयत्न सफल होंगे। सौम्य व्यवहार लाभकारी होगा। इच्छित कार्यों में पूर्णता मिलेगी। धन लाभ से संतोष होगा। रचनात्मक कार्यों में रूचि बढ़ेगी। मान-सम्मान बढ़ेगा। शेयर, सट्टा आदि में निवेश कर सकते हैं। वाणी की कठोरता हानिकारक है। विद्यार्थियों के लिए भी समय अनुकूल है। दिनांक 1, 15, 25, 31 नेष्ट हैं।

कन्या- आपका यह माह सामान्य है। भागदौड़ से त्रस्त रहेंगे किन्तु मन प्रसन्न रहेगा। किसी कानूनी उलझन में फंस सकते हैं। अतः सावधानी बरतें और सोच समझकर निर्णय करें। इस माह धर्म-कर्म में विशेष रूचि लेंगे और आध्यात्मिक चर्चा में सुख-सन्तोष का अनुभव होगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। शारीरिक कष्ट उठाना पड़ सकता है। ऐसी स्थिति बन रही है जो एकाएक आपको परेशान कर दे। दिनांक 4, 11, 19, 22 नेष्ट हैं।

तुला- आपका यह माह अच्छा है। कार्य एवं संघर्ष की शक्ति बढ़ेगी। सफलता और लाभ प्राप्त होगा। भागीदारी से संतुष्ट नहीं रहेंगे। अधिक काम करना पड़ेगा। प्रशासनिक सेवा से जुड़े लोगों की तरक्की होगी। दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा। घर-परिवार से सहयोग मिलेगा। सरकारी रूके कार्य पूरे होंगे। शुभ समाचार मिलेगा। दिनांक 15, 22, 25, 28 नेष्ट हैं।

वृश्चिक- आपका यह माह अच्छा है। रोगों से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त होगा। शत्रु परास्त होंगे। इष्ट-मित्रों का भरपूर सहयोग मिलेगा। राजनीति से जुड़े लोगों का समय अच्छा रहेगा। धन-धान्य में वृद्धि होगी। कारोबार फलेगा-फूलेगा। परिवार में शान्ति रहेगी और एक-दूसरे का सहयोग मिलेगा। धर्म-कर्म में रूचि बढ़ेगी। सुख-सुविधाओं पर व्यय होगा। दिनांक 3, 19, 23, 25 नेष्ट हैं।

धनु- आपका यह माह ठीक है। जीवन क्षेत्र विविधिता से भरा है। आपका संघर्ष ही आपको सफलता दिलायेगा। आप नई जिम्मेदारी संभालने के लिए तैयार रहें क्योंकि ऐसा संयोग बन रहा है। निजी सम्बन्ध बनेंगे और व्यावसायिक सम्बन्धों का विस्तार होगा। भ्विष्य का मार्ग प्रशस्त होगा और आप आश्वस्त होंगे। शेयर, सट्टे में निवेश कर सकते हैं, समय अनुकूल है। दिनांक 12, 18, 19, 26 नेष्ट हैं।

मकर- आपका यह माह सामान्य है। कार्य-व्यापार अच्छा रहेगा। लाभ प्राप्त होता रहेगा। सहयोगी साथ देंगे और प्रगति होगी। प्रियजन उदासीन रहेंगे और उपेक्षा सहनी पड़ेगी। पारिवारिक सुख में कमी आयेगी। असंतुलन का सामना करना पड़ेगा। आय और व्यय में भी असंतुलन दिखेगा। व्यय परेशान करेगा। नया निवेश ठीक परिणाम नहीं देगा। शेयर, सट्टा आदि से बचें। दिनांक 15, 28, 29 नेष्ट हैं।

कुम्भ- आपका यह माह सामान्य है। कार्य-व्यापार की गति मन्द रहेगी। प्रियजनों के सहयोग से आर्थिक लाभ बना रहेगा। सरकारी, गैर सरकारी कर्मचारी उच्चाधिकारियों की उपेक्षा के शिकार हो सकते हैं। उन्हें मानसिक क्लेशों का सामना करना पड़ सकता है। व्यवसाय में उथल-पुथल चल सकता है। मान-सम्मान की स्थिति संघर्षपूर्ण है। दिनांक 2, 4, 8, 10 नेष्ट हैं।

मीन- आपका यह माह अच्छा है। विद्यार्थियों को प्रतियोगिता में सफलता मिलने का योग है। माह का दूसरा सप्ताह प्रभाव में वृद्धि कराएगा। तीसरा सप्ताह मान-सम्मान में वृद्धि का योग ला रहा है। मासान्त अच्छा है। राजकीय सहयोग मिलेगा। व्यय अधिक होगा। परिवार पर खर्च बढ़ेगा। जीविका से जुड़े कार्यों का विस्तार होगा। आत्मबल बढ़ेगा, कर्मठता बढ़ेगी। संघर्ष व परिश्रम से सभी रूके कार्य पूर्णता की ओर बढ़ेंगे। दिनांक 19, 26 नेष्ट हैं।

प्रकृति का कर्ज : संरक्षण से चुकाएं

प्रकृति हमारी माँ है–वह हमें जीवन देती है, पोषण करती है और हर कदम पर हमारा साथ देती है। हवा जो हम सांस लेते हैं, पानी जो हम पीते हैं, और धरती जो हमें भोजन देती है, यह सब प्रकृति की अनमोल देन है। लेकिन आज हम इस कर्ज को भूलकर प्रकृति का शोषण कर रहे हैं। जंगल कट रहे हैं, नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं, और हवा जहरीली होती जा रही है। यह समय है कि हम अपने कर्तव्य को समझें और प्रकृति के प्रति अपने कर्ज को संरक्षण के माध्यम से चुकाएं।

प्रकृति का कर्जः हमारा ऋण

प्राचीन भारतीय संस्कृति में प्रकृति को देवता के रूप में पूजा जाता था। वेदों और उपनिषदों में इसे परम शक्ति माना गया है। ऋग्वेद में एक श्लोक हैः

'या ओषधीः संनति पुरा जीवन्ति विश्वतः प्रभुः। तासामसि त्वमंगिरः प्राणं विश्वस्य रोचसि।।'

(ऋग्वेद 10.97.4)

अर्थः 'हे औषधियों, तुम प्राचीन काल से जीवन को संभालती हो और विश्व की शक्ति हो। तुम प्राण देती हो और संसार को प्रकाशित करती हो।'

यह श्लोक प्रकृति की जीवनदायिनी शक्ति को दर्शाता है। हमारा हर सांस, हर कण प्रकृति का उपहार है। फिर भी, हमने इस कर्ज को नजरअंदाज कर दिया और अपने स्वार्थ के लिए धरती को नुकसान पहुँचाया।

संकट में प्रकृति

आज पर्यावरण संकट एक वैश्विक समस्या बन चुका है। औद्योगीकरण, शहरीकरण और अंधाधुंध संसाधनों का दोहन इसके प्रमुख कारण हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, प्रदूषण के कारण हर साल लाखों लोग असमय मृत्यु का शिकार हो रहे हैं। ग्लोबल वॉर्मिंग के कारण हिमनद पिघल रहे हैं, समुद्र का स्तर बढ़ रहा है, और मौसम चक्र बिगड़ रहा है। जंगल, जो धरती के फेफड़े हैं, तेजी से सिकुड़ रहे हैं। यह सब प्रकृति के प्रति हमारी लापरवाही का परिणाम है।

संरक्षणः हमारा कर्तव्य

प्रकृति का कर्ज चुकाने का एकमात्र तरीका है इसका संरक्षण। हमें अपने जीवन में छोटे-छोटे बदलाव लाने होंगे। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैंः

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।'

(गीता 2.47)

अर्थः 'तुम्हें केवल कर्म करने का अधिकार है, उसके फल की चिंता मत करो।'

यह श्लोक हमें निस्वार्थ कर्म की प्रेरणा देता है। पर्यावरण संरक्षण भी ऐसा ही कर्म है–हमें पेड़ लगाने, पानी बचाने और प्रदूषण कम करने जैसे कार्य बिना किसी स्वार्थ के करने चाहिए।

वृक्षारोपणः पेड़ लगाना प्रकृति के प्रति हमारी सबसे बड़ी सेवा है। एक पेड़ न केवल ऑक्सीजन देता है, बल्कि मिट्टी को बांधता है और जलवायु को संतुलित करता है।

जल संरक्षणः नदियों और तालाबों को स्वच्छ रखना, वर्षा जल संचय करना हमारी जिम्मेदारी है। जल ही जीवन है, और इसे बचाना हमारा कर्तव्य है।

प्रदूषण नियंत्रणः प्लास्टिक का कम प्रयोग, वाहनों से होने वाले उत्सर्जन को कम करना और कचरे का पुनर्चक्रण जैसे कदम उठाने चाहिए।

जागरूकताः समाज को शिक्षित करना भी जरूरी है ताकि हर व्यक्ति इस संरक्षण अभियान का हिस्सा बने।

प्रकृति और मानव का अटूट रिश्ता

प्रकृति और मानव एक-दूसरे के पूरक हैं। अथर्ववेद में कहा गया हैः

'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।'

(अथर्ववेद 12.1.12)

अर्थः 'पृथ्वी मेरी माता है, और मैं उसका पुत्र हूँ।'

यह श्लोक प्रकृति के साथ हमारे गहरे रिश्ते को दर्शाता है। जब हम प्रकृति का सम्मान करते हैं, तो यह हमें दुगुना लौटाती है। लेकिन जब हम इसे नष्ट करते हैं, तो यह हमारे लिए विनाश का कारण बनती है।

प्रेरणा और संकल्प

हमें अपने पूर्वजों से प्रेरणा लेनी चाहिए, जिन्होंने प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर जीवन जिया। आज विज्ञान और तकनीक के युग में भी हम संतुलन बनाए रख सकते हैं। हर व्यक्ति को यह संकल्प लेना चाहिए कि वह अपने जीवन में कम से कम एक पेड़ लगाएगा, पानी की बर्बादी रोकेगा और पर्यावरण को स्वच्छ रखेगा। यह छोटे कदम ही बड़े बदलाव की नींव बनेंगे।

निष्कर्ष

प्रकृति का कर्ज चुकाना हमारा नैतिक और आध्यात्मिक दायित्व है। यह केवल हमारे लिए नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी जरूरी है। हमें यह समझना होगा कि प्रकृति के बिना हमारा कोई अस्तित्व नहीं। जैसा कि यजुर्वेद में कहा गया हैः

'यत् ते पृथिवि विश्वं रूपं तस्मै ते विश्वरूपाय नमः।।'

(यजुर्वेद 13.2)

अर्थः 'हे पृथ्वी, जो तेरा विश्व रूप है, उसको नमस्कार।'

आइए, हम सब मिलकर प्रकृति के इस कर्ज को संरक्षण के माध्यम से चुकाएं और एक हरे-भरे, स्वस्थ और सुंदर संसार का निर्माण करें। यह हमारा कर्तव्य है, हमारा धर्म है और हमारी सबसे बड़ी पूजा है।

डॉ. पंकज कुमार ओझा
बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा

वैभव बने आईपीएल इतिहास में सबसे कम उम्र के शतकवीर

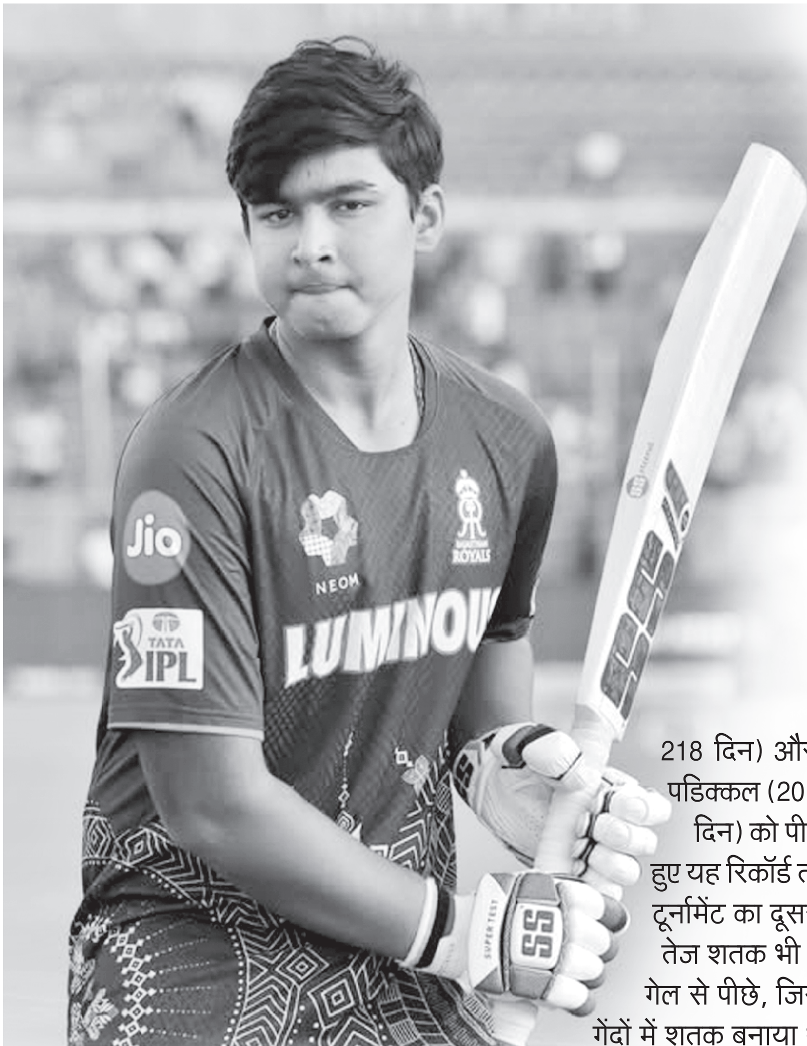

वैभव सूर्यवंशी ने सवाई मानसिंह स्टेडियम में गुजरात टाइटंस के खिलाफ 35 गेंदों में शतक बनाकर इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के इतिहास में सबसे कम उम्र का खिलाड़ी बनने का गौरव हासिल कर लिया। सूर्यवंशी (14 वर्ष 32 दिन) ने मनीष पांडे (19 वर्ष 253 दिन), ऋषभ पंत (20 वर्ष 218 दिन) और देवदत्त पडिक्कल (20 वर्ष 289 दिन) को पीछे छोड़ते हुए यह रिकॉर्ड तोड़ा। यह टूर्नामेंट का दूसरा सबसे तेज शतक भी है, क्रिस गेल से पीछे, जिन्होंने 30 गेंदों में शतक बनाया था, और किसी भारतीय द्वारा बनाया गया सबसे तेज शतक है, जिसने यूसुफ पठान के 37 गेंदों में शतक बनाने के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ दिया। जीटी के खिलाफ 210 रनों का पीछा करते हुए, सूर्यवंशी आक्रमण करने के लिए तैयार थे। उन्होंने अनुभवी इशांत शर्मा के ओवर में तीन छक्कों और दो चौकों के साथ कुछ अतिरिक्त रन लेकर 28 रन बनाए। उन्होंने वाशिंगटन सुंदर की गेंदों पर दो छक्के व एक चौके के साथ 50 रन का मील का पत्थर हासिल किया।

इसके बाद उन्होंने जीटी डेब्यूटेंट करीम जनत पर तीन चौके और तीन छक्के लगाकर 30 रन बनाए और 10वें ओवर में कुल 11 छक्के लगाकर फील्डर्स को दर्शकों के बीच ला खड़ा किया। उनकी पारी प्रसिद्ध कृष्णा की गेंद पर बोल्ड होने के बाद 101 रन पर समाप्त हुई।

वैभव आईपीएल में खेलने वाले सबसे कम उम्र के खिलाड़ी भी हैं। यह रिकॉर्ड पहले प्रयास रे बर्मन (आरसीबी के लिए खेले) के नाम था, जिन्होंने आईपीएल 2019 में सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ 16 साल की उम्र में डेब्यू किया था।

पिछले साल, वैभव आईपीएल नीलामी में खरीदे जाने वाले सबसे कम उम्र के खिलाड़ी बन गए थे, जब उन्हें राजस्थान रॉयल्स ने 1.1 करोड़ रुपए में खरीदा था। 2024 सीज़न ने उन्हें घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों स्तरों पर बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए देखा।

27 मार्च 2011 को बिहार में जन्मे वैभव ने जनवरी 2024 में बिहार के लिए अपना प्रथम श्रेणी डेब्यू किया, तब उनकी उम्र महज 12 साल और 284 दिन थी। अपने डेब्यू के दौरान, वैभव ने विजय हजारे ट्रॉफी 2024-25 में बड़ौदा के खिलाफ 42 गेंदों पर 71 रन बनाए और लिस्ट-ए में अर्धशतक बनाने वाले सबसे कम उम्र के भारतीय बन गए। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, वैभव ने चेन्नई में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 58 गेंदों पर शतक बनाकर किसी भारतीय द्वारा सबसे तेज युवा टेस्ट शतक का रिकॉर्ड बनाया। ●

शहनाज को चढ़ा पेंटिंग का शौक

मशहूर एक्ट्रेस शहनाज गिल का चुलबुला अंदाज बेहद गजब है। उनका अपना अलग ही फैन बेस है। वह जो भी कुछ करती हैं, फैंस उन्हें जमकर सपोर्ट करते हैं। शहनाज को आपने एक्टिंग और सिंगिंग करते हुए देखा होगा, लेकिन इन दिनों उन्हें एक नया शौक चढ़ा है, जिसकी तस्वीर उन्होंने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर भी शेयर की है।

दरअसल, शहनाज गिल को पेंटिंग करने का चस्का लगा है। उन्होंने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट के स्टोरी सेक्शन पर पेंटिंग करते हुए कई फोटो का एक कोलाज शेयर किया। इन तस्वीरों में पेंटिंग के कलर्स नजर आ रहे हैं और एक्ट्रेस इन कलर्स के साथ खेलती भी दिखाई दे रही हैं। कभी वह कैमरे की ओर कलर दिखा रही हैं, तो कभी ब्रश के साथ पोज दे रही हैं। उनकी इन फोटो को फैंस काफी पसंद कर रहे हैं।

शहनाज गिल 'पंजाब की कैटरीना कैफ' के नाम से काफी मशहूर हैं। उन्हें बचपन से ही एक्टिंग का काफी शौक था। आज वह पंजाबी इंडस्ट्री की बड़ी स्टार हैं। उन्होंने काफी कम उम्र में ही मॉडलिंग करनी शुरू कर दी थी। वह कई म्यूजिक वीडियो में नजर आ चुकी हैं। इतना ही नहीं, उन्होंने कुछ म्यूजिक वीडियो में अपनी आवाज भी दी है। 2017 में, उन्होंने 'सत श्री अकाल' से पंजाबी फिल्म में डेब्यू किया। लेकिन रियलिटी शो 'बिग बॉस 13' ने उनकी जिंदगी बदलकर रख दी। इस शो के बाद उन्हें सलमान खान ने अपनी फिल्म 'किसी का भाई किसी की जान' के लिए रोल ऑफर किया।

इसके बाद उन्हें भूमि पेडनेकर की फिल्म 'थैंक्यू फॉर कमिंग' में देखा गया था। इस फिल्म में डॉली सिंह, कुशा कपिला, शिबानी बेदी अहम रोल में नजर आईं। उन्होंने राजकुमार राव की फिल्म 'विक्की विद्या का वो वाला वीडियो' के लिए आइटम सॉन्ग 'सजना वे सजना' भी किया। इस गाने के लिए उनकी खूब प्रशंसा भी हुई थी। उन्होंने रैपर सिंगर हनी सिंह के साथ 'शीशे वाली चुन्नी' नामक म्यूजिक वीडियो में काम किया। इस गाने को 2 घंटे में 1.1 मिलियन से ज्यादा बार देखा गया।

शहनाज के वर्कफ्रंट की बात करें तो वह इन दिनों निर्देशक अमरजीत सिंह सरोन की फिल्म 'इक कुड़ी' को लेकर चर्चाओं में हैं। यह फिल्म 13 जून को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

अभिषेक हॉस्पिटल

वार्ड नं. 5 लोकमान्य तिलक नगर, सकलडीहा रोड
चंदौली, उप्र- 232104 मो.- 9415224892

Dr. Sanjay Kumar
Director/Chairman

अभिषेक फार्मेसी कालेज

Approved by- AICTE, PCI, Affiliated by B.T.E. Lucknow

ABHISHEK PHARMACY COLLEGE APC Chandauli (U.P.)

अभिषेक नर्सिंग एण्ड पैरामेडिकल इंस्टीट्यूट

A.N.M.
G.N.M.
O.T. TECHNICIAN

ADMISSION OPEN

हॉस्पिटल में स्वास्थ्य सेवाओं एवं इंस्टीट्यूट में प्रवेश हेतु
सम्पर्क करें- 8756911665, 9415293257, 9514224892

Quality through Technology & Innovation

D.K. Singh
Managing Director

Kamlesh Tiwari
Manager

Mr. D.K. Singh **Mob. 9793566999**

Excel Pharmaceuticals

B.O. Plot No. 147, Phase-1, Chandigarh
E-mail : excelpharma.singh@gmail.com, www.excelpharmaceuticals.com